विभा गुप्ता
व्रत, पर्व
और
त्योहार

भारत के व्रत, पर्व और त्यौहार राष्ट्र की संस्कृति एवम् एकता के आधार स्तम्भ हैं।

चाहे वो स्वतन्त्रता दिवस, गणतन्त्र दिवस, दीपावली, होली, दशहरा, रक्षाबन्धन, ईद, गुरुपर्व, क्रिसमस हो........

व्रत, पर्व और त्यौहार

(व्रत तथा त्यौहार और पर्वों की जानकारी
प्रदान करने वाला एक महान ग्रन्थ)

व्रत, पर्व और त्यौहार

विभा गुप्ता

जाह्नवी प्रकाशन, दिल्ली–95

प्रथम संस्करण : 2001

मूल्य : 120.00 रुपये

प्रकाशक : जाह्नवी प्रकाशन
ए-71, विवेक विहार, फेस-2, दिल्ली-32

शब्द–संयोजन : जय कम्प्यूटर्स, गली नं. 16
विश्वास नगर, दिल्ली-32

मुद्रक : दीपक ऑफसेट, दिल्ली-32

WART, PARV AUR TAVAHAR *by* Vibha Gupta Rs. 120.00

तथ्य-निरूपण

'व्रत, पर्व और त्यौहार' मेरा एक अतीव उपयोगी ग्रन्थ है। इसमें पूरे वर्ष के व्रत, पर्व, उपवास तथा त्यौहार दिये गये हैं। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय पर्व और विश्व के बड़े–बड़े त्यौहारों की तालिका भी निहित है।

इसमें केवल हिन्दू धर्म के ही नहीं, बल्कि ईसाई समाज, यहूदी सप्प्रदाय, मुस्लिम समाज, गुजराती, राष्ट्रीय, सिन्धी, बंगाली तथा जैन समाज के व्रत, पर्व और त्यौहार भी दिये गये हैं। यह अपने में अनुपम एवं उपयोगी कृति है।

यह पुस्तक प्रस्तुत करने में अथक परिश्रम करना पड़ा है। शायद इसीलिए यह लगभग प्रत्येक समाज के लिये लाभप्रदं है।

विभा गुप्ता

अनुक्रमणिका

1

नवसंवत्सर :

चैत की अमावस को पुराना संवत् समाप्त होकर नया संवत आरम्भ होता है। यह दिन हर्ष तथा उल्लास का होता है। वर्षपति अर्थात् जो संवत का राजा होता है। उसकी पूजा की जाती है। इस दिन आरोग्य व्रत भी किया जाता है। ऐसा विधान है कि जो इस अमावस को व्रत रखता है, वह वर्ष भर स्वस्थ रहता है।

इस शुभ दिन में पवित्र नदी में स्नान करने से आयु बढ़ता है। मनुष्य दीर्घजीवी हो जाता है। स्नान के साथ ही साथ दान देने से परम पुण्य की प्रप्ति होती है।

उत्तर–प्रदेश में नया और पुराना अनाज मिलाया जाता है। मिष्ठान्न और पकवान बनते हैं। नये संवत की पूजा होती है। यह हँसी–खुशी और उल्लास का पर्व है, इसीलिये श्रद्धापूर्वक और खूब धूमधाम से मनाया जाता है।

नवरात्रि :

अमावस के दूसरे दिन चैत शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से नवरात्रि आरम्भ हो जाते हैं। देवी के कलश की स्थापना होती है। श्रद्धालु स्त्रियाँ और पुरुष नवरात्रि का व्रत रखते हैं। इसमें फलाहार करते हैं। देवी का पाठ करते, हवन करते। ध्वजारोहण किया जाता है।

श्री झूलेलाल जयन्ती महोत्सव :

चैत शुक्ल प्रतिपदा के बाद दूसरे दिन द्विज को श्री झूलेलाल जी की जयन्ती मनाई जाती है। यह सिन्धी समाज का एक बहुत बड़ा पर्व है। सिन्धी सम्प्रदाय का यह महान और पावन पर्व है।

गणगौरी :

गणगौरी मारवाड़ी समाज का एक पावन पर्व है। इस दिन गणगौरी की पूजा होती है। इसे मनोरथ तृतीया भी कहा जाता है। इस दिन जो स्त्रियाँ व्रत रखतीं हैं उनके सभी मनोरथ पूरे होते हैं। गौरी का विसर्जन किया जाता है। शिव–शक्ति की पूजा होती है। शंकर और पार्वती का भी पूजन किया जाता है।

वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी :

मनोरथ तृतीया के दूसरे दिन चौथ को यह व्रत किया जाता है। दमनक की पूजा होती है। इस गणेश चतुर्थी का बहुत बड़ा महत्त्व है। इस व्रत को श्रद्धापूर्वक करन से पुण्य की प्राप्ति होती है।

श्री पंचमी :

वैनायकी गणेश चतुर्थी के दूसरे दिन श्री पंचमी का व्रत होता है। इस दिन हय व्रत भी रखा जाता है। नागव्रत भी इसी दिन होता है। इसी पंचमी को लक्ष्मी जी का भी पूजन किया जाता है। रामराज्य का महोत्सव भी इसी पंचमी को मनाया जाता है।

श्री सूर्य षष्ठी :

इस पर्व को स्कन्द षष्ठी भी कहते हैं। अशेकाषष्ठी भी यही है। यह सूर्य की मेष (सतुआ) संक्रान्ति भी कहा जाती है। इस दिन सत्तू का दान करने से अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है।

श्री दुर्गाष्टमी :

इस दिन नवरात्रि समाप्त होते हैं। देवी का हवन और पूजन होता है। इसे अन्नपूर्णाष्टमी भी कहा जाता है।

2

रामनवमी :

रामनवमी का महान पर्व मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी के जन्म का पर्व है। इस दिन दोपहर ठीक बारह बजे भगवान राम का जन्म हुआ था। इस व्रत को उसी धूम–धाम, हर्ष और उल्लास से मनाया जाता है जैसे भादों के महीने में कृष्ण जन्माष्टमी।

श्रद्धालु भक्त–जन उपवास रखते। कोई निर्जल व्रत रखता, कोई फलाहार करता। जो व्रत और उपवास नहीं रखते, वे भी उत्साह और उमंग के साथ रामनवमी मनाते हैं। इसी दिन नवरात्रि के व्रत का पालन किया जाता है।

कामदा एकादशी :

कामदा एकादशी विष्णु जी का व्रत है। यह व्रत रखने से सभी मनोकामनायें पूर्ण होती हैं। यह बहुत ही पावन और मनचाहा फल देने वाला व्रत है। इसे प्रतिवर्ष चैत्र महीने के शुक्ल पक्ष की एकादशी को मनाया जाता है।

दमनक चतुर्दशी :

दमनक चतुर्दशी का व्रत शंकर जी का व्रत है। भगवान ने इसी दिन नरसिंह अवतार लेकर प्रह्लाद के पिता हिरण्यकश्यप का वध किया था।

हनुमान जयन्ती :

चैत्र पूर्णिमा का व्रत किया जाता है। यह एक पवित्र त्योहार माना जाता है। इसी दिन हनुमान जी का जन्म हुआ था। इसीलिए इस दिन हनुमान जयन्ती मनाई जाती है। इसी दिन से वैशाख का आरम्भ होता है। इस दिन हनुमान जी का व्रत रखने, उनका पूजन करने, दर्शन करने और ध्यान करने से सभी क्लेश दूर हो जाते हैं।

शीतला कालाष्टमी :

वैशाख कृष्ण पक्ष की अष्टमी को कालाष्टमी कहते हैं। यह सतुआ अष्टमी भी कहलाती है। इस दिन सत्तू खाया जाता और इससे पहले देवी पर चढ़ाया जाता है। इस दिन ताजा भोजन नहीं किया जाता। यह शास्त्रों में वर्जित है। इसीलिए बासी पक्का भोजन ही किया जाता है।

सतुआ अमावस :

सतुआ अमावस एक महान पर्व है। इस दिन सत्तू दान किया जाता है। श्रद्धालु लोग गंगा–स्नान करते हैं, दान देते हैं, इससे मोक्ष की प्राप्ति होती है।

अक्षय तृतीया :

अक्षय तृतीया वैशाख महीने के शुक्ल पक्ष में तीज को मनाई जाती है। यह ऐसी तिथि और ऐसा दिन है कि इस दिन ब्याह खूब होते हैं। पंडित से पूछने की कोई आवश्यकता नहीं। बिना पूछे ही लड़का हो या लड़की, उसका ब्याह कर सकते हैं। यह बड़ी ही पावन और पवित्र तिथि है। इसे मातंगी जयन्ती भी कहा जाता है। इसी दिन परशुराम जयन्ती भी मनाई जाती है।

सूरदास जयन्ती :

सूरदास जयन्ती वैशाख शुक्ल पक्ष की पंचमी को मनाई जाती है। इस दिन जो स्त्री या पुरुष व्रत रखता है उसे पुत्र–रत्न की प्राप्ति होती है। इसी दिन रामानुजाचार्य की जयन्ती भी मनाई जाती है। श्री आद्य

शंकराचार्य की जयन्ती भी इसी दिन होती है।

बंगलामुखी जयन्ती :

वैशाख शुक्ल पक्ष की अष्टमी को दुर्गा अष्टमी तो मनाई जाती ही है, इसी दिन बंगला–मुखी जयन्ती का भी समारोह होता है। जानकी जयन्ती भी इसी दिन मनाई जाती है और कहा जाता है कि इसी दिन सीताजी कुम्भ से प्रकट हुई थीं।

इस दिन गोदावरी नदी में स्नान करने से बहुत बड़े पुण्य की प्राप्ति होती है। इस दिन गो का दान, अन्न का दान, तिल का दान करने से मनुष्य मोक्ष का अधिकारी बन जाता है।

मोहिनी एकादशी :

इस एकादशी के व्रत को लक्ष्मीनारायण एकादशी भी कहा जाता है। यह व्रत धन–धान्य को बढ़ाने वाला, सर्वत्र विजय देने वाला और बहुत ही पुनीत है।

वैशाखी पूर्णिमा :

अधिकांश स्त्रियाँ और पुरुष पूर्णमासी का व्रत रखते और रात को चन्द्रमा निकलता तो उसकी पूजा करते हैं लेकिन वैशाख की पूर्णिमा का एक विशेष महत्त्व है। इसे बुद्ध पूर्णिमा कहा जाता। इसी पूर्णिमा को महात्मा गौतम बुद्ध का निर्वाण हुआ था।

इस पूर्णिमा को छिन्नमस्ता जयन्ती भी मनाई जाती है।

नारद जयन्ती :

जेठ महीने के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा को नारद जयन्ती मनाई जाती है। इस दिन व्रत रखने और भगवान विष्णु और नारद जी का पूजन करने से लोक–परलोक बनता और अन्त में मोक्ष की प्राप्ति होती है।

त्रिलोकनाष्टमी :

जेठ शक्ल अष्टमी को शीतला अष्टमी और कालाष्टमी भी मनाई जाती है–विशेषतया त्रिलोकनाष्टमी का यह पवित्र व्रत है।

पवित्र माना जाता है। जैनियों का भी यह एक बहुत पवित्र त्योहार है।

विंध्यवासिनी पूजा :

जेठ शुक्ल षष्ठी को विंध्यवासिनी देवी की पूजा होती है। इस व्रत को अरण्य षष्ठी भी कहा जाता । उड़ीसा में इसे शीतला षष्ठी कहा जाता है। विंध्याचल पर्वत में विंध्यवासिनी देवी की पूजा खूब धूम–धाम से की जाती। वहाँ के लोगों का ऐसा विश्वास है कि इस दिन जिसके मन में जैसी कामना होती है, देवी उसे पूरा करती है।

क्षीर भवानी :

जेठ शुक्ल पक्ष की अष्टमी को दुर्गाष्टमी मनाई जाती है। इस दिन शुक्लादेवी की भी पूजा होती है। कश्मीर में क्षीरभवानी देवी हैं। वहाँ बहुत बड़ा मेला लगता और श्रद्धालु भक्तजन देवी का आराधना करते पूजन करते और मनौती माँगते। उनको मनावांछित फल मिलता ऐसा सबका विश्वास है।

गंगा दशहरा :

जेठ शुक्ल की दशमी को गंगा दशहरा होता है। इस दिन चित्रकूट में मन्दाकिनी गंगा में स्नान करने से सभी मनोरथ सिद्ध होते हैं। जो श्रद्धालु गंगा में स्नान करते हैं उन्हें बहुत बड़े पुण्य की प्राप्ति होती है।

कहा जाता है कि इसी दिन गंगा जी का अवतार हुआ था। मर्यादा पुरुषोत्त्म रामचन्द्र जी ने इसी दिन सेतु–बन्ध रामेश्वर की स्थापना की थी।

भीमसेनी एकादशी :

जेठ दशहरा के बाद दूसरे ही दिन निर्जला एकादशी का व्रत मनाया जाता है। इसे भीमसेनी एकादशी भी कहा जाता है। यह बहुत ही पुनीत तिथि है। इस दिन शादी–ब्याह पंडित से बिना पूछे ही किया जा सकता है। इस दिन श्रद्धालु नारियाँ और पुरुष खजूर के पंखे, मिट्टी की पानी भरी सुराही, खरबूजा और आम का दान करते हैं।

दाक्षिणात्यों का वट सावित्री व्रत :

जेठ शुक्ल त्रयोदशी को प्रदोष व्रत होता और इसी दिन से दाक्षिणात्यों का वट सावित्री व्रत आरम्भ हो जाता है।

चंपक चतुर्दशी :

इस व्रत का बंगाल प्रदेश में बहुत अधिक महत्त्व है। वट सावित्री का व्रत के यह दूसरे दिन होता है। इस दिन दान–पुण्य करना चाहिए।

युता पूर्णिमा :

जेठ के महीने की पूर्णिमा को युता पूर्णिमा कहा जाता है। इसी दिन सन्त कबीरदास की जयन्ती मनाई जाती है। जल–यात्रा की जाती है, देवताओं को स्नान करवाया जाता है।

आषाढ़ की प्रतिपदा :

आषाढ़ मास बहुत ही पवित्र और पावन माना जाता है। यह जब आरम्भ होता है तो कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा होती है। इस दिन इच्छित भोजन बनाकर खाना चाहिए। प्रसन्न रहना चाहिए। वट सावित्री व्रत का इस दिन पालन किया जाता है। इसी दिन गुरु–गोविन्द सिंह का जन्म–दिवस मनाया जाता है। इसी दिन सूर्य दक्षिणायन हो जाता है।

कालाष्टमी :

इस दिन दुर्गा की पूजा होती है। देवी का व्रत रखा जाता है। बासी भोजन किया जाता है। आषाढ़ कृष्ण पक्ष की द्वादशी को योगिनी एकादशी मनाई जाती है। यह वैष्णवों का व्रत है। इस एकादशी का व्रत फलदायी होता है।

दर्श अमावस्या :

आषाढ़ की अमावस को पवित्र नदी में स्नान करना चाहिए। श्रद्धानुसार दान और पुण्य करना चाहिए। इसे दर्श अमावस्या कहा जाता है।

रथ-यात्रा :

आषाढ़ शुक्ल द्विज को चन्द्रमा का दर्शन अवश्य करना चाहिए। इससे बहुत बड़े पुण्य की प्राप्ति होती है। इसी दिन जगन्नाथपुरी में रथ—यात्रा निकलती है। जगन्नाथ जी के दर्शन किए जाते हैं, उनकी परिक्रमा की जाती है।

वामन-पूजा :

इसको वामन द्वादशी भी कहा जाता है। इसी दिन भगवान विष्णु ने वामन अंगुल का शरीर कर लिया था। उन्होंने दान में राजा बलि से केवल तीन पग जमीन माँगी थी।

गुरु पूर्णिमा :

आषाढ़ की पूर्णमासी को गुरु पूर्णिमा का व्रत किया जाता है। आषाढ़ी का भी पूजन हर घर में होता है। इसी दिन महर्षि वेद व्यास जी का जन्म हुआ था इसीलिए इसे गुरु—पूर्णिमा कहा जाता है।

जो लोग इस दिन कर्ण घंट कनखल तीर्थ में स्नान करने से मनचाहे फल की प्राप्ति होती है। इसी दिन शंकर जी के शयन का उत्सव मनाया जाता है। सारनाथ में बौद्ध भिक्षुक धर्म चक्र परिवर्तन दिवस मनाते हैं।

श्रावण सोम :

सावन के महीने में कभी चार और कभी पाँच सोमवार पड़ते हैं। इन सोमवारों को शंकर जी का व्रत किया जाता है। शिवलिंग पर गंगा—जल बेल—पत्र और फूल चढ़ाये जाते हैं। इस दिन जो शंकर जी पर कमल का फूल चढ़ाता है उसे सुख और सौभाग्य मिलता है।

नाग पंचमी :

श्रावण शुक्ल पंचमी को गुड़िया का त्योहार मनाया जाता है। इस दिन घर में गाय के दूध की खीर बनती है। नागों को दूध पिलाया जाता है। उनकी पूजा की जाती है।

इसी दिन श्री लोकमान्य तिलक के जन्म का समारोह मनाया जाता। व्रत किया जाता। हर्ष और उल्लास मनाया जाता। बंगाल में इस व्रत का विशेष महत्त्व है। वहाँ की नारियाँ और लड़कियाँ इस व्रत को बड़ी श्रद्धा और धूम–धाम से मनाती हैं।

4

चितलगी अमावस्या :

सावन की अमावास को चितलगी अमावस्या कहा जाता। यह हरियाली अमावस्या भी कहलाती। इसी दिन केरल में कर्कट पूजा भी होती। इस दिन गंगा में स्नान करने और दान देने से पुण्य मिलता।

मधुश्रवा तृतीया :

इसको ठुकराइना जयन्ती भी कहा जाता है। यह गुर्जर प्रदेश में बड़ी श्रद्धा से मनाई जाती है। वहाँ के लोग इसे हर तृतीया भी कहते हैं। इसी दिन हरियाली तीज मनाई जाती है। यह त्योहार बुन्देलखण्ड में खूब धूम–धाम से मनाया जाता। इस दिन लड़कियाँ और नारियाँ झूला झूलतीं। वे अपने भाइयों के कान पर गुजरियाँ लगाती हैं।

उत्तर प्रदेश के महोबा में कीरत–सागर और मदन तालाब पर गुर्जरियों का बहुत बड़ा मेला लगता। लड़कियाँ और औरतें दिन भर झूला झूलतीं हैं।

तृतीया से लगभग एक सप्ताह पहले जौं मिटट्री में बो दिए जाते हैं। उन्हीं की सूजी भाइयों के कान पर खोसी जाती है।

पुत्रदा एकादशी :

सावन के महीने की शुक्ल पक्ष की एकादशी पुत्रदा एकादशी कहलाती है। जिनके पुत्र नहीं होता वे पुत्रदा एकादशी का व्रत करते हैं।

इस एकादशी को पवित्रा एकादशी भी कहा जाता है।

रक्षा-बन्धन :

सावन मास की पूर्णिमा को रक्षा–बन्धन का पवित्र और पुनीत त्योहार मनाया जाता है। इस दिन हर बहन अपने भाई को राखी बाँधती हैं। रोली का तिलक लगाती और मिठाई खाने को देती है। इस दिन हर हिन्दू परिवार में सेंवईं बनायी जाती हैं। सेवईं का बनाना प्रत्येक घर में इसी तरह आवश्यक है जैसे ईद के त्योहार पर मुसलमानों के समाज में सेवईं।

बहुला चतुर्थी :

भादों महीने के कृष्णपक्ष की चौथ को बहुला चतुर्थी का पूजन किया जाता। स्त्रियाँ व्रत रखतीं। इसका बहुत बड़ा महत्त्व है। इस दिन गाय का पूजन भी विधि–विधान से किया जाता।

रक्षा पंचमी :

रक्षा पंचमी का व्रत उड़ीसा प्रदेश में किया जाता है। माधव देव का पूजन होता और पर्व का समारोह बड़ी धूम–धाम से मनाया जाता।

हलषष्ठी :

हल षष्ठी भादों के कृष्ण पक्ष की षष्ठी को मनाया जाता। इसे हल छठ भी कहते हैं। पुत्रवती स्त्रियाँ इस दिन हल छठ का व्रत रखतीं। इस दिन हल को जोता हुआ वे कुछ भी नहीं खातीं।

भानु सप्तमी :

हल षष्ठी के दूसरे दिन भानु सप्तमी मनाई जाती है। इसी सप्तमी को कुछ लोग कृष्ण जन्माष्टमी भी मान लेते। इसे शीतल सप्तमी भी कहा जाता है। इस दिन श्रीकृष्ण जयन्ती भी मनाई जाती और सन्त ज्ञानेश्वर जयन्ती भी इसी दिन होती।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी :

यह वैष्णवों का पवित्र त्योहार है। इसी दिन योगिराज श्रीकृष्ण जी ने जन्म लिया था। इसे कालाष्टमी भी कहा जाता है और इसी तरह गोकुलाष्टमी के नाम से भी यह प्रसिद्ध है।

गोकुलोत्सव :

भादों कृष्ण पक्ष की नवमी को गोकुल में गोकुलोत्सव मनाया जाता। इसे गोगा नवमी भी कहते हैं। श्री रामानुज का जन्म इसी दिन हुआ था। इसीलिए इस दिन रामनुज जयन्ती भी मनाई जाती है।

जया एकादशी :

जया एकादशी व्रत सबको रखना चाहिए। इस दिन व्रत रखने से प्रत्येक कार्य में सफलता मिलती है। यह एकादशी विजय की प्रतीक है।

कुशोत्पाटनी अमावस्या :

यह भादों की अमावस अपने में विशेष और न जाने कितनी महत्त्वपूर्ण है। लोगों का विश्वास है कि इस अमावस को जो गंगा में स्नान करता है, मरने के बाद उसे मोक्ष मिलता है। इस दिन लोग हरे कुश घर में ले जाते हैं। इसीलिए इसे कुशोत्पाटनी अमावास कहा जाता है।

इस अमावस को पिठौरी अमावस्या भी कहा जाता है। जैन धर्म के मानने वाले इसी दिन से मौनव्रत का आरम्भ करते हैं।

हरतालिका :

यह व्रत स्त्रियों का है और यह भादों शुक्ल तृतीया को मनाया जाता है। इसीलिए इसे तीजा भी कहा जाता है। यह सौभाग्यवती स्त्रियों का व्रत है। इसे गौरी तृतीया की भी संज्ञा दी जाती है।

भगवान विष्णु का इसी दिन वारहावतार हुआ था। इस दिन को पत्थर चौथ भी कहा जाता है। लोग एक–दूसरे पर पत्थर मारते हैं और हँस–कर कहते हैं कि बुरा मत मानना भाई, आज पत्थर चौथ है।

इस दिन चन्द्रमा का दर्शन नहीं करना चाहिए। जो लोग चौथ के

चन्द्रमा का दर्शन करते हैं, उनकी आयु घटती है और वे शक्तिहीन हो जाते हैं।

ऋषि पंचमी :

ऋषि पंचमी का व्रत स्त्रियां और पुरुष दोनों रखते हैं। इसमें ऋषियों की पूजा की जाती है। यह व्रत भी पावन फल देने वाला है, इसीलिए इसका विशेष महत्त्व है।

5

लोलार्क षष्ठी :

ऋषि पंचमी के दूसरे ही दिन यह व्रत मनाया जाता है। उपवास किया जाता। दान दिया जाता। जिन स्त्रियों के संतान नहीं होती वे काशी में जाकर गंगा में स्नान करतीं। उन्हें पुत्र अवश्य प्राप्त होता।

बनारस से थोड़ी दूर भदैनी में लोलार्क कुण्ड है। इस दिन कार्तिकेय के दर्शन किए जाते हैं। इसे सूर्य षष्ठी और देव षष्ठी भी कहा जाता है।

सन्तान सप्तमी :

लोलार्क षष्ठी के दूसरे दिन सन्तान सप्तमी का व्रत किया जाता। इसे मुक्ता–भरण सप्तमी भी कहते हैं। यह व्रत अधिकांशतः स्त्रियाँ रखतीं। पुत्र की कामना करके वे व्रत रखतीं और उन्हें पुत्र की प्राप्ति होती है।

राधाष्टमी :

राधाष्टमी क्वार के कृष्ण पक्ष में मनाई जाती है। इस दिन महालक्ष्मी का पूजन होता है। इस दिन लक्ष्मी–कुण्ड में स्नान करना चाहिए।

पितृ पक्ष :

भादों की पूर्णिमा से पितृ पक्ष आरम्भ हो जाते हैं। क्वार की

अमावस्या को उनका विसर्जन होता। जिसके पूर्वज की जो तिथि है। उसी दिन उसका श्राद्ध किया जाता। उसे पिण्डदान किया जाता। ब्राह्मणों को भोजन कराया जाता।

बुढ़िया नवमी :

इसको मातृनवमी भी कहा जाता है। इस दिन लोग अपनी माता का श्राद्ध करते। पुत्र वधू सास को जलदान करती और सुहागिन महिलाओं को भोजन करातीं।

महालया अमावस :

क्वार महीने की अमावस को पितृ विसर्जित हो जाते हैं। इसे सर्व पैतृादर्श अमावस्या भी कहते हैं। जिन मृतकों की तिथि मालूम नहीं होती, उन सबका श्राद्ध इसी दिन किया जाता है।

कलश स्थापना :

क्वार की अमावस्या के दूसरे दिन प्रत्येक हिन्दू घर में कलश की स्थापना की जाती है। इसी दिन से नवरात्र आरम्भ हो जाते हैं। इस दिन जो लोग अपनी माता माही और माता माँ का श्राद्ध करते हैं, उन्हें स्वर्ग–लोक की प्राप्ति होती।

इसी दिन देवी का ध्वजा–रोहण भी किया जाता। महाराजा–अग्रसेन की जयन्ती मनाई जाती।

सिन्दूर तृतीया :

क्वार शुक्ल पक्ष की तीज को सिन्दूर तृतीया कहा जाता है। इस दिन सौभाग्यवती महिलायें अपनीं माँग में सिन्दूर भरतीं। वे भगवती दुर्गा से यही वरदान माँगती कि इसी तरह उनकी माँग सिन्दूर से हमेशा भरी रहे।

ललिता पंचमी :

इसे शान्ति पंचमी भी कहा जाता है। यह व्रत पुरुष और स्त्रियों दोनों को करना चाहिए। इससे चित्त को शान्ति मिलती है और मन प्रसन्न रहता है।

विल्वसप्रमी :

यह सरस्वती शयन सप्तमी है। इस दिन सरस्वती देवी की पूजा करनी चाहिए। इसी दिन जैन समाज वालों का होली व्रत मनाया जाता है। महालक्ष्मी का व्रत भी इस दिन किया जाता।

महानिशा पूजा :

क्वार शुक्ल पक्ष की सप्तमी को महानिशा की पूजा की जाती और व्रत रखा जाता। इसे महाष्टमी भी कहते हैं। इस दिन दुर्गा की भी पूजा की जाती और अन्नपूर्णा देवी की परिक्रमा की जाती। देवी का हवन किया जाता। सरस्वती का भी पूजन होता है।

बलिदान महानवमी :

इस दिन देवी का हवन किया जाता। देवी को बलि दी जाती।

विजय-दशमी :

विजय–दशमी को दशहरा कहा जाता। जेठ के महीने में गंगा दशहरा होता और क्वार में विजय–दशमी। इसी दिन मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र की ने रावण का वध किया था। इसी दिन रामलीला समाप्त हो जाती और रावण का पुतला जलाया जाता है।

इस पर्व पर हिन्दू सौभाग्यवती नारियाँ गाय के गोबर के उपले बनाती। उन पर तरोई के फूल चढ़ातीं। सुहाग लेती और माँग में सिन्दूर डालती हैं।

महात्मा गौतम बुद्ध का अवतार इसी दिन हुआ था। इस दिन नीलकण्ठ के दर्शन करने से सर्वत्र लाभ होता। हर काम में सफलता मिलती।

कहा जाता है कि एक बार भगवान शंकर पर शनि की दशा आयी थी। उन्होंने कैलाश पर्वत छोड़ दिया और दूर जाकर एक कूड़े के ढेर पर बैठ गए। पक्षी का रूप धारण कर लिया और कूड़े को चोंच से कुरेंदने लगे।

शनिश्चर ने यह देखा तो उसने दूर से शंकर जी को प्रणाम किया।

उसके मुँह से निकला कि धन्य हो आदि देवता शंकर आपकी माया को कोई भी नहीं जान सकता है।

पापंग कुशा एकादशी :

विजय–दशमी के बाद जो एकादशी आती उसे पापंग कुशा एकादशी कहा जाता है। इस दिन व्रत किया जाता। वह व्रत और उपवास करने से सभी तरह के पापों का नाश होता है।

इसी दिन भरत मिलाप होता। वन से लौटने पर रामचन्द्र जी छोटे भाई भरत से मिलते हैं।

केदार गौरी व्रत :

यह क्वार की द्वादशी को मनाया जाता है। इस दिन गौरी जी का व्रत किया जाता और उनका पूजन होता है। बही खातों का पूजन भी इसी दिन किया जाता और वसना भी पूजे जाते हैं।

जैन निर्वाण दिवस :

यह व्रत जैनियों का है। भगवान महावीर का यह निर्वाण दिवस है। इस दिन जैन समाज के लोग निर्वाण दिवस मनाते हैं।

शरद पूर्णिमा :

यह क्वार मास की पूर्णिमा है। इस दिन व्रत रखने से घर में धन–धान्य की वृद्धि होती है। श्रद्धालु भक्तजन चन्द्रमा की पूजा करते हैं। इस दिन चन्द्रमा से धरती पर अमृत की वर्षा होती है।

सौभाग्यवती नारियाँ गाय के दूध की खीर बनातीं। उसे चाँदी या कलई के कटोरे में भरकर आँगन में रख देतीं। ऊपर चाँद होता और नीचे खीर। सवेरे वह खीर श्रद्धापूर्वक पूरे परिवार में खाई जाती। इसे अमृत खीर कहा जाता है। अमृत खीर खाने से मनुष्य अमर हो जाता। इस कलियुग में मनुष्य अमर तो नहीं होता लेकिन उसकी आयु बढ़ जाती है।

शरद पूर्णिमा का बहुत अधिक महत्त्व है। चित्रकूट में मन्दाकिनी गंगा में स्त्रियाँ और पुरुष स्नान करते। फिर कामदा नाथ पर्वत की

पंचकोशी परिक्रमा करते। इसके बाद खीर खाते। उन्हें बहुत बड़े पुण्य की प्राप्ति होती है।

वर्ष में जितनी भी पूर्णमासी होतीं, शरद पूर्णिमा का उनमें सबसे अधिक महत्त्व है। वर्षा का अन्त हो जाता है। नदियों और तालाबों का जल निर्मल होने लगता।

इसी शरद पूर्णिमा के दिन आधी रात में लक्ष्मी जी का पूजन किया जाता। यह पूजा विधि–विधान से की जाती। इससे घर में लक्ष्मी का वास हो जाता है। भगवान प्रसन्न हो जाते और घर में कभी धन का अभाव नहीं होने पाता।

शरद पूर्णिमा के दिन जो श्रद्धालु स्त्रियाँ और पुरुष व्रत रखते हैं, उसके बाद अमृत खीर खाते तो उनके सभी रोग नष्ट हो जाते हैं। उनकी आयु बढ़ती है और उनकी आँखों की ज्योति कभी मलिन नहीं होने पाती। यह व्रत रखने से भाग्योदय होता है। दरिद्रता का नाश होता और वंश की वृद्धि होती है।

6

आश्विनी पूर्णिमा :

शरद पूर्णिमा का ही दूसरा नाम आश्विनी पूर्णिमा है। यह क्वार मास की पूर्णिमा कही जाती और इसका विशेष महत्त्व है। इसी दिन महर्षि बाल्मीकि का जन्म हुआ था इसीलिए इस दिन बाल्मीकि जयन्ती मनाई जाती है।

वृश्चिक संक्रान्ति :

कार्तिक कृष्ण पक्ष आरम्भ हो जाता है। प्रतिपदा के बाद द्विज को वृश्चिक संक्रान्ति होती है। गोदावरी नदी में स्नान करना बहुत ही अधिक पुण्य का प्रतीक कहलाता है। इस दिन तिल और तेल का दान करना चाहिए, उससे पुण्य की प्राप्ति होती है। दूध का दान करना भी श्रेयष्कर होता है।

करवा-चौथ :

यह व्रत कार्तिक महीने के कृष्ण पक्ष में चतुर्थी को मनाया जाता है। इसे दशरथ चतुर्थी भी कहते हैं। यह व्रत सौभाग्यवती महिलाएं रखतीं। दिन–भर व्रत रखने के बाद रात में चन्द्रमा देखकर और उसका पूजन कर ही जल ग्रहण करतीं।

करवा–चौथ का व्रत नारियाँ इसलिए करतीं कि उनका सौभाग्य बना रहे। उनकी माँग का सिन्दूर इसी तरह बना रहे।

यह व्रत अपने में बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। धान की नयी फसल होती है। इसीलिए इस दिन नये चावल का भात बनता है। नये चुड़ा पूजा में चढ़ाये जाते। सौभाग्यवती नारियाँ सुहाग लेतीं। नई सीकें भी पूजा में चढ़ाई जाती हैं।

एक मिटट्री का करवा होता और दूसरा फूल या पीतल का। मिट्टी के करवा में पानी भरा जाता है। यह जल बारह दिन तक सुरक्षित रखा जाता। नरक चतुर्दशी के दिन इस जल से जो पुरुष स्नान करते, उनका भाग्योदय होता। उनका काया–कल्प हो जाता है।

यह त्योहार इतना अधिक प्रचलित और प्रसिद्ध है कि सारे देश में हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाता। लोग कहते हैं कि करवा करवारी बारहवें दिन दीवाली।

राधाष्टमी :

यह कार्तिक मास की राधाष्टमी कहलाती है और कृष्ण पक्ष में होती है। इस दिन अरुणोदय बेला में जो लोग राधा कुण्ड में स्नान करते, उन्हें मोक्ष प्राप्त होता है।

वसु द्वादशी :

यद्यपि यह तिथि नवमी होती, लेकिन इस दिन वसु द्वादशी का व्रत किया जाता है। इसी दिन से गोत्रि रात आरम्भ होती है।

अहोई अष्टमी :

अहोई अष्टमी का व्रत कार्तिक कृष्ण पक्ष की अष्टमी को किया जाता है। यह वर्ष का सबसे बड़ा त्योहार कहा जाता। बिहार प्रदेश में इसका बहुत अधिक महत्त्व है। स्त्रियाँ निर्जल व्रत रखतीं।

रमा एकादशी :

इस एकादशी का व्रत इसलिए रखा जाता है क्योंकि इसी दिन हनुमान जी का जन्म हुआ था। इस दिन पुष्कर तीर्थ में बहुत बड़ा मेला लगता। श्रद्धालु नर और नारियाँ पुष्कर तीर्थ में स्नान करते।

गोवत्स द्वादशी :

गोवत्स द्वादशी का व्रत पुत्रवती नारियाँ रखती हैं। वे गाय और बछड़े का पूजन करतीं। दोनों को मधुर पदार्थ खिलाती हैं। जो स्त्रियाँ यह व्रत रखतीं, उनकी गोद हमेशा भरी रहती है।

यह व्रत वैष्णव समाज का है और पूरे देश में किया जाता है।

धनतेरस :

देवताओं के वैध धनवन्तरि थे। उनका जन्म इसी दिन हुआ था। इसीलिए धनतेरस को धनवन्तरि जयन्ती भी कहा जाता है। इस दिन जो श्रद्धालु नर और नारियाँ यम देवता के लिए दीपक जलाते, उन्हें मृत्यु के बाद वैतरणी नदी पार नहीं करनी पड़ती। वे सीधे स्वर्ग पहुँच जाते हैं।

धनतेरस के दिन सोना–चाँदी, पीतल, फूल, गिलट और ताँबे के बर्तन खरीदे जाते हैं। दीपावली के पूजन में उन्हीं बर्तनों को रखकर पूजन होता है। इसलिए यह बहुत आवश्यक है कि धनतेरस को कोई न कोई नया बर्तन अवश्य खरीदना चाहिए।

धनतेरस के दिन लोग नये चूड़ी, गट्टे और बताशे खरीदते हैं। इसी दिन से दीपावली के त्योहार का आरम्भ हो जाता है।

धनतेरस का एक और नाम धन त्रयोदशी है। यह दिन हँसता हुआ आता और रात जगमगाती है। पूरे दिन और पूरी रात प्रत्येक में हर्ष और उल्लास रहता।

नरक चतुर्दशी :

नरक चतुर्दशी को छोटी दीवाली भी कहते हैं। इस दिन का विधान यह है कि घर को लीप–पोत कर शुद्ध किया जाता। गाय के गोबर से आँगन लीपा जाता। पुरुष और बच्चे करवा–चौथ के मिट्टी के करवे के पानी से स्नान करते।

कहा यह जाता है कि इस दिन घर का नरक निकल जाता। घर के पुरुष और लड़के पूरे वर्ष भर के लिए निरोग हो जाते।

दिन के बाद फिर जब रात आती तो दीपक जलाये जाते। पटाखे

और फुलझड़ियाँ छुड़ाई जातीं। छोटी दीवाली का पूजन होता है। इसमें खील और बताशे चढ़ाये जाते।

दीपावली :

दीपावली को दर्श अमावस्या भी कहते हैं। यह कार्तिक मास की अमावस को मनाई जाती है। इस दिन रात में लक्ष्मी जी का पूजन होता। गणेश और लक्ष्मी जी की मूर्तियाँ पूजा–स्थल पर रखी जातीं। उन पर खील, चीनी के खिलौने चढ़ाये जाते। घी के दीपक जलते। गणेश जी का भोग लड्डू से किया जाता। लक्ष्मी जी का भी मुँह मीठा किया जाता। अगरबत्ती और धूप जलाई जाती। घर में खील–खिलौने खाये जाते और दीपक घर में भीतर से लेकर बाहर तक सजा दिए जाते।

व्यापारी वर्ग अपनी–अपनी दूकानों में जाकर गणेश और लक्ष्मी का पूजन करते। सारी रात लोग हर्ष और उल्लास के साथ जागते। कहा जाता है कि जो इस रात में सो जाता है उसके घर में लक्ष्मी नहीं आती। दीपावली की रात में लक्ष्मी प्रत्येक घर में जाती है, चाहे वह गरीब हो अथवा अमीर।

इसी रात को कच्ची मिट्टी के दीपक में लक्ष्मी जी के दीपक से काजल पारा जाता। वह ताजा और गर्म काजल जो अपनी आँखों में लगाता, उसकी आँखों की ज्योति बढ़ जाती है।

लक्ष्मी और गणेश के सामने जो बड़ा–सा दीपक जलाया जाता है, वह सारी रात जलता। उसमें खूब तेल भर दिया जाता है। उसी तेल मे चाँदी का सिक्का डाला जाता और एक कौड़ी भी डाली जाती।

कुबेर स्वर्गलोक के कोषाध्यक्ष हैं। वह देवताओं के खजांची हैं जिसके लिए कहा जाता है कि कुबेर का खजाना कभी खाली नहीं होता। इस रात में जो श्रद्धालु व्यक्ति कुबेर जी का व्रत श्रद्धापूर्वक करते, उनके घर में लक्ष्मी का निवास हो जाता है और घर कभी पैसे से खाली नहीं होता है।

प्रदोष काल में दीपक जलाने से दिव्य शक्ति और दिव्य बुद्धि प्राप्त होती है। कूड़े के ढेर पर जो लोग जाकर दीपक जलाते उनके दारिद्रय

का नाश हो जाता है।

बलि पाताल–लोक का राजा था। इस दिन उसकी भी पूजा होती है। जो लोग बलि की पूजा करते हैं उन्हें शक्ति, साहस और उत्साह प्राप्त होता।

इसी रात को गोवर्धन पर्वत की भी पूजा होती। इसी पर्वत को भगवान श्रीकृष्ण जी ने अपनी एक अंगुली पर उठा लिया था। ब्रज के लोगों को डूबने से बचाया था। यह पर्वत खड़ा नहीं, लेटा है। एक तरफ गोवर्धन पहाड़ और किनारे–किनारे यमुना जी बहती हैं।

इसी दिन से नये पाली संवत आरम्भ होता है। यह रात बड़े महत्त्व की होती है। ज्योतिषी पंडित न जाने कितने मंत्रों की सिद्धि करते हैं। यंत्र बनाये जाते। इस रात को जो यंत्र विधि–विधान पूर्वक तैयार किये जाते उनका फल पूरे वर्ष भर प्राप्त होता।

अधिकांश प्रथा यह है कि दीपावली की रात को लोग जुआ खेलते। हालांकि यह परम्परा आदिकाल से चलती आ रही है लेकिन इसके लिए निषेध किया जाता और कहा जाता कि यह सर्वथा वर्जित है। जो लोग जुआ खेलते हैं उनसे लक्ष्मी नाराज हो जाती इसलिए जुआ नहीं खेलना चाहिए। धार्मिक ग्रन्थों का पाठ करें। भजन और कीर्तन करें। जब तक रात प्रभात में न बदल जाये, जागरण करें।

दीपावली अपने साथ सुख और सौभाग्य लेकर आती है। जब दीपक जलाये जाते तो मन के दीये भी अपने आप ही जल जाते हैं।

मुख्यतया तो यह दीपावली का त्योहार इसलिए मनाया जाता कि चार महीने की बरसात के बाद मौसम बदलता है। शरद ऋतु आ जाती है।

बरसात को चतुर्मास कहते हैं। इसके चार महीने आषाढ़, सावन, भादों और क्वार। ये महीने अच्छे नहीं कहे जाते। नदियों, तालाबों का पानी मटमैला हो जाता है। इनमें बाढ़ आ जाती है।

यही कारण है कि ऋषि–मुनि इस ऋतु में एक स्थान से दूसरे स्थान को नहीं जाते। वे न तो नदियों में स्नान करते, न उनका जल

पीते। कहा जाता है कि जैसे स्त्रियाँ रजस्वला होती वैसे ही बरसात में नदियाँ भी रजस्वला हो जातीं। इसीलिए वह जल अपवित्र हो जाता।

शरद ऋतु में दीपावली के महान पर्व पर हर घर की सफाई होती। उसे लीपा और पोता जाता। इसीलिए घरों में गणेश और लक्ष्मी का पूजन होता। फिर दीपक जलाये जाते हैं और खुशियाँ मनाई जाती हैं। हिन्दू त्योहारों के इतिहास में दीपावली अपने में एक महान पर्व है। इसका बहुत बड़ा महत्त्व है।

7

अन्नकूट :

कार्तिक महीने के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को गोवर्धन जी की पूजा होती है। इसी दिन अन्नकूट का भी व्रत किया जाता है। त्योहार मनाया जाता है।

घर में गोबर के गोवर्धन रखे जाते हैं। उनकी कढ़ी चावल से पूजा होती। स्त्रियाँ चावल के खिलौने बनातीं और उन्हें पका–कर खातीं। इस दिन कढ़ी और भात खाने का विधान है। जो गोवर्धन की पूजा करते, कढ़ी और भात खाते, उनके सभी पाप नष्ट हो जाते।

अन्नकूट का व्रत रखने वाले उपवास रखते। वे प्रसाद में अन्नकूट के अलावा और कुछ नहीं खाते।

अन्नकूट में इक्कीस सब्जियाँ होती। जैसे हरे चने का साग। इस साग में हरे चने की पत्तियाँ होतीं हैं। ऊख के छोटे–छोटे टुकड़े। अन्य पदार्थ भी जो शाकाहारी ही होते और खेतों से ताजे होते हैं।

अन्नकूट को एक बड़े बर्तन में पानी भरकर उबाल लिया जाता। उसके बाद वह पानी फेंक दिया जाता। जो पदार्थ बचता उसका पानी निचोड़ कर रख लिया जाता। उसे लोग खील और बताशों के साथ खाते। शक्कर के खिलौने भी उसके साथ लेते। जो श्रद्धालु इस दिन दान, देते उनका हाथ हमेशा भरा रहता, कभी खाली नहीं होने पाता।

भाई-दूज :

भाई दूज को भात्रि दुतिया कहते हैं और इसी को भइया–दूज भी कहा जाता। इस दिन लड़कियाँ और नारियाँ अपने भाई के माथे पर तिलक लगाती हैं। वह तिलक रोली का होता। इसमें अक्षत के रुप में चावल लगाये जाते। बहन भाई को मिष्ठान्न देती। उसका मुँह मीठा करतीं। भाई बहन को उपहार देता। इस उपहार में कपड़े, गहने और रूपये होते। भइया–दूज का त्योहार पूरे देश में मनाया जाता। बहनें खुशी से फूली नहीं समातीं कि आज भइया–दूज है, वे अपने भाई के तिलक लगाएंगी। उसे बर्फी और लड्डू खिलाएंगी।

यम द्वितीया :

जिस दिन भाई–दूज का त्योहार होता, उसी दिन यम द्वितीया का भी पर्व होता है। इस दिन बहन को चाहिए कि अपने भाई को अपने घर में भोजन कराये।इस दिन यमुना नदी में भाई और बहन गाँठ जोड़–कर स्नान करें तो मरने पर वे दोनों यमलोक नहीं जाते। उन्हें मोक्ष मिल जाता है।

इसी तरह गोकुल, वृन्दावन, बरसाना, नन्द–गाँव और गोवर्धन में जो भाई–बहन स्नान करते, उन्हें भी यह सौभाग्य प्राप्त होता है।

इस दिन यम की भी पूजा की जाती और उसका विशेष महत्त्व है। बहुत से श्रद्धालु तो यम की पूजा के साथ ही यमराज के भैंसे की भी पूजा करते हैं। ऐसे लोग जब मरने के बाद वैतरणी नदी में पहुँचते हैं तो उनके सामने गाय आ जाती। वे उसकी पूँछ पकड़कर वैतरणी को पार कर जाते। फिर ऐसे प्राणी यमलोक नहीं जाते। धरती पर जब तक जीवित रहते, उनके सारे पाप नष्ट हो जाते।

रज्जव माह :

वैसे तो यह त्योहार मुसलमानों का है लेकिन अधिकांश हिन्दू भी इसे मनाते हैं। अजमेर में ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह है। क्या हिन्दू और क्या मुसलमान, सभी इसको श्रद्धा की दृष्टि से देखते हैं। सभी

चादर चढ़ाते, फूल चढ़ाते, मिठाई चढ़ाते और नतमस्तक होकर श्रद्धापूर्वक प्रणाम करते हैं।

कार्तिक कृष्ण पक्ष की तीज को ख्वाजा मइनुददीन चिश्ती का जन्म हुआ था। उनकी जयन्ती जिसे मुसलमान लोग उर्स कहते हें मनाई जाती। यहाँ अजमेर में अजमेर शरीफ का बहुत बड़ा मेला लगता। इसे उर्स का मेला कहा जाता है। देश के कोने–कोने से लोग यहाँ आते हैं। यह मेला एक महीने तक रहता। इसमें मुसलमानों से अधिक हिन्दू आते। यहाँ पर दोनों सम्प्रदाय एक हो जाते। किसी में भी हिन्दू और मुसलमान का भेद नहीं रहता।

नाग-व्रत चतुर्थी :

कार्तिक महीने के शुक्ल पक्ष की चौथ को गणेश चतुर्थी मनाई जाती। उसका व्रत किया जाता और गणेश जी की पूजा होती है। इसी दिन नाग चतुर्थी भी मनाई जाती। उनके दर्शन किये जाते। नाग चतुर्थी का बहुत महत्त्व है। कहा जाता है कि जो नाग चतुर्थी का व्रत करता, नागों को दूध पिलाता, उसे जीवन में कभी नाग कष्ट नहीं पहुँचाते।

सौभाग्य पंचमी :

सौभाग्य पंचमी का व्रत प्रत्येक को करना चाहिए। इससे सुख और सौभाग्य की प्राप्ति होती है। इसे जया पंचमी भी कहते हैं। जैन समाज में इस पंचमी तिथि को ज्ञान पंचमी कहते। इस दिन जो श्रद्धापूर्वक व्रत रखता और दान देता है, उसे ज्ञान की प्राप्ति होती। इसीलिए इसे ज्ञान पंचमी भी कहा जाता है।

सूर्य-षष्ठी :

सूर्य–षष्ठी के व्रत में सूर्य भगवान का व्रत करें। आहार में केवल दूध लें। लाल चंदन ओर श्वेत फूलों से सूर्य भगवान की पूजा करें। इससे सूर्य भगवान प्रसन्न होते हैं। अन्न, पुत्र और धन देते हैं।

सूर्य-षष्ठी का पारण :

यह व्रत कर्तिक शुक्ल पक्ष की सप्तमी को किया जाता। इस दिन

सूर्य–षष्ठी का पारण होता है। सूर्य भगवान की पूजा होती और इच्छानुकूल दान दिया जाता। इस दान से अभ्युदय होता।

गोपाष्टमी :

गोपाष्टमी के पर्व का बहुत बड़ा महत्त्व है। इस दिन गाय की पूजा की जाती। उसे मधुर और स्वादिष्ट भोजन कराया जाता। उसके माथे पर तिलक लगाया जाता। उसकी आरती होती। गो–पूजा के साथ ही साथ इस अष्टमी को देवी भगवती दुर्गा का भी पूजन होता। गायों का श्रृंगार किया जाता। उन्हें वस्त्र और आभूषण पहनाये जाते। दान दिया जाता। गायों के पीछे–पीछे अनुगमन भी किया जाता। यह पूजा एक सप्ताह तक चलती है और इसे गो–संवर्धन कहा जाता।

अक्षय नवमी :

गोपाष्टमी के बाद अक्षय नवमी का व्रत मनाया जाता। इस व्रत का बहुत बड़ा महत्त्व है और इसके लिए कहा जाता है कि जो अक्षय नमी का व्रत रहता उसके घर में संचित धन कभी नष्ट नहीं होता। उसमें वृद्धि पर वृद्धि होती चली जाती है। इस दिन विष्णु भगवान की सोने की प्रतिमा बनाकर उसका पूजन करना चाहिए। तुलसी की पूजा भी करनी चाहिए।

इस अक्षय नवमी को आँवला नवमी भी कहते हैं। इस दिन आँवले के पेड़ की पूजा की जाती है। उसकी परिक्रमा की जाती है। घर से पक्का भोजन बनाकर ले जाया जाता और फिर उसे आँवले के नीचे बैठकर खाया जाता।

उस पक्के भोजन के साथ आँवले का फल खाना बहुत आवश्यक होता है। यह व्रत जीवन को अक्षय कर देता। सारे दुख दारिद्रय और रोग नष्ट हो जाते।

आशा दशमी :

आशा दशमी का व्रत जो लोग रखते उन्हें मनोरथ सिद्धि प्राप्त होती है। जो लोग किसी–न–किसी कारण निराश होते, यह व्रत रखने से उनकी आशा पूरी हो जाती है।

प्रबोधिनी एकादशी :

इस एकादशी के व्रत का दूसरा नाम देवष्ठानी एकादशी है। इस दिन हर घर में चौक डाली जाती। लोग निर्जल व्रत करते। कुछ फलाहार भी करते। विष्णु भगवान का पूजन भी होता।

पाँच गन्नों का उन पर मंडप बनाया जाता। उनके आप तोड़ दिए जाते, फिर गन्ने चूसे जाते।

गन्नों के अलावा गन्नों की गंडेरी, बैंगन, मूली और शकरकन्द भगवान पर चढ़ायी जाती है।

दीपावली के खील और खिलौनों से भगवान का भोग लगाया जाता। आरती होती। पुष्प चढ़ाये जाते और चौक की परिक्रमा की जाती। इस दिन हवन होता, उस पर वे उपले रखे जाते हैं और जो विजय–दशमी को नारियाँ बनातीं। तुरई के फूल चढ़ातीं और सिन्दूर चढ़ा–कर फूल लेतीं। वे ही उपले जलाये जाते, साथ में हवन सामग्री होती। सूखी लकड़ियाँ आम की होतीं। जिन्हें संविधा कहा जाता है।

कहा जाता है कि इस हवन की अग्नि में हाथ सेंक लेने चाहिए। इसी दिन से आग तापने वाला जाड़ा शुरू हो जाता है।

इस एकादशी के व्रत में केवल गन्ने का बहुत अधिक महत्त्व है। गन्ना चूसा जाता। दान किया जाता। भगवान पर चढ़ाया जाता। उसकी पूजा होती।

यह व्रत पूर्ण होने के बाद ही कोल्हू में गन्ना पेरा जाने लगता है। रस पिया जाता है। नया गुड़ तैयार होता है।

इस प्रबोधिनी एकादशी का सबसे बढ़ा महत्त्व यह है कि इस दिन से कार्तिक स्नान का पंचम पर्व शुरू होता है।

एकादशी से लेकर श्रद्धालु भक्तजन पाँच दिन तक नियमित गंगा–स्नान करते हैं। इसे पचभिखा भी कहा जाता है। पचभिखा स्नान करने वालों को बहुत बड़ा पुण्य मिलता है।

इसी दिन से तुलसी का ब्याह भी आरम्भ हो जाता है। वैसे तो तुलसी की पूजा कार्तिक पूर्णिमा की रात को होती है। जिस दिन कार्तिकी

स्नान होता है। लेकिन इस ब्याह का कार्यक्रम प्रबोधिनी एकादशी से शुरू हो जाता है। इस एकादशी के व्रत का इतना अधिक महत्व है कि इस दिन लोग व्रत रखतें हैं और व्रत में गन्ना चूसते गन्ने का रस पीते, दूध पीते। काँटे वाला भगवान पर चड़ाते और खाते। सिंघाड़ा उबाल कर खाते। सिंघाड़े तथा कूटू की पूड़ी और रोटी बनाते।

इस दिन गन्ने का विशेष महत्त्व होता। गन्ने के बिना प्रबोधिनी एकादशी की पूजा अधूरी रहती है।

इसी दिन चतुर्थ मास का व्रत समाप्त हो जाता है। एक तो कार्तिक का महीना और दूसरे शुक्ल पक्ष बहुत ही शुभ दिन होता । यह तिथि देवताओं की है इसीलिए तो इसे देवष्ठानी एकादशी भी कहते हैं। इस तिथि को मनुष्य ही व्रत नहीं रखते, देवता भी उपवास करते हैं। वे अपने गुरु बृहस्पति देव की पूजा करते हैं। इस तरह तीनों लोकों में इस प्रबोधिनी एकादशी का विशेष महत्त्व है। पाताल–लोक में भी यह व्रत श्रद्धा से साथ मनाया जाता। सुर–असुर और मानव–तीनों ही इस एकादशी का पावन व्रत अवश्य करते।

8

बैकुण्ठ चतुर्दशी :

कार्तिक पूर्णिमा के एक दिन पहले बैकुण्ठ चतुर्दशी का व्रत किया जाता। इसमें उपवास किया जाता। इस चतुर्दशी का व्रत रखने वालों को मृत्योपरांत बैकुण्ठ की प्राप्ति होती। जो लोग काशी में सूर्योदय की बेला में मणिकर्णिका घाट पर गंगा में स्नान करते हैं उन्हें बहुत बड़ा पुण्य मिलता। इस चतुर्दशी में विष्णु भगवान की पूजा रात में की जाती है।

काशी में भगवान विश्वनाथ की प्रतिष्ठा का दिवस मनाया जाता। मध्य प्रदेश में नर्मदेश्वर का बहुत बड़ा मेला लगता और नर्मदेश्वर की पूजा होती है। इस दिन जो शिवलिंग पर तुलसी के दल चढ़ाता है, उसे मोक्ष प्राप्त होता है, और वह सीधा स्वर्ग जाता है।

कार्तिकी पूर्णिमा :

कार्तिकी पूर्णिमा को गंगास्नान किया जाता है। जिन्हें गंगा प्राप्त नहीं होती वे किसी दूसरी नदी या सरोवर में स्नान करते हैं। सूर्योदय की बेला में पानी में डुबकी लगाना बहुत बड़े पुण्य का प्रतीक कहलाता है।

स्नान करने के बाद दान देना पुण्य फल को और अधिक बढ़ा देता है।

इस पूर्णमासी का इसलिए महत्त्व और अधिक है कि इस दिन तुलसी की पूजा होती, तुलसी का ब्याह पूर्ण होता।

इसी दिन सिक्खों के पहले गुरु नानक देव का जन्म तलवंडी में हुआ था। इसीलिए इसदिन उनका जन्मदिन मंनाया जाता है जिसे नानक जयन्ती कहते हैं।

मार्गशीर्ष मास की प्रतिपदा :

अगहन मास को मार्गशीर्ष कहते हैं। कार्तिकी पूर्णिमा के दूसरे ही दिन से यह आरम्भ हो जाता है। अगहन की यह कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा अपने में विशेष महत्त्व रखती है। इस दिन जो श्रद्धालु भक्तजन व्रत रखते, उन्हें यश और धन की प्राप्ति होती है।

इसी दिन जनाब हजरत अली पैदा हुए थे। उनका जन्म–दिन मनाया जाता है। उनका उर्स खूब धूम–धाम मनाया जाता।

इसी प्रतिपदा के बाद दूज को नर्मदा में स्नान करना चाहिए। स्नान के बाद दान देने से मनोवांछित फल प्राप्त होता है। दान में वस्त्र और दीप देना बहुत ही उत्तम और पवित्र माना जाता है।

भैरवाष्टमी :

इसको महाकाला अष्टमी भी कहा जाता है। जो श्रद्धालु नारियाँ और पुरुष इस अष्टमी का व्रत रखते, उनके पाप ग्रहों का कुप्रभाव नष्ट हो जाता है।

इस दिन साँझ की बेला में भैरव जी का दर्शन करना चाहिए। उनका पूजन करके आरती करें। भैरव भगवान प्रसन्न होते हैं। वे पुत्र और अन्न देते हैं।

कानजी अनला नवमी :

यह व्रत उड़ीसा प्रदेश में मनाया जाता। वहाँ इसका व्रत होता । लोग उपवास रखते, मेला लगता और देवी के नव ग्रहों की पूजा होती है।

उत्पन्ना एकादशी :

उत्पन्ना एकादशी का व्रत भी सबको रखना चाहिए। इस एकादशी

का व्रत रखने से ज्ञान की वृद्धि होती है। मन में अच्छे विचार आते। यह व्रत रखने से लोगों की बुद्धि प्रखर हो जाती है। इसमें कोई सन्देह नहीं।

सन्त ज्ञानेश्वर की पुण्यतिथि :

अगहन कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी को जिस दिन प्रदोष व्रत होता, उसी दिन सन्त ज्ञानेश्वर महाराज की पुण्यतिथि भी मनाई जाती है। इस दिन व्रत रखने से शंकर भगवान प्रसन्न होते और मनचाहा फल देते। श्रद्धालु लोग प्रदोष का व्रत रखते। शंकर जी का पूजन करते। शिव चालीसा में लिखा है कि त्रयोदशी व्रत करें हमेशा, तन नहीं ताके राहे कलेषा।

अन्वाधान कमला जयन्ती :

यह अगहन मास की अमावस्या को मनाई जाती है। इसमें गंगा में स्नान करने और दान देने से मनवांछित फल की प्राप्ति होती है।

इस दिन कमला जयन्ती भी मनाई जाती है जिसका अपना विशेष महत्त्व है।

रुद्र व्रत :

अगहन मास की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को रुद्र व्रत मनाया जाता है। यह पिड़ियाँ व्रत भी कहलाता। पिडिया बना लें और आधी रात के बाद उनका नदी में विसर्जन कर दें सारा का सारा पाप भार उतर जाता है।

नई बरी :

अगहन महीने के शुक्ल पक्ष की दूज पितरों की पूजा की जाती। कहा जाता है कि इस दिन पितरों की पूजा करने से पितर प्रसन्न होते हैं, वंश वृद्धि होती है, परिवार में खुशी आती। इस दिन उड़द की नई दाल की बड़ी बनाई जातीं, इसीलिए इसे नई बरी कहा जाता है।

द्वितीया नाग पंचमी :

अगहन शुक्ल पक्ष की अष्टमी को यह व्रत किया जाता है और इसे द्वितीया नाग पंचमी कहते हैं। इस पूजा और व्रत का विधान वही है जो

सावन के महीने की नागपंचमी का है। इस दिन नागों को दूध पिलाया जाता, उनकी पूजा की जाती। इस दिन जो नागों का दर्शन नहीं करता, उसका पुण्य क्षय हो जाता है।

गुरु तेग बहादुर सिक्खों के नवें गुरु थे। इसी दिन और तिथि को उनका बलिदान दिवस मनाया जाता है। देश की राजधानी दिल्ली में जहाँ पर उनका बलिदान हुआ था वहाँ पर गुरुद्वारा शीश गंज बना है। भगवान राम और सीता जी का ब्याह अगहन के महीने में शुक्ल पक्ष में हुआ था। इसी दिन अयोध्या में राम–विवाह का उत्सव मनाया जाता है। दर्शक देश के कोने–कोने से आते हैं।

इस त्योहार को श्रीपंचमी भी कहा जाता और इसका व्रत रखा जाता।

चम्पा षष्ठी :

इस व्रत के कई नाम हैं। यह अगहन शुक्ल षष्ठी को रखा जाता। इसे स्कन्द षष्ठी भी कहते हैं। यह व्रत महाराष्ट्र में बड़ी श्रद्धा के साथ किया जाता और बहुत अधिक प्रचलित है।

बंगाल में इसे मूलक रुपिणी षष्ठी भी कहा जाता है।

मित्र सप्तमी :

यह व्रत श्रद्धालु लोग अवश्य करते, इसी दिन भक्त नरसिंह मेहता का जन्म हुआ था। इसीलिए इसे भक्त नरसिंह मेहता जयन्ती भी कहते हैं।

यह व्रत विष्णु सप्तमी भी कहलाता। इसे नन्दा सप्तमी भी कहा जाता है।

हरि जयन्ती :

हरि जयन्ती अगहन के शुक्ल पक्ष की नवमी को मनाई जाती है। इस नवमी को जो श्रद्धालु लोग नन्दा देवी का पूजन करते हैं, उन्हें विष्णु–लोक की प्राप्ति होती है।

मोक्षदा एकादशी :

इस एकादशी का दूसरा नाम मौनी एकादशी है। जैन समाज का

यह बहुत बड़ा व्रत और त्योहार है। इस दिन अधिकांश जैनी मौन व्रत धारण करते हैं।

मोक्ष एकादशी का व्रत जो नारियाँ और पुरूष रहते हैं उन्हें मरने के बाद मोक्ष की प्राप्ति होती है।

यह व्रत सबका है और प्रत्येक को करना चाहिए। इससे एक तो मोक्ष मिलता और जीवन के सारे पाप नष्ट हो जाते हैं। इस एकादशी को बैकुण्ठ एकादशी भी कहा जाता। इसका व्रत करने वाला मृत्यु के उपरांत बैकुण्ठ में जाकर निवास करता है।

इसी दिन गीता जयन्ती मनाई जाती है और इसी दिन मातंगी जयन्ती भी होती है।

अखण्ड द्वादशी :

प्रदोष प्रायः त्रयोदशी को न होकर द्वादशी को ही शाम की बेला में हो जाते। इसे अखण्ड द्वादशी का व्रत कहा जाता है। इस दिन गंगा में स्नान करना, भगवान शंकर के लिंग पर कमल का फूल, बेल का फल के अर्ध–तुरे के फूल, बेलपाती चढ़ाने से भगवान भोले प्रसन्न होते। वे अपने भक्त की प्रत्येक इच्छा पूरी करते हैं।

पिशाच मोचन श्राद्ध :

अगहन शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी को पिशाच–मोचन का श्राद्ध किया जाता है। उसे अनंग त्रयोदशी भी कहते हैं। यह व्रत रखने वाला सर्वत्र विजयी होता है।

इसी दिन गुरु ग्रन्थ साहिब वार्षिकोत्सव मनाया जाता है। यह बहुत ही पुनीत और पावन तिथि है।

दत्तात्रेय जयन्ती :

अगहन मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को दत्तात्रेय जयन्ती मनाई जाती है। इस दिन बड़ी धूम–धाम होती। भगवान दत्तात्रेय की पूजी की जाती। उनका व्रत भी रखा जाता। इस दिन कुत्तों को स्वादिष्ट भोजन खिलाने से बहुत बड़े पुण्य की प्राप्ति होती है।

9

अगहनी पूर्णिमा :

अगहन महीने की यह पूर्णिमा अपने में बड़ी फल दायिनी है। इस पूरी की पूरी तिथि को परमपुण्य काल कहा जाता है।

इस पूर्णिमा को अग्रहायणी पूर्णिमा भी कहा जाता है। इसी दिन षोड्शी श्रीपुरसुन्दरी श्री विद्या जयन्ती बड़े धूम–धाम से मनाई जाती है। इस पूर्णिमा में गंगा में स्नान करने से और दान देने से पुण्य प्राप्त होता और देवताओं की दिव्य दृष्टि परिवार का कल्याण करती, आयु बढ़ती और सभी पाप नष्ट हो जाते हैं।

धनु संक्रान्ति :

पोष महीने की कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा को धनु संक्रान्ति का पर्व होता है। यह पुण्य काल प्रातः से लेकर संध्या के समय तक बना रहता है। इसमें जो लोग गोदावरी नदी में जाकर स्नान करते हैं उन्हें बहुत बड़े पुण्य की प्राप्ति होती। इसी दिन से धनुमास आरम्भ हो जाता है। इसे खरमास भी कहा जाता है।

इस दिन नदी में स्नान करने के बाद वस्त्रों का दान देना चाहिए। जो वस्त्रों का दान देता है, उसके सभी अभीष्ट पूरे होते हैं।

सौर पौष मास आरम्भ :

पौष महीने के कृष्ण पक्ष की चौथ को जिस दिन गणेश चतुर्थी का

व्रत होता, इसे संकष्टी चौथ कहा जाता है। इस दिन सौभाग्यवती नारियाँ व्रत रखतीं, उपवास करतीं। वे संकट भगवान का पूजन करतीं और काले तिल के लड्डू बनाती और उसका बकरा बनाकर उसका गला काटतीं। शंकर भगवान प्रसन्न होते और वे घर को सम्पन्न कर देते। इस दिन पुआ बनते हैं और वे संकट भगवान पर चढ़ाये जाते। इसी दिन नये गुड़ और नये तिल की पूजा होती है। सौर का महीना भी इसी से शुरू होता है। इस दिन चन्दन बाबा का मेला लगता। यह उर्स का मेला कहलाता। इसी दिन बाबा चन्दन शहीद का जन्म हुआ था।

भानु सप्तमी :

सूर्य दक्षिणायन से उत्तरायण हो जाता। इसी दिन सूर्य भगवान मकर राशि में प्रवेश करते हैं। इसीलिए इस भानु सप्तमी का विशेष महत्त्व है। इस दिन जो व्रत रखता उसका भाग्योदय हो जाता है। उसके जीवन भर के सारे पाप नष्ट हो जाते।

एक तो सूर्य भगवान उत्तरायण होते हैं जिससे नेष्ठ काल समाप्त हो जाता है और दूसरे शिशिर ऋतु आरम्भ होती है। यह दिन दैत्यों की दोपहर होता और देवताओं के लिए यह आधी रात कही जाती है।

इसे विराज दिन भी कहा जाता है।

अष्टका श्राद्ध :

इस दिन दुर्गाष्टमी होती, जिसे कालाष्टमी भी कहा जाता। इसी दिन अष्ट का श्राद्ध किया जाता है और इसी दिन राष्ट्रीय पौष महीना आरम्भ होता है।

अन्वष्टका श्राद्ध :

पौष कृष्ण पक्ष की नवमी को अन्वष्टका श्राद्ध किया जाता है। यह श्राद्ध प्रत्येक गृहस्थ को करना चाहिए। इसका फल सर्वतोमुखी प्रतिभा देता है। ज्ञान और विचारों में वृद्धि करता। मनुष्य की बुद्धि प्रखर हो जाती है।

इसी दिन श्रद्धानन्द जी ने अपना बलिदान किया था। इसीलिए इस

दिन को श्रद्धानन्द बलिदान दिवस, कहते हैं।

श्री पार्श्वनाथ जयन्ती :

पौष कृष्ण दशमी को पार्श्वनाथ जयन्ती मानाई जाती है। यह जैनियों का बहुत बड़ा पर्व और त्योहार है। जैनी पाश्वनाथ जी की पूजा करते। उनकी जयन्ती धूम–धाम से मनाते और जुलूस निकालते।

इसी दिन क्रिसमस ईवनिंग का त्योहार भी ईसाई लोग खूब धूम–धाम से मनाते। क्रिसमस ईवनिंग में गिरजाघरों में प्रार्थना होती। लोग खुशियाँ मनाते। एक–दूसरे से गले मिलते। परस्पर उपहार लेते और देते।

क्रिसमस डे :

क्रिसमस डे को हम बड़ा दिन कहते हैं और यह हर साल पच्चीस दिसम्बर को मनाया जाता है। इसी दिन ईसा मसीह का जन्म हुआ था। पूरी दुनिया में यह त्योहार बड़े हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाता। संसार की जितनी आबादी है उसमें लगभग पिच्चहतर प्रतिशत यहूदी हैं। ये सभी क्रिसमस का त्योहार मनाते। इस दिन गिरजाघरों में प्रार्थनायें होतीं और उन्हें खूब सजाया जाता। क्रिसमस का पेड़ लगाया जाता।

इसी दिन महामना पंडित मदन–मोहन मालवीय की जयन्ती भी मनाई जाती है।

इसी दिन सफला एकादशी का भी व्रत किया जाता। इस पवित्र एकादशी का व्रत जो भी पुरुष और स्त्री करते हैं। सफलता हमेशा उनका साथ देती।

सुरूप द्वादशी :

यह त्योहार पंजाब में मनाया जाता है। पौष कृष्ण पक्ष की द्वादशी को सुरूप द्वादशी कहा जाता है। इस दिन पंजाब में जोरहार में एक विशाल मेला लगता है। यह व्रत करने से स्त्री हो या पुरुष उसका सौन्दर्य स्थायी रहता है।

ौष शुक्ल पक्ष की अमावस्या :

इसको बकुला अमावस्या कहते हैं। यह दर्श की अमावस्या भी कहलाती है। इस दिन स्नान करने और दान देने से मनचाहे फल की सेद्धि होती है।

10

ईसाई वर्ष :

इस दिन ईसाई वर्ष आरम्भ होता है अर्थात् 31 दिसम्बर के बाद एक जनवरी आती है। संसार में जितने भी संवत और शाके आदि हैं, ईसाई वर्ष ही सर्वप्रधान है और यही पूरे विश्व में माना जाता है।

लोहड़ी :

लोहड़ी पंजाब का प्रमुख त्योहार है। यह पंजाब के अलावा कश्मीर में भी मनाया जाता है। यह हर साल 13 जनवरी को होता है। इस दिन पंजाबी लोग खिचड़ी खाते। सफेद तिल की रेवड़ी खाते। हवन करते, खुशियाँ मनातें और एक–दूसरे से गले मिलते।

खिचड़ी :

खिचड़ी हमारा बहुत पुराना त्योहार है। यह प्रतिवर्ष 14 जनवरी को मनाया जाता है। इसे मकर संक्रान्ति भी कहते हैं। इस दिन गंगा सागर में बहुत बड़ा मेला लगता है। इसके लिए कहा जाता है कि सारे तीर्थ बार–बार गंगा सागर एक बार। इसी दिन सूर्य दक्षिणायन से उत्तरायण होता। लोग गंगा में स्नान करते दान देते।

इस दिन नये चावल और नई उड़द की दाल की खिचड़ी खाई जाती। खाने से पहले खिचड़ी का दान किया जाता। काले तिल के लड्डू गुड़ मिलाकर बनते। वे भी खिचड़ी के साथ दान में दिये जाते। खोये के

पेड़े भी दान किए जाते। पापड़, फल और द्रव्य भी दान में दी जाती।

रमजान महीना :

रमजान का महीना पूरे एक महीने तक रहता। इसके बाद जब ईद का चाँद देख लिया जाता है तभी ईद मनाई जाती। पूरे महीने रोज़ा मनाये जाते। मुसलमान लोग सूरज निकलने से पहले ही जलपान कर लेते, दिन भर जलपान नहीं करते, फिर जब सूरज डूब जाता तो वे शाम की नमाज अदा करते, रोजा खोलते, पानी पीते और भोजन करते।

मुस्लिम समाज में रमजान का महीना बहुत ही पवित्र महीना माना जाता है।

मार्तण्ड सप्तमी :

मार्तण्ड सूर्य भगवान को कहते हैं। पौष मास के शुक्ल पक्ष में इस सप्तमी का त्योहार हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाता है। इस दिन सूर्य की पूजा होती। श्रद्धालु भक्त–जन व्रत रखते और सूर्य भगवान की पूजा करते।

इसी दिन सिक्खों के दसवें गुरु गोबिन्द सिंह का जन्म–दिन हुआ था, इसीलिए गुरु गोबिन्द सिंह जयन्ती मनाई जाती है।

और इसी दिन दक्षिण भारत में पोंगल का त्योहार मनाया जाता है।

श्री अन्नपूर्णा अष्टमी :

यह व्रत दुर्गाष्टमी का होता है। इस दिन देवी की पूजा होती है। बंगाल, बिहार और मध्य प्रदेश में यह अन्नपूर्णा अष्टमी का व्रत मनाया जाता है। यहाँ अन्नपूर्णा की पूजा होती है, व्रत रखा जाता है और रात में देवी का जागरण भी किया जाता है।

शाम्ब दशमी :

शाम्ब दशमी को सूर्य भगवान की पूजा होती। इसे विशेष फलदायिनी कहा जाता है। उड़ीसा प्रदेश में इस व्रत का विशेष महत्त्व है। बच्चे से लेकर बड़े तक व्रत रखते और सूर्य भगवान की पूजा करते हैं।

पुत्रदा एकादशी :

शाम्ब दशमी के बाद पुत्रदा एकादशी का व्रत आता है। यह व्रत सभी लोग करते हैं। इस दिन के लिए कहा जाता है कि जो लोग पुत्रदा एकादशी का व्रत करते हैं। उन्हें एक तो पुत्र की प्राप्ति होती है और दूसरे वे मरने के बाद बैकुण्ठ में जाते हैं। इसलिए इसे बैकुण्ठ एकादशी भी कहा जाता है।

शाकम्भरी जयन्ती :

पौष महीने की पूर्णमासी को शाकम्भरी जयन्ती मनाई जाती है। इस दिन व्रत किया जाता है। इसी दिन नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का जन्म हुआ था। इसीलिए सुभाष जयन्ती धूमधाम से मनाई जाती है।

गणतन्त्र दिवस :

यह भारतीय गणतन्त्र दिवस 26 जनवरी को हमारे देश भारत–वर्ष में खूब धूमधाम के साथ मनाया जाता है। इसी दिन हमारा नया विधान बना था। यह संविधान बाबा अम्बेडकर ने बनाया था।

राजधानी दिल्ली में इस दिन महान पर्व मनाया जाता। इण्डिया गेट पर प्रातः छः बजे से लेकर नौ बजे तक तीनों फौजें राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री को सलामी देती। पहली फौज थल सेना कही जाती, दूसरी सेना जल सेना के नाम से पुकारी जाती है और तीसरी कहलाती है वायु सेना। इन तीनों सेनाओं की परेड होती। तोप के गोले छूटते। राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री सलामी लेते। लाखों की संख्या में लोग यह दृश्य देखने आते। यह छब्बीस जनवरी का उत्सव देखने के लिए देश के कोने–कोने से लोग आते।

पूरे संसार में यह प्रसिद्ध है कि जैसा गणतन्त्र दिवस हमारे भारत में मनाया जाता, वैसा और किसी दूसरे देश में नहीं होता।

यही कारण है कि हमारा गणतन्त्र दिवस देखने के लिए लगभग तीस देशों के लोग आते। तब हमारी छाती गज भर की चौड़ी हो जाती और हमारा मन कहने लगता कि हाँ वास्तव में हमारा भारत महान है।

जो पर्यटक छब्बीस जनवरी पर हमारा गणतन्त्र दिवस देखने आते वे राजधानी दिल्ली के मेहमान लगभग एक महीने तक बने रहते।

वे ऐतिहासिक लाल किला देखते। जामा मस्ज़िद जाते। उसके मीनारों पर चढ़ते और वहाँ से पूरा शहर देखते। इसके बाद वे राजघाट पहुँचते जहाँ महात्मा गाँधी की समाधि है। यह समाधि प्रत्येक को प्रभावित करती। यह बहुत बड़ी समाधि है। इस पर करोड़ों रुपया खर्च किया गया है। यहाँ जाने पर मन को शान्ति मिलती और लोग घण्टों बैठे रहते।

प्रातः सूर्योदय से लेकर और सूर्यास्त तक लोग आते ही रहते हैं। जो भी आता वह हमारे राष्ट्रपिता पर श्रद्धांजलि अर्पित करता। उसके मुँह से अपने आप ही निकल जाता–'हे राम'।

हम गर्व के साथ कह सकते हैं कि जितनी बड़ी समाधि हमारे राष्टपिता महात्मा गाँधी की है इतनी बड़ी समाधि संसार में और किसी की नहीं।

दर्शक और पर्यटक फिर गाँधी स्मारक में आ जाते जिसमें महात्मा गाँधी की चित्र प्रदर्शनी है। उनके जन्म से लेकर निर्वाण तक की सारी झांकियां वहां प्रस्तुत हैं।

इसी गाँधी स्मारक में वह सफेद खद्दर की साड़ी रखी है जिसे सन 1942 में माता कस्तूरबा गाँधी ने इन्दिराजी को भेंट की थी। इस दिन फिरोज गाँधी और इन्दिरा गाँधी का ब्याह हुआ था। यह ब्याह पुरानी दिल्ली के सीता–राम बाजार में सम्पन्न हुआ था।

लाजपतराय दिवस :

इस दिन पंजाब के लाला लाजपत राय का जन्म हुआ था। इसीलिए लाजपतराय जयन्ती मनाई जाती है।

बापू निर्वाण दिवस :

30 जनवरी को हमारे राष्टपिता मोहनदास कर्मचन्द गाँधी का निर्वाण दिवस मनाया जाता है। एक पखवारे तक व्रत किया जाता है। इसी दिन नाथूराम विनायक गोडसे ने महात्मा गाँधी की हत्या की थी।

सर्वाप्ति सप्तमी :

सर्वाप्ति सप्तमी का व्रत जो लोग रखते हैं उनके सभी मनोरथ सिद्ध होते हैं। इस दिन स्वामी विवेकानन्द का भी जन्म हुआ था। इस लिए इस दिन विवेकानन्द जयन्ती मनाई जाती है।

इसी दिन स्वामी रामानन्दचार्य का भी जन्म हुआ था इसीलिए रामानन्दाचार्य जयन्ती भी इसी दिन मनाई जाती है।

हजरतअली की शहादत भी इसी दिन हुई थी। इसीलिए इस दिन को, शहादते हजरत अली भी कहा जाता है।

षट्टिला एकादशी :

सूर्य उत्तरायण हो जाता है, फिर उसके बाद जब बुध मकर राशि में प्रवेश करता है तो षटशिला एकादशी मनाई जाती है। प्रदोष का व्रत रखा जाता है। यह जैन समाज का व्रत है। इसे जैन त्रयोदशी भी कहा जाता है।

जैन समाज में इस त्रयोदशी को मेरु त्रयोदशी भी कहा जाता है। यह बहुत ही पुनीत तथा पावन तिथि होती है।

रंटती कालिका पूजा :

यह व्रत चतुर्दशी को मनाया जाता है। इस दिन शिवरात्रि भी होती है।

यह शुक्राचार्य जी का व्रत कहलाता है।

मौनी अमावस्या :

इस व्रत का विशेष महत्त्व है। यह माघ महीने की अमावस्या को मनाया जाता है। इस दिन श्रद्धालु लोग प्रातः सूर्योदय से पूरी रात तक मौन रहते हैं। वे मौन रहकर ही गंगा में स्नान करते और दान देते हैं। इस दिन हल्दी नहीं खाई जाती। नमक पड़ा हुआ सादा भोजन किया जाता है।

इस दिन गुप्त दान भी किया जाता है। यह मौनी अमावस्या पुण्य की प्रतीक है। इससे भाग्योदय होता है।

आखिरी जुमा :

रमजान के महीने में चार शुक्रवार पड़ते हैं। यह महीना मुसलमानों का होता है और इसे रमजान शरीफ कहा जाता है। इस महीने में पड़ने वाले हर शुक्रवार को मुसलमान लोग मस्जिद में जाकर रमजान की नमाज अदा करते हैं।

आखिरी शुक्रवार को जो नमाज पढ़ी जाती है, उसका विशेष महत्त्व होता है।

यह दिन अमावस्या का होता है। इसी दिन द्वापर युग का आरम्भ हुआ था। जो श्रद्धालु भक्तजन इस दिन त्रिवेणी में जाकर स्नान करते हैं, उन्हें मोक्ष की प्राप्ति होती है।

श्री बल्लभ जयन्ती :

महामान्य बल्लभ जी का जन्म इसी दिन हुआ था, इसीलिए इसे बल्लभावतार कहते हैं। बल्लभ जी की जयन्ती धूमधाम से मनाई जाती है।

ईद :

हमारे हिन्दू समाज में तीन बड़े त्योहार हैं। दीवाली, होली और क्वार मास का दशहरा जिसे विजयादशमी कहते हैं।

ऐसे ही मुसलमानों के तीन बड़े त्यौहार हैं। सबसे बड़ी ईद। इस दिन मुसलमान लोग दूज का चन्द्रमा देखकर ही पानी पीते हैं। वे मस्जिदों में जाकर ईद की नमाज अदा करते हैं। सभी एक–दूसरे से मिलने जाते हैं। यह मीठी ईद कहलाती है। इस दिन सेवई खाने को दी जाती हैं। लोग एक–दूसरे से गले मिलते हैं।

ईद मुसलमानों का सबसे बड़ा त्यौहार है। यह केवल भारतवर्ष में ही नहीं, पूरे एशिया में मनाया जाता है।

बसन्त पंचमी :

यह एक महान पर्व है। इस दिन सरस्वती की पूजा होती है। सभी लोग बसन्ती वस्त्र धारण करते हैं। आम्र के बौर की पूजा होती है। आम्र पल्लवों से घर को सजाया जाता और इसी दिन से लेकर द्वादशी तक

सरस्वती सप्ताह मनाया जाता है। इसे बागेश्वरी जयन्ती भी कहा जाता है। जो लोग बसन्त पंचमी का पूजन काशी में करते हैं, उन्हें मोक्ष प्राप्त होता है।

बापू श्राद्ध :

वसन्त पंचमी के बाद हमारे राष्टपिता बापू का श्राद्ध होता है। इसी दिन सर्वोदय मेला लगता और महात्मा गाँधी का श्राद्ध किया जाता है।

इसी दिन दीन बन्धु एंड्रूज़ की जयन्ती मनाई जाती है। इसी दिन उनका जन्म हुआ था। इसी दिन सूर्य कुम्भ संक्रान्ति मनाई जाती। व्रत किया जाता । सूर्य का पूजन होता। गो का दान दिया जाता। अन्न दान किया जाता और गोदावरी नदी में स्नान करने से सभी मनोकामनायें पूर्ण होती हैं।

11

अचला सप्तमी :

इसे विधान सप्तमी भी कहा जाता है। इस दिन व्रत रखने और उपवास करने से आरोग्यता प्राप्त होती है।

भीमाष्टमी :

इसी दिन दुर्गाष्टमी भी होती है, जिसे भीमाष्टमी कहा जाता। इस दिन का व्रत रखने से सभी प्रकार की सिद्धि प्राप्त होती है।

महानन्द नवमी :

यह व्रत श्रद्धालु लोग शान्ति–पूर्वक मनाते हैं। इस दिन हरसूब्रह्म देवता की पूजा होती है।

जया एकादशी :

इस एकादशी का बंगाल में बहुत महत्त्व है।

भीष्म द्वादशी :

यह व्रत भीष्म पितामह के लिए किया जाता है।

मरुस्थल मेला :

यह मेला राजस्थान में जैसलमेर में मनाया जाता है। क्या हिन्दू, क्या मुसलमान–सभी इस मेले में जाते हैं।

सन्त रविदास जयन्ती :

यह माघी पूर्णमासी का दिन होता है। इस दिन गंगा में स्नान किया जाता है। दान दिया जाता है। उससे विशेष फल की प्राप्ति होती है। महात्मा रविदास, जो मीराबाई के गुरु थे इसी दिन उनका जन्म हुआ था इसीलिए पूरे देश में रविदास जयन्ती मनाई जाती है।

नगर हो या गांव, शहर हो या कस्बा, सभी जगह महात्मा रविदास का जुलूस निकाला जाता। राजधानी दिल्ली में यह जुलूस देखने योग्य होता। यह तीसरे पहर दो बजे निकलता और फिर रात आठ बजे तक निकलता ही रहता। दर्शक पंक्तिबद्ध हो कर लालकिले से लेकर फव्वारा, चांदनी चौक, लहौरी गेट इन स्थानों पर जमे खड़े रहते। प्रसाद में उबली हुई चने की दाल और चावल बंटते।

जिस तरह महात्मा रविदास ने मीराबाई को ज्ञान दिया था और उनके गुरु कहलाये, वैसे ही वे सब को सद्‌बुद्धि देते हैं।

फाल्गुन की चतुर्थी :

फाल्गुन महीने के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को गणेश जी का व्रत किया जाता है और इसे गणेश चतुर्थी कहते हैं। इस दिन चन्द्रोदय उसी तरह देर से होता है जैसे करवाचौथ को।

यह व्रत जो भी रखता है, गणेश जी उसके सभी दुःख दूर करते हैं। उसके भाग्य का उदय कर देते हैं और उसे सद्‌बुद्धि देते हैं।

श्री राजेन्द्र प्रसाद निर्वाण दिवस :

फाल्गुन कृष्ण की नवमी को हमारे प्रथम राष्ट्रपति डॉ राजेन्द्र प्रसाद का निधन हुआ था। यह उनका निर्वाण दिवस है। इस दिन पूरा राष्ट्र उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

जानकी जन्म :

इसे सीताष्टमी भी कहते हैं। इस दिन देवी की पूजा होती है इसलिए कालाष्टमी भी कहा जाता है। इसी दिन जानकी जी का जन्म कुम्भ से हुआ था। तभी उन्हें कुम्भ कन्या की संज्ञा दी गयी।

कहा जाता है कि उस साल जनकपुर में भयानक अकाल पड़ा। धरती सूख गयी। तालाब भी सूख चले और कुओं में भी पानी नहीं रह गया।

राजा जनक ने अपने राज्य के सारे के सारे अनाज के भण्डार खोल दिए थे। पानी की एक बूंद भी नहीं गिरी। फसल सूख गयी।

तब जनक के गुरु याज्ञवलक्य जी ने जो महर्षि थे उन्होंने कहा कि मिथिला की महारानी सुनयना और राजा जनक हल जोतें तो पानी बरसेगा और खेती हरी हो जाएगी।

महर्षि के आदेश का पालन किया गया। राजा और रानी ने हल जोता। अचानक हल जमीन में गड़े मिट्टी के कुम्भ से टकरा गया। वह फूट गया। उससे एक कन्या निकली जैसे नवजात शिशु हो।

महर्षि याज्ञवलक्य ने बतलाया कि मिथिला–पति तुम्हारे कोई सन्तान नहीं थी। यह धरती की बेटी है। धरती ने तुम्हें औलाद दी है। यह कुम्भ कन्या है, इसका नाम जानकी रखो। दूसरा नाम सीता है।

इस घड़े में राक्षसों ने मुनियों का खून भरकर गाड़ दिया था। इस कन्या को घर ले जाओ। इसका लालन–पालन करो। इससे तीनों लोकों में तुम्हारा नाम होगा और कीर्ति बढ़ेगी।

यही कारण है कि इस दिन जानकी जयन्ती मनाई जाती है। इसी दिन अष्टका का श्राद्ध भी किया जाता है। इसमें ऐसे लोगों को भोजन कराया जाता जो पूरी तरह अशक्त होते। उनका भोजन करने से बहुत बड़े पुण्य की प्राप्ति होती है।

विजया एकादशी :

विजयाएकादशी फाल्गुन महीने के कृष्ण पक्ष में मनाई जाती है, और इसका बहुत बड़ा महत्त्व है। इस दिन क्या बच्चे और क्या बूढ़े और क्या जवान सभी व्रत रखते हैं। ऐसे ही स्त्रियों और लड़कियों को भी यह व्रत रखना चाहिए। जो इस व्रत को रखता, पूजन करता, उसे प्रत्येक कार्य में सफलता मिलती।

महाशिवरात्रि व्रत :

फाल्गुन महीने के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी को शिवरात्रि का व्रत किया जाता है। कुछ लोग उपवास में फलाहार लेते, कुछ दूध पी लेते। कुछ निर्जल रहते हैं।

सूर्योदय से लेकर पूरे दिन और पूरी रात शंकर जी की पूजा होती है। मन्दिरों में शिवलिंग पर गंगा–जल चढ़ाया जाता। कच्चे बेल के फल, ऐसे ही धतूरे के फल, कच्चे तथा पके बेर, गन्ने की गंडेरी और बेल–पत्र चढ़ाये जाते हैं।

इससे शंकर भगवान प्रसन्न होते और वे अन्न, पुत्र और धन देते हैं।

इस रात को जागरण किया जाता। शंकर जी का भजन और कीर्तन होता रहता। शिवरात्रि का व्रत करने वाले को शिवलोक की प्राप्ति होती। उके पाप समूल नष्ट हो जाते।

इस व्रत की एक विशेषता और है–जो भी श्रद्धालु भक्त शिवलिंग पर एक सौ आठ कमल के फूलों की माला चढ़ाता उसे मरने के बाद मोक्ष प्राप्त होता।

इस व्रत का हमारे त्योहारों के इतिहास में जितना अधिक महत्त्व है अन्य किसी त्योहार का नहीं।

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री रामचन्द्र जी ने कहा था कि सेतुबन्ध श्री रामेश्वरम में जो गंगा–जल लाकर चढ़ाएगा, वह दिव्य लोक को जाएगा। इसी तरह जो मनुष्य शिवरात्रि के महान पर्व पर सेतुबन्ध रामेश्वरम के शिवलिंग पर कमल के फूल और बेल–पत्र चढ़ाएगा, वह मोक्ष का अधिकारी बन जाएगा और फिर धरती पर उसका जन्म नहीं होगा। इसी दिन वैद्यनाथ जयन्ती मनाई जाती है। श्री वैद्यनाथ जी का जन्म इसी दिन हुआ था। इस तिथि को बहुत ही पुनीत माना जाता और शंकर जी की पूजा सर्वत्र होती।

इसी दिन स्वामी दयानन्द सरस्वती की जयन्ती भी मनाई जाती है।

इसी दिन ऋषि बोधोत्सव भी खूब धूमधाम के साथ मनाया जाता।

जगह–जगह शंकर जी का पूजन होता। इस समय को महानिषिध काल कहा जाता है।

सिनीवाली अमावस्या :

फाल्गुन महीने की अमावस्या को सिनी वाली अमावस्या कहा जाता है। इस दिन स्नान–दान करने से सुबुद्धि मिलती। लोक–परलोक बनता और व्रत करने वाला पुण्य को प्राप्त करता। उसकी सर्वत्र प्रशंसा होती। वह यशस्वी कहलाता। उसकी कीर्ति का पताका चारों ओर फहराने लगती।

12

रामकृष्ण परमहंस जयन्ती :

फाल्गुन महीने के शुक्ल पक्ष की दूज को पूरे देश में श्री रामकृष्ण परमहंस जयन्ती मनाई जाती है। इस दिन चन्द्रमा के दर्शन भी किए जाते। इससे बहुत बड़ा पुण्य प्राप्त होता है।

लोखरामवीर तृतीया जयन्ती :

यह तृतीया का व्रत होता है। इसे लेखरामवीर जयन्ती कहा जाता है। इसे मधुप तृतीया भी कहते हैं। इस मधुप तृतीया का व्रत जो लोग श्रद्धा के साथ करते हैं, उनका भाग्योदय हो जाता है। वे दूध से नहाते और पूतों से फलते हैं।

मीन संक्रान्ति :

षष्ठी को गोपाष्टमी षष्ठी कहा जाता। इस दिन बंगाल में गायों की पूजा होती। उनका श्रृंगार किया जाता और उन्हें खूब सजाया जाता है। इस दिन भूमि, गाय और अन्न का दान करना चाहिए। गोदावरी नदी में स्नान करने से विशेष फल प्राप्त होता है।

प्रयोजनी वसन्त ऋतु इसी दिन से आरम्भ होती है।

कल्याण सप्तमी :

इस कल्याण सप्तमी को कामदा सप्तमी भी कहते हैं। इस दिन जो

व्रत रखता उसके मन में जो भी इच्छा होती हैं, वे अवश्य पूरी होती हैं। उसका कल्याण ही नहीं होता बल्कि लोक और कल्याण बनता है।

होलाष्टक :

फाल्गुन महीने की शुक्ल पक्ष की अष्टमी को होलाष्टक आरम्भ हो जाते हैं। इस दिन दुर्गाष्टमी भी होती है। अष्टमी का व्रत रखा जाता और लक्ष्मी जी का पूजन किया जाता।

यह सीताष्टमी भी कहलाती है और इस दिन सीता जी का पूजन होता है।

आनन्द नवमी :

फाल्गुन के शुक्ल पक्ष की नवमी को यह नवमी मनाई जाती। श्री आनन्द जी का इस दिन पूजन होता है। उनका व्रत रखा जाता।

रंगभरी एकादशी :

यह व्रत अपने में एक महान पर्व है और पूरे देश में हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाता है। काशी में विश्वनाथ जी के मन्दिर मे इसका पूजन होता। श्रद्धालु भक्त लोग रात–भर जागरण करते। वे भजन और कीर्तन करते। कहा जाता है कि इस रात को सोना नहीं चाहिए। जो सो जाता है उसके सौभाग्य का कुछ अंश लुप्त हो जाता है।

गोविन्द द्वादशी :

फाल्गुन शुक्ल पक्ष की द्वादशी को गोविन्द द्वादशी कहा जाता है। इस दिन सूर्य उत्तर गोल में प्रवेश करता है। यह दिन दैत्यों के लिए रात होती और देवताओं का उत्थान होता है।

फाल्गुन महीने के प्रदोष को जो त्रयोदशी को होता है, कहा जाता है, कि इसी दिन से चैत का महीना शुरू हो जाता है और मेरठ में चण्डी का मेला लगता।

सर्वातिहर चतुर्दशी :

फाल्गुन शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को यह सर्वातिहर चतुर्दशी मनाई

जाती है। इस दिन महेश्वर का व्रत किया जाता। महेश्वर शंकर भगवान का ही दूसरा नाम है।

होलिका-दहन :

फाल्गुन महीने की पूर्णमासी की रात को होली जलाई जाती। इसे होलिका दहन कहते हैं। सामाजिक दृष्टिकोण से यह त्योहार इसलिए मनाया जाता कि नया गेहूँ होता है, नये चने होते हैं, नये जौ होते हैं। होली का पूजन किया जाता। उस पर गोबर के बने सूखे बल्ले चढ़ाये जाते। मोहल्ले में एक विशेष स्थान पर चौराहे पर लकड़ियाँ इकट्ठी की जातीं। अण्डी के फल चढ़ाये जाते। अबीर गुलाल से पूजा होती।

नया अनाज जौ, चना और गेहूँ की बाली होली पर चढ़ाई जातीं। उसकी परिक्रमा की जाती। होली की आग में गन्ना भूना जाता और अफर उसे घर में लाकर भूना जाता।

जाड़ा जाता है। गर्मी आती है इसीलिए जाड़ा जाने से पहले होली तापी जाती है। इस रात को लोग सोते नहीं, गाना–बजाना करते हैं।

एक युग में पाताल–लोक में हिरण्यकश्यप नाम का दैत्यों का राजा था। वह अपनी प्रजा से कहता कि मैं ही भगवान हूँ, मेरी ही पूजा करो। मेरा ही व्रत रखो और मेरे ही नाम की माला जपो। इसके अलावा प्रजा का कोई भी व्यक्ति यदि विष्णु भगवान की पूजा करेगा तो उसे मृत्यु का दंण्ड किया जाएगा।

इसी दैत्य राजा के एक राजकुमार का जन्म हुआ। उसका नाम प्रहलाद रखा गया। वह बचपन से ही विष्णु भगवान का भक्त था। वह छोटेपन से ही द्वादश मंत्र का जाप करने लगा था। उसका यह मंत्र था– ओइम नमोः भगवते वासुदेवाय।

हिरण्यकश्यप परेशान था। वह पुत्र को बहुत समझाता लेकिन वह किसी तरह भी मानता नहीं था। हिरण्यकश्यप ने तंग आकर उसे पहाड़ से नीचे गिराया लेकिन वह मरा नहीं। उसे बहुत यतानायें दी गयीं लेकिन वह विष्णु का मंत्र ही जपता रहा।

हिरण्यकश्यप ने अपनी बहन होलिका से सहायता माँगी। इस पर

होलिका राजी हो गयी। वह बालक प्रहलाद हो गोद में लेकर उपलों की चिता पर बैठी। उसके बदन से आग निकली, मगर उस आग में वह स्वयं ही जल गयी और प्रहलाद को कुछ भी अनिष्ट नही हुआ हिरण्यकश्यप जानता था कि होलिका प्रहलाद को लेकर आग में बैठेगी तो प्रहलाद जलकर मर जाएगा और होलिका का कुछ भी नहीं होगा।

मगर ऐसा नहीं हुआ।

इसीलिए यह होलिका दहन का पर्व मनाया जाता।

कुछ लोगों का ऐसा कहना है कि यह पर्व इसलिए मनाया जाता कि इस दिन नये अनाज आग में भूने जाते हैं। यह हमारे हिन्दू त्योहारों के इतिहास में महान पर्व है। इस दिन से पुराना नया होता। ऋतु बदल जाती।

होली का त्योहार जितने हर्ष और उल्लास से मनाया जाता कोई भी त्योहार नहीं मनाया जाता। इसकी तैयारी लोग एक महीने पहले से ही करने लगते हैं।

इसी दिन पूर्णमासी होती है। इसे स्नान और दान की पूर्णिमा कहते हैं। यह समय पुण्यकाल कहलाता है।

जो लोग काशी में जाकर होलिका दहन करते, उनके लिए मोक्ष के दरवाजे अपने आप ही खुल जाते हैं।

होली के दूसरे दिन प्रातः होते ही रंग खेला जाने लगता है। लोग तरह–तरह के रंग एक दूसरे के कपड़ों पर डालते। अबीर और गुलाल का तिलक लगाते। धुलि की वन्दना की जाती इसीलिए इस दिन को धुलेंडी कहा जाता। होली का वसन्तोत्सव भी इसी दिन मनाया जाता। इसे होलिका विभूति भी कहते हैं।

तुकाराम जयन्ती :

प्रतिपदा को रंग खेला जाता। अबीर और गुलाल की बौछार होती। गायन–वादन और खुशियाँ मनाई जातीं। मगर दूज को सन्त तुकाराम जयन्ती मनाई जाती। इस दिन प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे से गले मिलता। लोग भाँति–भाँति से मेहमानों का स्वागत करते। उन्हें फल मिठाइयाँ

खिलाते। उनके इत्र लगाते। उनको पान खिलाते और मुँह का जायका शुद्ध करने के लिए छोटी इलायची देते।

जिस तरह मुस्लिम समाज में ईद की राह देखी जाती और रोजे रखे जाते, वैसे ही बहुत पहले से हम भी होली का इन्तजार करने लगते हैं। यह एक ऐसा त्योहार है कि इस दिन दुश्मन भी दोस्त बन जाता है। लोग पुरानी दुश्मनी भूल जाते हैं और एक–दूसरे से जीभर कर गले मिलते हैं।

जैसी अमीरों की होली होती है, वैसी ही गरीबों की भी होती है। कहने का तात्पर्य यह है कि होली पर सभी हर्ष और उल्लास मनाते हैं। यह त्योहार अपने साथ खुशियाँ लाता। होली के आने का मतलब होता है कि वह अपने साथ रंगों की बहार लेकर आती। खुशियाँ इतनी लातीं कि किसी की भी झोली खाली नहीं रह जाती। इसी दूज को उत्तर भारत में उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और बिहार के क्षेत्रों में बहन भाई के तिलक लगातीं। उसे खाने के लिए मिठाई देतीं। भाई इसके बदले में उसे धन देता। यह दूज का त्योहार दीपावली की भैया दूज की त्योहार की भाँति ही मनाया जाता है।

13

गुड फ्राइडे :

होली के बाद जो पहला शुक्रवार आता है, उसे गुड फ्राइडे कहते हैं। यह त्योहार पूरे संसार में बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जाता। इसका अपने में बहुत बड़ा महत्त्व है। कहा जाता है कि इसी दिन ईसा मसीह को सलीब पर चढ़ाया गया था।

इस दिन संसार के प्रत्येक गिरजा–घर को सजाया जाता है। वहाँ प्रातः से लेकर सारी रात तक भीड़ लगती रहती। फादर जिसे पादरी कहते हैं, वह प्रवचन देता, प्रार्थना करता। जनता भी उसके शब्दों को श्रद्धापूर्वक दोहराती है।

इसी दिन महात्मा ईसा शहीद हुए थे। उन्होंने अपना वध करने वालों के लिए ईश्वर से क्षमा माँगी थी। उन्होंने दुनिया के मालिक से प्रार्थना की थे कि ये लाग नसमझ हैं। ये सरकार के नौकर हैं। इनका कोई दोष नहीं है। ये अपने कर्तव्य का पालन कर रहे हैं।

यह त्योहार यद्यपि दुख का होता, लेकिन फिर भी इसमें खुशियाँ मनाई जाती हैं। केवल बाजार खुला रहता और सभी सरकारी तथा निजी कार्यालय बन्द रहते। कहीं भी कोई काम नहीं होता।

गुड फ्राइडे के महान पर्व पर घर में मेहमान भी आते। उनका स्वागत किया जाता। उनको जलपान कराया जाता और उनका मुँह मीठा कराया जाता।

गुड फ्राइडे की छुट्टी पूरे विश्व में रहती है। कोई भी ऐसा देश नहीं है जहाँ गुड फ्राइडे मनाया न जाता हो।

रंग पंचमी :

होली के पाँचवें दिन चैत्र कृष्ण पक्ष की पंचमी को रंग पंचमी का पर्व मनाया जाता है। इस दिन सब लोग आपस में होली खेलते। एक दूसरे पर रंग डालते। खुशियां मनाते। परस्पर एक दूसरे से गले मिलते। मिठाई खाते और खिलाते। होली के गीतों का समाँ बँध जाता। बाजे बजते और लोग उछल–उछलकर रंग खेलते।

ईस्टर सैटरडे :

गुड फ्राइडे के बाद दूसरा दिन शनिवार होता। यह ईसाइयों का सब से बड़ा त्यौहार कहलाता है। इसे ईस्टर सैटरडे कहते। इस दिन भी गिरजाघरों को सजाया जाता। उनमें सवेरे से लेकर और पूरी रात भर प्रार्थनायें होती। सभा होती और फादर अपना व्याख्यान देता।

गिरजाघर के पादरी को बहुत ही पवित्र और ईश्वर का दूसरा रुप माना जाता है। इसीलिए उसे फादर कहकर सम्बोधित किया जाता और उसके प्रति श्रद्धा की जाती।

शीतला सप्तमी :

यह सप्तमी का व्रत चैत्र कृष्ण पक्ष की सप्तमी को मनाया जाता है। इस दिन देवी की पूजा होती। बासी भोजन किया जाता। श्रद्धालु नारियाँ व्रत रखतीं। इसे कालाष्टमी भी कहा जाता है।

जैनियों का अष्ट का वर्षी तप आरम्भ होता है। इसीलिए यह जैन समाज का भी एक विशेष पर्व है।

ईस्टर सण्डे :

गुड फ्राइडे के बाद तीसरे दिन जो इतवार आता है, उसी दिन पूरे संसार में ईस्टर सण्डे का त्योहार मनाया जाता है।

इस दिन संसार के प्रत्येक गिरजाघर में खुशियाँ मनाई जातीं। जो

प्रार्थनायें की जातीं उनमें दुख का नाम नहीं होता। कहा जाता है कि जब गुड फ्राइडे के दिन ईसा मसीह को सलीब पर चढ़ाया दिया तो इतवार को वे फिर जीवित हो गये। इसीलिए इस शुभ दिन को ईस्टर सण्डे कहते हैं।

इस दिन गिरजाघरों में गाने –बजाने का आयोजन होता। गिरजाघरों को फूलों से सजाया जाता। महात्मा ईसा को सुगन्धित पुष्पों की बड़ी–बड़ी मालायें पहनाई जातीं।

इसी तरह गिरजाघर का पादरी भी फूल और मालाओं से लद जाता।

व्रत स्मार्त :

वैसे तो यह व्रत पाप–मोचिनी एकादशी का है और चैत्र महीने की एकादशी को मनाया जाता है। लेकिन इस दिन एक दूसरा व्रत है जिसे स्मार्त कहा जाता। उस व्रत को भी मनाया जाता। उसके लिए उपवास किया जाता। यह व्रत हमारे हिन्दू समाज में सुख और सौभाग्य का प्रतीक है।

केदार दर्शन :

चैत्र महीने कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी को केदार व्रत किया जाता है। इस दिन केदार–नाथ के दर्शन करने से एक बहुत बड़े पुण्य की प्राप्ति होती है। इस दिन शंकर जी की पूजा होती और उनका व्रत किया जाता है। इस दिन जो श्रद्धालु शिवलिंग पर गाय का दूध चढ़ाता, गंगाजल से शिवलिंग को नहलाता, उस पर धतूरे के फल, कमल के फूल और बेल पत्र चढ़ाता उसे लम्बी उम्र मिलती और वह जीवन भर सुखी रहता है।

इस व्रत का महत्त्व शिवरात्रि से कहीं अधिक है। इस दिन लोग पवित्र नदियों में स्नान करते। दान देते, धर्म–कर्म करते। ब्राह्मण और गुरु को दान देते, गौ–सेवा करते।

श्राद्धदि की दर्श अमावस्या :

चैत्र महीने की यह अमावस अपने में बहुत ही अधिक महत्त्वपूर्ण

होती है। इसी दिन से नया संवत आरम्भ होता है इस दिन नया और पुराना अनाज मिलाया जाता है। इसी दिन पंडित घर–घर में जाकर संवत पढ़ता है। वह बतलाता कि इस वर्ष का राजा कौना–सा देवता है और उससे प्रजा का क्या लाभ होगा ?

वही पंडित यह भी बतलाता कि इस वर्ष मंत्री कौन है ?

पंडित बतलाता है कि इस वर्ष फसल कैसी होगी। अनाज खूब होगा या कम ? वह महँगा बिकेगा या सस्ता ?

इसी तरह धान्येश देवता कौन है ? यह धान्येश का स्वामी गेहूँ, सरसों, तिलहन, घी और दूध का स्वामी होता है। वह यह भी बतलाता कि वर्षा इस साल कम होगी या बहुत अच्छी, गर्मी की अधिकता होगी या मौसम अनुकूल जाएगा ?

यही पंडित बतलाता है कि साल मे होष कौन है ? यह मेधेष मंत्री बतलाता है कि सूखा पड़ेगा या नहीं ? खेती को हानि होगी या लाभ ?

इसके बाद पंडित उस मंत्री देवता का भी नाम बतलाता है जो रसों का स्वामी होता। औषधि प्रदान करता।

उसके बाद फलेश मंत्री का वर्णन करता है कि इस साल बर्फ अधिक गिरेगी, ओलों की भी वर्षा हो सकती है। चोरी बढ़ेगी। फलों की फसल अच्छी होगी या बुरी ? फल महँगे होंगे।

श्रोतागण मुग्ध होकर सुनते। पंडित संवत का फल कहता चला जाता। वह बतलाता कि इस वर्ष का नीरसेश कौन है ? नीरसेश जौ, मटर, मूंग, बाजरा, ज्वार, कपास और मूँगफली का स्वामी होता है। नीरसेश कपड़ों के विषय में भी बतलाता देता क्योंकि कपास का भी स्वामी है। इसी तरह सभी मोटे अनाज, मेवा और चंदन के लिए भी बतलाता है।

लोग होली के बाद से ही उत्सुक दिखलाई पड़ने लगते हैं कि न जाने इस वर्ष का संवत फल क्या होगा ?

पंडित का मुँह मीठा कराया जाता। उसके चरणस्पर्श किए जाते और उसे दक्षिणा दी जाती है। उसकी पोथी की पूजा होती। उस पर अक्षत चढ़ाये जाते। रोली का तिलक लगता, दक्षिणा भी चढ़ाई जाती।

जिस समय संवत्सर का फल कहा जाता है तो घी का चिराग जलाकर रख दिया जाता है। इसे देवी का दीपक कहते और सभी लोग नतमस्तक होकर इसको प्रणाम करते।

गरीब हो या अमीर, निम्न वर्ग का हो या उच्च वर्ग का—सभी की संवत में श्रद्धा होती और सभी लोग श्रद्धापूर्वक उत्सुक होकर संवत का फल सुनते। कोई खुश होता कि इस साल पानी खूब बरसेगा और धान की फसल खूब अच्छी होगी, किसी के मुँह से सुनने को मिलता कि इस साल अनाज का उत्पादन बहुत अच्छा होगा।

वैसे तो यह संसार गुण—दोषमय है। खुशी के साथ दुख भी जुड़ा है और दोनों का जोड़ा है। जैसे आदमी में गुणों के साथ दोष का होना जरूरी है, वैसे ही अच्छे के साथ बुरा जुड़ा है, जिसे कोई भी अलग नहीं कर सकता।

कहने का मतलब यह है कि संवत्सर का फल सुनकर अधिकांश लोग प्रसन्न ही दिखलाई पड़ते। पंडित के चले जाने के बाद वे आपस मे देर तक चर्चा करते रहते कि यह साल पिछले वर्ष से अच्छा जाएगा। इस साल फल खूब होंगे। खरबूजा, तरबूज और आमों की फसल में कमी नहीं रहेंगी।

14

धनेश देवता :

पंडित संवत फल पढ़ता हुआ बतलाता है कि धनेश देवता यह है। इस साल गेहूँ कम होगा। जिनके पास पशुओं का संग्रह है, उन्हें कई गुना लाभ होगा। राजा से प्रजा को कष्ट पहुँचेगा। इसके बाद पंडित बतलाता है कि दुर्गेश मंत्री कौन है ?

वह संवत फल के विषय में बतलाता कि इस वर्ष देश में और सीमा पर युद्ध होंगे। आतंक बढ़ेगा, चोरियाँ खूब होंगी। खेती को टिड्डी दल से नुकसान पहुँचेगा और चूहे अनाज की भारी हानि करेंगे।

स्तम्भ चतुष्ट्य :

इस विषय में पंडित बतलाता है कि वर्षा कहाँ और कैसी होगी ? अनाज की फसल कैसी होगी ? सरकारी गोदामों में अनाज अधिक होगा। अनाज का निर्यात करने से लाभ होगा और आयात करने में हानि।

नाग फल :

पंडित बतलाता है कि बारह तरह के नागों में सुबुघ्न नाम का यह वर्ष है। वर्षा न अधिक होगी और न कम। फसल अच्छी होगी। सभी मनुष्यों में सद्भावना की वृद्धि होगी।

मेघ फल :

पंडित बतलाता है कि बरसात बहुत अच्छी होगी। देश में सुख और

शान्ति रहेगी। रोजगार बढ़ेंगे। उद्योग–धन्धों में वृद्धि होगी।

रोहिणी निवास :

अधिकांश लोग यह जानने के लिए उत्सुक रहते हैं कि इस वर्ष रोहिणी का निवास किस घर में है ?

पंडित बतलाता है कि इस वर्ष रोहिणी का निवास सन्धि में पड़ रहा है इसीलिए वर्षा साधारण से कुछ कम होगी, लेकिन होगी समय से और उससे खेती को अच्छा लाभ होगा।

समय निवास :

यह सबके लिए जानना जरूरी हो जाता है कि इस वर्ष समय का निवास किस घर में है? इसे मौसम भी कहा जाता है कि इस साल का मौसम किसके घर में है।

पंडित कहता कि इस साल का समय वाहन वृषभ का है। वर्षा साधारण होगी। देश में धन–धान्य की वृद्धि होगी। लोगों का किया हुआ परिश्रम सार्थक होगा, सफल रहेगा। वर्ष शुभ रहेगा। कोई भी रोग, पीड़ा और महामारी नहीं होगी।

गुर्राफल :

इस दिन से हिजरी सन् की नये साल की पहली तारीख शुरू होती है। गुर्रा का स्वामी शुक्र है। जब शुक्र गुर्रा में होता तो राजा और प्रजा में तनाव बढ़ता है। दंगे होते, युद्ध होते, झगड़ों की वृद्धि हो जाती है। अग्निकाण्ड होते। भ्रष्टाचार और व्याभिचार की वृद्धि होती।

पंडित लोगों की राशियों के अुनसार यह भी बतलाता है कि इस वर्ष इस राशि वाले को दस अंक का लाभ होगा और पन्द्रह अंक का घाटा होगा। इसलिए यह पूरे वर्ष भर घाटे में रहेगा।

और किसी राशि के लिए पंडित बतलाता कि इसको साल में बारह की आमदनी होगी और दो खर्च होंगे।

संवत्सर का फल जब जान लिया जाता तो घर–घर में आये दिन उसकी चर्चा होती रहती। जिनके ग्रह अनिष्ट होते हैं वे उन ग्रहों की

शान्ति करवाते हैं।

पंडित यह भी बतलाता कि इस वर्ष शनि किस राशि में प्रवेश करेगा और कौन–सी राशि को मुक्त करेगा।

हमारे नौ ग्रह हैं। प्रथम सूर्य। पंडित बतलाता है कि सूर्य का प्रभाव किस राशि पर सबसे अधिक रहेगा–किसको लाभ होगा, किसको हानि।

हमारा दूसरा ग्रह चन्द्रमा है। पंडित बतलाता है कि इस साल चन्द्रमा किस राशि के लिए फलदायी होगा ? जिनका चन्द्रमा अच्छा नहीं होता, वे उस दुष्ट ग्रह ही शान्ति करवाते हैं।

अब हम आ जाते हैं अपने तीसरे ग्रह पर जिसे मंगल कहते हैं। कुद लोगों का कहना है कि मंगल का दिन बहुत अच्छा होता है और कुछ का कहना है कि मंगल का दिन बहुत खराब होता है। जो लोग मंगल देवता से श्रद्धा रखते वे मंगल भगवान का पूजन करते। उन पर लाल रंग के फूल चढ़ाते। उनको बेसन के लड्डू से भोग लगाते। उन पर श्रद्धा–पूर्वक बताशे चढ़ाते। उनकी आरती करते। उन्हें षाष्टांग प्रणाम करते और श्रद्धाविभोर होकर कहने लगते–"मंगलामुखी सदा सुखी।"

मंगल अधिकांश लोगों का बहुत खराब होता और वह बड़े कष्टकारक फल देता। जिसका मंगल वक्र हो, उन्हें चाहिए कि वे उसकी शान्ति के लिए जाप करायें या स्वयं करें।

हमारा चौथा ग्रह बुध है। बुध अपने में बहुत ही सौम्य शान्त, बुद्धिमान और दयावान ग्रह है, यह मिथुन राशि का स्वामी है। और मिथुन राशि वाले अधिकांश ज्ञानी, विद्वान, लेखक, साहित्यकार, धर्मपरायण और उदार हृदय के होते हैं।

पंडित बतलाता कि इस साल बुध किस राशि में संचार करेगा ?

हमारा पाँचवाँ ग्रह है बृहस्पति। पंडित बतलाता है कि बृहस्पति इस वर्ष किसे नेष्ठ फल देगा ?

बृहस्पति देवताओं का गुरु है। बृहस्पति वक्र होता तो बहुत खराब फल देता। यह ग्रह जब उच्च का होता तो धन–धान्य की कमी नहीं रहती।

नौ ग्रहों में हमारा छठा ग्रह शुक्र है। पंडित बतलाता है कि इस वर्ष शुक्र किस राशि में संचार करेगा और किस राशि को बुरा तथा अच्छा फल देगा।

दैत्यों के गुरु का नाम शुक्राचार्य है। शुक्रवार का दिन शुक्रचार्य का होता। पंडित अपने वर्ष–फल में वर्णन करता कि शुक्र ग्रह इस वर्ष किस राशि में संचार करेगा, किसको बुरा और भला फल देगा ?

हमारा सातवाँ ग्रह शनि है। यह ग्रह बहुत अच्छा होता है। कहा जाता है कि जिसका शनि बलवान होता है वह राजा होता है। यह जिस राशि पर आ जाता उसे बर्बाद करके ही रहता। यह कम से कम एक राशि पर ढाई साल के लिए आता। और फिर जब किसी पर साढ़े सात साल के लिए आता है तो साढ़े साती शनि कहलाता है।

जिस राशि पर यह साढ़े सात साल के लिए आता उसे बुरी तरह बर्बाद कर देता है। उसके परिवार में कोई न कोई मौत अवश्य होगी। उसकी रियासत चली जाती। वह असाध्य रोग से पीड़ित हो जाता।

शनि अच्छा फल बहुत कम राशियों को देता है। वह बुरे फल का दाता है। वह सोने को लोहा कर देता, उसकी निगाह बहुत खराब है। साढ़े साती और ढइया शनि का लोग, जाप कराते हैं। इस दिन सरसों का तेल, लोहा और धन दान में देते हैं।

जितनी भी आग लगने की घटनायें होती हैं। ये सभी शनिवार को ही होतीं। इसीलिए इसे अग्नि ग्रह भी कहा जाता है। सब कुछ मिलाकर यह ग्रह अपने में अच्छा नहीं। इसे घृणा की दृष्टि से देखा जाता और हमेशा इसकी कटु अलोचना ही होती रहती।

पुराणों, शास्त्रों आदि में यह पढ़ने को मिलता है कि जब शनिश्चर की कृदृष्टि होती है तो आग में भुनी हुई मछलियाँ तालाब में कूद जाती हैं।

शनि–कोप से पीड़ित लोगों के लिए सबसे पहला उपचार यह है कि वे हनुमान जी की नित्य नियम से रोज पूजा करें पीपल पर जल चढ़ायें। पीपल के नीचे तिल और तेल का दीपक जलायें। काले घोड़े की

नाल से बनी हुई अँगूठी पहनें। शनि के मंत्र का जाप करें या पंडित से करावायें। गाय का दान करें।

इस तरह हमारे ये सात ग्रह हुए। अब आठवाँ है राहू और नौवाँ है केतु।

राहु तथा केतु की कथा पुराणों में पढ़ने को मिलती है। जिस समय दैत्यों और देवताओं ने समुद्र का मंथन किया तो उसमें अमृत से भरा हुआ अमृत कलश मिला था। देवताओं का विचार था कि यह अमृत देवताओं को पिला दिया जाए जिससे वे अमर हो जायें। इसीलिए विष्णु भगवान ने अमृत कलश अपने हाथ में पकड़ा और वे देवताओं को अमृत–पान कराने लगे।

तभी एक दैत्य देवताओं की पंक्ति में आकर बैठ गया। उसने भी अमृत का पान कर लिया। विष्णु भगवान इस मर्म को समझ नहीं पाए।

चन्द्रमा ने यह देख लिया था। उसने जाकर विष्णु भगवान से शिकायत की। सुनते ही विष्णु भगवान क्रोधित हो गये। उन्होंने अपना सुदर्शन चक्र छोड़ दिया। सुदर्शन चक्र ने जाकर उस राक्षस का सिर धड़ से अलग कर दिया। सिर का नाम केतु हो गया और धड़ को राहु कहा जाने लगा। ये दोनों चन्द्रमा के दुश्मन बन गए और उसको तरह–तरह से सताने लगे।

राहु की दशा अठारह दिन से कम की नहीं आती। यह अधिक से अधिक अठारह महीने के लिए मनुष्य पर आता है। यह आदमी के दिमाग में वास करता और उसकी बुद्धि नष्ट कर देता। यह अपने साथ रोग लाता, ऋण लाता और ऐसी समस्यायें लाता जिनका समाधान किया ही नहीं जाता।

संवत्सर के वर्ष–फल में यह देखना पड़ता है कि राहु इस साल किस राशि में संचार करेगा। उसका बुरा या भला फल क्या होगा ?

राहु की दशा कभी अच्छी नहीं होती। वह हमेशा नेष्ठ फल ही देता इसीलिए राहु की दशा चलने पर गंगा–स्नान और दान करना चाहिए। धर्म–ग्रन्थों का पाठ करना चाहिए। उसकी शान्ति के लिए उसका जाप

कराना चाहिए। यह ऐसा दुष्ट ग्रह है कि मनुष्य की बुद्धि भ्रष्ट कर देता है।

अब प्रश्न यह है कि सूर्य–ग्रहण और चन्द्र–ग्रहण क्यों होते हैं ? अमावस की दोपहर को जब राहु और केतु देखते कि सूर्य कुछ कमजोर पड़ रहा है तो दोनों उस पर आकर अचानक हमला कर देते। यही सूर्य–ग्रहण कहलाता है और इसका फल कभी अच्छा नहीं होता।

ऐसे ही पूर्णमासी की रात को जब राहु और केतु देखते कि चन्द्रमा कुछ कमजोर पड़ रहा है तो वे उस पर हावी हो जाते। चन्द्र–ग्रहण पड़ने लगता। सूर्य–ग्रहण की तरह इस चन्द्रग्रहण का भी फल कभी अच्छा नहीं होता।

राहु की दशा जिस राशि पर चलती है उस राशि का मनुष्य विवेकहीन हो जाता है। उसकी बुद्धि काम नहीं करती। वह मस्तिष्क पर सवार हो जाता है।

इसी तरह केतु है। यह केतु भी किसी के लिए अच्छा नहीं होता। यह जिस राशि पर आ जाता उस पर ग्यारह महीने से लेकर इक्कीस महीने तक रहता। यह अपने साथ पेट की बीमारी लाता। जिन लोगों का केतु खराब होता उनका पेट हमेशा खराब रहता। इसलिए इस दुष्ट ग्रह की भी शान्ति करवानी चाहिए। यह दुश्मन है और दुश्मन को कभी कमजोर नहीं समझना चाहिए।

इस तरह हमारे ये नौ ग्रह हमें अच्छा और बुरा फल दोनों देते हैं। कोई परेशान हो जाता है और कोई खुशी के गीत गाता है। भाग्य का फल पूर्व–जन्म के कर्मानुसार मिलता है। ग्रहों का फल समय और परिस्थिति के अनुसार होता है इसलिए ईश्वर को दोष कभी नहीं देना चाहिए। अपने उस देवता का पूजन और उसकी आराधना करनी चाहिए–जो आपका ईष्ट देवता हो और जिस पर आपकी अटूट श्रद्धा हो।

15

राष्ट्रीय पर्व

ईसाई नववर्षारम्भ - 1 जनवरी :

यह त्योहार केवल भारतवर्ष का ही नहीं, पूरे संसार का है। इस पर्व को सभी लोग हर्ष और उल्लास के साथ मनाते हैं।

ईसाई समाज में इस पर्व को बहुत ही आदर की दृष्टि से देखा जाता है। इस दिन खुशियाँ मनाई जातीं। लोग नये काम का आरम्भ करते हैं और उसमें उन्हें सफलता मिलती है।

रमजान और रोज़ा आरम्भ :

हम हिन्दुओं के साथ मुसलमानों के भी त्योहार उसी तरह जुड़े हुए हैं, जैसे लोटा डोर के साथ। हमारे यहाँ जैसे पितृपक्ष पूरे पन्द्रह दिन का होता है, वैसे ही मुसलमानों के यहाँ रमजान का महीना मनाया जाता। इस महीने में मुसलमान लोग सवेरे सूर्य निकलने से पहले ही नहा–धोकर तैयार हो जाते हैं। सूक्ष्माहार भी लेते। दिन भर रोजा रखते। पानी भी नहीं पीते। सूर्य डूबने के बाद ही अन्न और जल ग्रहण करते हैं। यह क्रम उनका पूरे महीने ईद तक चलता है।

जब वे ईद का चाँद देख लेते, तो सबसे पहले मस्ज़िद में जाकर नमाज पढ़ते। उसके बाद मनचाही खैरात लुटाते। यही कारण है कि रमजान महीन की जरूरत से ज्यादा इज्जत की जाती। उसे अच्छी

निगाह से देखा जाता और सारी दुनिया में उसका स्वागत होता।

मकर संक्रान्ति :

इस दिन को खिचड़ी का त्योहार कहा जाता है। इस दिन गंगा स्नान करना चाहिए। उसके बाद श्रद्धानुसार दान करना चाहिए। खिचड़ी खानी चाहिए। खिचड़ी दान करनी चाहिए, इसीलिए इस व्रत का विशेष महत्त्व है।

स्वतन्त्रता दिवस :

पन्द्रह अगस्त 1947 को हमारा देश अंग्रेजों के चंगुल से आजाद हुआ था। हम इसे स्वतन्त्रता दिवस के नाम से पुकारते हैं। पूरे देश में खुशी मनाई जाती। जुलूस निकाले जाते। उल्लास और हर्ष मनाया जाता।

लोग कहते कि सदियों से गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा हुआ हमारा भारत इसी दिन आजाद हुआ था। माता भारत भूमि के पैरों की बेड़ियाँ इसी दिन काटी गयी थीं।

16

गुड फ्राइडे :

यह त्योहार केवल भारतवर्ष का ही नहीं है, यह पूरी दुनिया में मनाया जाता है और इसका विशेष महत्त्व है।

पहले हम यह बतलाएंगे कि गुड फ्राइडे क्यों मनाया जाता है और संसार में उसका महत्त्व क्या है ?

गुड फ्राइडे को ईसा मसीह को सलीब दी गयी थी और वे वध–स्थल की ओर चले गये थे।

उन्हें कुर्सी फाइड किया गया था, लेकिन वे मरे नहीं। ईस्टर सण्डे को जिन्दा हो गये थे। इसीलिए ईस्टर सण्डे मनाया जाता है।

गुड फ्राइडे को संसार के जितने भी गिरजाघर हैं, उनको सजाया जाता। उनमें रोशनी की जाती। उनमें धूप और अगरबत्तियाँ जलाई जातीं। उनमें प्रार्थना सभायें होतीं। पादरी व्याख्यान देता, जनता सुनती। भगवान ईसा मसीह पर पुष्प–मालायें चढ़ाई जातीं।

वैशाखी :

इसी दिन सतुआ संक्रान्ति होती है। पंजाब में यह त्योहार बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जाता। इस दिन नया और पुराना अनाज एक में मिलाया जाता। एक परिवार दूसरे परिवार से मिलने जाता, भांगड़ा नृत्य होता। घरों में खुशियाँ मनाई जातीं। पकवान बनाकर खाये जाते।

डॉ॰ अम्बेडकर जयन्ती :

वैसे तो यह एक जयन्ती है और हर साल मनाई जाती है। लेकिन यह हमारा राष्ट्रीय त्योहार है, पर्व है इसीलिए हम इसे हर्ष और उल्लास के साथ मनाते हैं।

हर साल 14 अप्रैल को पूरे भारतवर्ष में अम्बेडकर जयन्ती मनाई जाती है। इसी दिन उस महामानव का जन्म हुआ था। यह अम्बेडकर हैं जिसने स्वतन्त्र भारत के संविधान का निर्माण किया था। 26 दिसम्बर सन् 1950 को हमारे नये संविधान का उद्घाटन हुआ था।

इसीलिए इस दिन को हम गणतन्त्र दिवस कहते हैं। यह प्रत्येक वर्ष 26 दिसम्बर को धूमधाम से मनाया जाता है।

राजधानी दिल्ली में सवेरे छः बजे से लेकर नौ बजे तक तीनों सेनायें परेड करतीं। वे राष्ट्रपति को सलामी देतीं।

इनमें वायुसेना, थलसेना और जलसेना होती। हमारी शक्ति यही है। पूरे देश की ताकत यही है, हम सौभाग्यशाली हैं कि हमारी तीनों सेनायें अपने में सक्षम हैं।

रामनवमी :

इस पर्व को हम सबसे पहले राष्ट्रीय पर्व कहेंगे। यह त्रेतायुग का प्रतीक है। जब लोग मर्यादा की पूजा करते थे। इसी त्रेतायुग में भगवान रामचन्द्र जी, जो मर्यादा पुरुषोत्तम थे, का जन्म हुआ था।

चैत्र महीने के शुक्ल पक्ष की नवमी को भगवान श्री रामचन्द्र जी का जन्म हुआ था। इन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम कहा जाता है। इस दिन दुर्गा कर पूजा होती है।

बकरीद :

यह मुस्लिम त्योहार है। इसका दूसरा नाम नमकीन ईद है।

मुसलमानों की पहली ईद, जिसे मीठी ईद कहते हैं रमजान महीने के खत्म होने के बाद आती है। तीस दिन तक रोजे रखे जाते। उसके बाद यह मीठी ईद आती है।

इसमें हर घर में मेहमान मिलने आते और उन्हें मीठी सेवईं खिलायी जातीं। ईद मिलन होती। मुस्लिम समाज में कोई भी ऐसा नहीं होता कि जो ईदगाह में जाकर नमाज न पढ़े।

मेहमानों को पान खिलाये जाते। इलायची दी जाती। उनसे गले मिला जाता। उन्हें तोहफे भी भेंट किए जाते और उनसे तोहफे लिए भी जाते।

ईद का त्योहार केवल हिन्दुस्तान में ही नहीं, मुसलमानों के नवदेशों में खूब धूमधाम के साथ मनाया जाता है।

ईद सबसे बड़ा त्योहार है और बकरीद छोटा। पूरे संसार में मुसलमानों के नौ देश हैं। इन देशों में यह त्योहार हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाता है। भारतवर्ष में मुसलमानी त्योहार उसी तरह मनाये जाते जैसे हम अपने हिन्दू त्योहारों को मनाते हैं। भारत हिन्दू और मुसलमानों का सम्मिलित देश है और हम दोनों आपस में भाई–भाई हैं।

बकरीद को नमकीन ईद कहा जाता है। इस दिन सवेरे नमाज पढ़ने से पहले बकरे की बलि दी जाती है। फिर उसका गोश्त प्रसाद के रूप में सबको वितरित किया जाता।

दिल्ली की जामा मस्जिद में देश के कोने–कोने से लोग नमाज पढ़ने आते। लाल किले के मैदान में बसों की छवि देखते ही बनती। जामा मस्ज़िद से लेकर फतेहपुरी की मस्जिद तक सैकड़ों हजारों की संख्या में मुसलमान नमाज पढ़ने आते। किसी के सिर पर टोपी होती और कोई रूमाल से ही अपने सिर को मण्डित कर लेता।

17

बकरीद :

मीठी ईद के बाद जिसे हम नमकीन ईद कहते, यह दो महीने बाद आती। यह बड़े धूमधाम से मनाई जाती। इस दिन भी लोग एक–दूसरे से गले मिलते और ईद की मुबारकबाद देते। जब मुगलों का जमाना था, तब दिल्ली की जामा मस्ज़िद पर गाय की कुर्बानी दी जाती थी। लेकिन फिर यह प्रथा बन्द हो गयी और भेड़े की कुर्बानी दी जाने लगी।

इस दिन सैकड़ों, हजारों और लाखों बकरे काटे जाते हैं। हर मुसलमान के घर में बकरे का गोश्त बनता, जिसे मेहमानों को खिलाया जाता है।

बकरीद बहुत ही महत्त्वपूर्ण त्योहार है और इस दिन प्रत्येक मुसलमान परिवार में बकरे का गोश्त खाया जाता है।

महावीर जयन्ती :

यह जैनियों का विशेष पर्व है। इसी दिन भगवान महावीर का जन्म हुआ था। इसीलिए पूरे देश में महावीर जयन्ती पूरे धूमधाम के साथ मनाईं जाती है। महावीर स्वामी का जुलूस निकलता जो बहुत लम्बा होता है।

मोहर्रम :

यह मुसलमानों का एक पौराणिक त्योहार है। इसे लगातार कई दिन तक मनाया जाता है। इस त्योहार पर मुसलमान लोग हरे रंग के

कपड़े पहनते। औरतें हरी चूड़ियाँ पहनतीं। जिस दिन कत्ल की रात होती उस दिन मुसलमान औरतें, अपनी हरी चूड़ियाँ करबला में जाकर तोड़ देतीं, जहाँ ताजिए दफनाये जाते हैं। यह त्योहार मुसलमानों का वैसा ही है जैसा हमारे हिन्दू समाज में रामलीला।

रथ-यात्रा :

यह त्योहार पूरे देश में मनाया जाता है। जगन्नाथ पुरी में इस दिन रथ–यात्रा निकलती है। इस तरह प्रत्येक नगर तथा देश में यह समारोह मनाया जाता। जुलूस निकलते। बाजे बजते। चने की दाल प्रसाद में दी जाती है।

यह रथ–यात्रा हमारा एक राष्ट्रीय पर्व है इसीलिए इस दिन पूरे देश में अवकाश रहता है।

वारावफात :

यह मुस्लिम समाज का बहुत बड़ा त्योहार है। इस दिन मस्जिदों में अजान होती। रोशनी की जाती। भूखों को भोजन कराया जाता। यह एक ऐसा राष्ट्रीय पर्व है जो कई सदियों से बराबर मनाया जाता रहा है।

स्वतन्त्रता दिवस :

15 अगस्त, सन् 1947 ई॰ से यह राष्ट्रीय पर्व प्रतिवर्ष मनाया जाता है। इसी दिन हमारा भारत, जो सदियों से गुलाम था, आजाद हुआ। इस दिन प्रातः से ही राष्ट्र–गीत गाये जाते। झण्डा–रोहण होता।

रक्षा-बन्धन :

रक्षा–बन्धन सामाजिक त्योहार होने के साथ ही साथ राष्ट्रीय पर्व भी कहलाता है। इसका विशेष महत्त्व है। यह त्योहार देश के कोने–कोने में मनाया जाता है। भारत के अलावा न जाने कितने ऐसे राष्ट्र हैं जो रक्षा–बन्धन का त्योहार मनाते हैं।

दूर–दूर से बहनें अपने भाई के हाथ पर राखी बाँधने आती हैं। जो बहन भाई तक पहुँच नहीं सकती और मजबूर होती वह उसे राखी भेजती है और साथ ही तिलक भी।

कृष्ण जन्माष्टमी :

यद्यपि यह त्योहार धार्मिक है, सामाजिक है और पौराणिक है लेकिन इसे राष्ट्रीय पर्व की संज्ञा दी जाती है और इस दिन पूरे देश में अवकाश मनाया जाता।

दिन भर लोग भजन–कीर्तन करते। आधी रात तक, जब तक भगवान श्रीकृष्ण जी का जन्म नहीं हो जाता, लोग भजन और कीर्तन में ही लगे रहते हैं। भगवान का जन्म होने के बाद पंचामृत बाँटा जाता। प्रसाद का भी वितरण किया जाता।

विश्वकर्मा पूजा :

कृष्ण जन्माष्टमी के बाद विश्वकर्मा की पूजा होती है। विश्वकर्मा भगवान को विष्णु भगवान का ही रूप माना जाता। विश्वकर्मा मन्दिर में पूजन का आयोजन किया जाता। यह पूजन इसलिए किया जाता है कि रोग–दोष और दुख दूर हों। मनुष्य अपने कर्म–क्षेत्र में कमर कस कर कूद पड़े। उसकी राह के काँटे फूल बनें। उसकी जिन्दगी हँसती और मुस्कराती रहे। यह इस व्रत का विशेष फल होता है।

18

पितृ-विसर्जन :

क्वार मास की अमावस्या को पितृ विसर्जन होता है। इस दिन सरकारी और गैर सरकारी सभी कार्यालय बन्द रहते। यह त्योहार बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। जिन लोगों को अपने पितरों के मरने की तिथि मालूम नहीं होती वे इसी दिन अपने पितरों का श्राद्ध करते हैं। उन्हें पिण्ड–दान करते। ब्राह्मणों को भोजन करवाते।

दोपहर के बाद तीसरे पहर पितृ विसर्जन कर दिया जाता। पितृ विसर्जन पवित्र नदी या सरोवर में किया जाता।

इसके लिए एक बहुत पुरानी कहावत है कि आधी रोटी कौर बड़ा। जाओ पितर देव अपने घर।

जो लोग पूरे पितृ पक्ष भर दाढ़ी नहीं बनवाते, बाल नहीं कटवाते, नाखून नहीं बनवाते, वे सब इसी दिन क्षौर–कर्म करवाते हैं।

यह पखवाड़ा अनन्त चतुर्दश की भादों की पूर्णिमा से शुरू होता है। इस समय को खोटे दिन कहा जाता और इस बीच में कोई भी शुभ कार्य नहीं किया जाता।

कहा जाता है कि जिसकी मृत्यु पितृ पक्ष में होती है, वह सीधा स्वर्ग को जाता है। उसके लिए स्वर्ग के दरवाजे खुले मिलते।

वह मनुष्य सीधा बैकुण्ठ को जाता। उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है।

नवरात्रि आरम्भ :

चैत्र के महीने में नवरात्र होते हैं। वैसे ही क्वार के महीने में पितृ विसर्जन के दूसरे ही दिन से नवरात्र आरम्भ हो जाते हैं। इस दिन प्रत्येक घर में कलश की स्थापना होती। देवी का व्रत किया जाता।

दुर्गा अष्टमी :

क्वार महीने के शुक्ल पक्ष में जो अष्टमी पड़ती है उसे दुर्गा अष्टमी कहा जाता। इस दिन श्रद्धालु पुरुष और स्त्रियाँ व्रत रखते। देवी का पूजन करते, उपवास रखते, नारियल फोड़ते, देवी का भोग लगाते और उनकी आरती भी करते।

विजया दशमी :

विजया दशमी को क्वार के महीने का दशहरा कहा जाता है। इस दिन पूरे देश में सभी संस्थान बन्द रहते हैं। इस दिन रामलीला समाप्त होती और रावण का पुतला जलाया जाता है।

कहा जाता है कि यह त्योहार इस उपलक्ष में मनाया जाता कि इसी दिन मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी ने रावण का वध किया था।

यह दिन बहुत ही पवित्र माना जाता। यह तिथि भी बहुत ही पुनीत कही जाती। इस दिन अन्नप्राशन, मुण्डन और विद्या आरम्भ करने का मुहूर्त मनाया जाता। व्यापारी वर्ग अपने बहीखातों और बस्ते का पूजन करते हैं।

इस दिन जिस काम का श्रीगणेश किया जाता, उसमें पूरी सफलता मिलती है।

भरत मिलाप :

हमारे देश में कोई भी प्रदेश ऐसा नहीं है जहाँ दशहरे के दूसरे दिन भरत मिलाप न होता हो।

यह वह भरत मिलाप होता है जो रामचन्द्र जी के वन से लौटने के चौदह साल बाद अयोध्या में हुआ था। यह तिथि अपने में पवित्र मानी जाती और पुनीत कही जाती है।

शरद पूर्णिमा :

शरद पूर्णिमा क्वार के महीने की पूर्णमासी को होती है। यह तिथि भी बहुत ही पावन मानी जाती और इस दिन शुभ कार्य सम्पादित किए जाते हैं।

इस पूर्णमासी के लिए कहा जाता है कि इस दिन चन्द्रमा अपनी पूरी सोलह कलाओं के साथ निकलता। अर्धरात्रि के बाद उससे अमृत की वर्षा होती है। इस रात को खीर बनाकर चाँदनी रात में रख दी जाती। सवेरे उसे परिवार के लोग बड़े चाव और खुशी से खाते हैं।

शरद पूर्णिमा का पूरे देश में महत्त्व है। इसी दिन से वर्षा ऋतु का अन्त होता और शरद ऋतु आरम्भ होती है। खंजन पक्षी इसी ऋतु में आता है। नदी, नालों और तालाबों का जल स्वच्छ तथा निर्मल हो जाता। इसी पूर्णिमा के बाद ही रबी की फसल बोई जाती है। खेतों में हल चलते और किसान खुशी के गीत गाते हैं।

गाँधी जयन्ती :

गाँधी जयन्ती का राष्ट्रीय पर्व पूरे देश में हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाता। इसी दिन महात्मा गाँधी का जन्म हुआ था, जिन्हें हमारा राष्ट्रपति कहा जाता और बापू कहकर सम्बोधित किया जाता है। वे अजानबाहु थे। अजानबाहु उसे कहा जाता है, जिसके दोनों हाथों की अंगुलियाँ घुटनों को छू लें। महात्मा गाँधी अजानबाहु थे, यह सारा विश्व जानता है। ऐसा व्यक्ति अपने में विशेष और विलक्षण होता है।

वे कोटिबाहु थे। कोटिबाहु का अर्थ यह हुआ कि उनके हजार हाथ थे। हजार हाथों का तात्पर्य यह है कि जो काम एक हजार हाथ मिलकर करते, उसे महात्मा गाँधी अकेले ही कर लेते थे।

वे कोटिडग थे। इसका अर्थ यह हुआ कि वे जिस राह पर चलते थे उस पर करोड़ों लोग अपने आप ही चल पड़ते थे।

वे महामानव थे। इसका मतलब यह हुआ कि वे मनुष्यों में सर्वश्रेष्ठ थे। वे अहिंसा के पुजारी थे, सत्य वक्ता थे और सहनशील थे।

गाँधी जी का कथन था और यही उनका उपदेश था कि विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करो। स्वदेशी अपनाओ। उन्हें चर्खा प्यारा था। वे अपने हाथ से सूत कातते। वे खादी के वस्त्र बुनते भी थे और खादी ही धारण भी करते थे।

गाँधी जयन्ती से लेकर पूरे सप्ताह भर हर खादी भण्डार में खादी के वस्त्र खरीदने वालों की भीड़ लगी रहती है।

खादी केवल सूती ही नहीं, रेशमी और ऊनी भी आती है। जो गाँधी जी के भक्त होते वे खादी खरीदते, खादी पहनते। खादी का प्रचार करते। वे चरखा चलाते और सूत भी कातते हैं।

केवल भारतवर्ष में ही नहीं, संसार के न जाने कितने देशों में गाँधी जयन्ती का पर्व मनाया जाता।

गाँधी जयन्ती पर महात्मा गाँधी के चित्र को माला पहनाई जाती। अगरबत्तियाँ लगाई जातीं। पुष्पांजलि अर्पित की जातीं, उनकी धुन मग्न होकर गायी जाती–''रघुपति राघव राजा राम।

पतित पावन सीता राम।''

'हे राम'–बापू का ईश्वर के लिए एक बहुत ही मधुर सम्बोधन था। राजधानी दिल्ली में जो उनकी समाधि बनी है उस पर 'हे राम' लिखा है। मृत्यु के पहले उनके मुँह से 'हे राम' ही निकला था।

दीपावली :

दीपावली एक ऐसा त्योहार है जिसे होली से भी बड़ा माना जाता है और यह पूरे देश में खुशी के साथ मनाया जाता।

कार्तिक महीने के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी को धनतेरस का पर्व मनाया जाता। इस दिन बाजार खूब सजते। मिट्टी के खिलौने और बर्तन खूब बिकते। लोग पीतल, गिलट, और चाँदी के बर्तन खरीदते हैं।

आदिकाल की वाणी आज भी मुखरित की जा रही है कि उसी दिन से लक्ष्मी घर में प्रवेश करती है।

धनतेरस के बाद दूसरा दिन होता नरक चतुर्दशी का। आज के दिन नहाने से मनुष्य और घर का सारा नर्क दूर हो जाता है। इस तिथि

को छोटी दीपावली भी कहा जाता है। छोटी दीपावली को मिट्टी का दीपक बनाया जाता। उसमें सरसों का तेल भर दिया जाता, फिर रुई की बाती डाल दी जाती, और वह दीपक घर के आँगन में मोरी पर रख दिया जाता।

कहा जाता है कि यह नर्क स्थान है, दीपक रखने से पवित्र हो जाएगा। फिर इस रास्ते से लक्ष्मी आएगी और वह घर में प्रवेश करेगी।

कुछ लोग इस नरक चतुर्दशी के मिट्टी के दीपक को घर के बाहर चबूतरे पर रख देते। वैसे तो यह शुभ है और ऐसा करना भी चाहिए लेकिन इसमें सबसे बड़ा खतरा यह रहता है कि जुआरी लोग इस नरक चतुर्दशी के दीपक को चुरा ले जाते। वे इसे अपने दाहिनी जेब में डालकर बैठते तो उनकी जुए में हार कभी नहीं होती।

जिस घर का नरक चतुर्दशी को चोरी चला जाता उसके लिए कहा जाता है कि वह भाग्यहीन हो गया और उसके घर में लक्ष्मी नहीं आएगी।

दीपावली तीसरे दिन होती। इसे बड़ी दीवाली कहते हैं। इस दिन गणेश और लक्ष्मी का पूजन होता। खील और खिलौनों से दोनों देवताओं का भोग लगाया जाता। अगरबत्तियाँ, मोमबत्तियाँ तेल की दियालियाँ और घी के दीपक जलाये जाते हैं।

सारी रात रोशनी रहती। प्रत्येक परिवार में गणेश तथा लक्ष्मी का पूजन होता है। लोग कहते हैं कि आज की रात में सोना नहीं चाहिए। इससे लक्ष्मी आकर चली जाती है। इसी तरह दीपावली की रात में जो लोग जुआ खेलते उनसे लक्ष्मी रुठ जाती है।

दीपावली के दूसरे दिन अन्नकूट होता। इसी दिन घर में गोवर्धन गोबर के बनाये जाते और उनकी पूजा की जाती। इस दिन हर जगह छुट्टी होती। कोई भी कार्यालय नहीं खुलता।

अन्नकूट के दूसरे दिन भइया दूइज का त्योहार मनाया जाता। इस दिन बहनें अपने भाई के माथे पर तिलक लगातीं। बहन भाई को मिठाई खिलातीं और भाई उसे दक्षिण के रूप में द्रव्य देता।

एक दिन जो भाई और बहन आपस में गाँठ जोड़ कर युमना नदी

में स्नान करते वे मरने के बाद यमलोक नहीं जाते। उन्हें मोक्ष की प्राप्ति होती। इसीलिए इसे यम द्वितीया भी कहा जाता है।

इस दिन प्रातः से लेकर रात तक बस्ती में पूरी चहल–पहल बनी रहती। बहनें भाई के घर जातीं। भाई बहन के यहाँ तिलक लगवाने जाता। जो बहनें दूर होती हैं वे भाई के लिए डाक द्वारा तिलक भेजतीं।

इसके बाद दीपावली का त्योहार समाप्त हो जाता है।

दीपावली के बाद देवष्ठानी एकादशी को भी अधिकांश छुट्टी रहती। श्रद्धालु लोग इस प्रबोधिनी एकादशी को व्रत रखते। विष्णु भगवान की पूजा करते। गन्ने तोड़ते। उन्हें भगवान पर चढ़ाते और चूसते भी।

गुरु नानक जयन्ती :

प्रबोधिनी एकादशी के बाद कार्तिक एकादशी को कार्तिकी स्नान की एकादशी होती। यह एक राष्ट्रीय पर्व है और प्रत्येक वर्ष बड़े हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाता। इस दिन लोग गंगा में स्नान करते। जिन्हें गंगा प्राप्त नहीं हो पाती वे किसी भी नदी में नहाते या सरोवर में स्नान करते हैं।

इसी दिन तुलसी की पूजा होती। इसी दिन सिक्खों के पहले गुरु नानक देव का जन्म तलवंडी में हुआ था। उन्होंने नानक पंथ चलाया था। उन्होंने जनता को ज्ञान का उपदेश दिया। इसीलिए उनकी जयन्ती मनाई जाती। उनका जुलूस निकाला जाता। उस जुलूस में भक्तों को प्रसाद बाँटा जाता। इस प्रसाद में रोटी उबले चने और हलुआ होता।

कार्तिकी का मेला हर नदी के तट पर लगता।

कार्तिकी पूर्णिमा के दूसरे दिन प्रतिस्पदा होती है। इस दिन हर नदी के किनारे खिचड़ी का मेला लगता। कहा जाता कि इस प्रतिपदा को जो गंगा के किनारे उपलों पर उड़द की दाल की खिचड़ी मिट्टी की हाँडी में पका कर खाता, उसकी अकाल–मृत्यु नहीं होती और मरने के बाद उसे मोक्ष प्राप्त होता है।

19

स्थायी छुट्टियाँ और राष्ट्रीय पर्व :

इतवार एक ऐसा दिन है कि इस दिन संसार के सभी कार्यालय शिक्षण संस्थायें और गैर सरकारी कार्यालय भी बन्द रहते हैं। यह छुट्टी एक लम्बे समय से चली आ रही है। इसे अंग्रेजी में सण्डे और हिन्दी में रविवार, उर्दू में इतवार कहते हैं।

रवि का अर्थ है सूर्य। उर्दू में सूरज को आफताब कहते हैं। ऐसा कोई भी व्रत और त्योहार नहीं जिसमें सूर्य की पूजा न होती हो। इतवार को अधिकांश भक्तजन सूर्य भगवान का व्रत करते हैं। भजन करते और फिर सूरज का व्रत करके ही अन्न तथा जल ग्रहण करते।

भैरवाष्टामी :

इस भैरवाष्टमी को भैरव जी का पूजन किया जाता। उनका व्रत किया जाता। इसी दिन श्री महाकाल भैरव जी की जयन्ती भी मनाई जाती है। इस दिन लोग भैरव भगवान का दर्शन करते और श्रद्धापूर्वक उनका भजन करते।

गुरु ग्रन्थ साहब का वार्षिकोत्सव :

अगहन शुक्ल पक्ष ही त्रयोदशी को गुरु ग्रन्थ साहब का वार्षिकोत्सव मनाया जाता है।

इसी दिन—पिशाच मोचन का श्राद्ध होता और लोग खुशियाँ ही

खुशियाँ मनाते हैं।

बड़ा दिन :

25 दिसम्बर को बड़ा दिन मनाया जाता है। इसी दिन महात्मा ईसा का जन्म हुआ था।

हम पहले ही कह चुके हैं कि संसार में सबसे अधिक आबादी यहूदियों की है। ये यहूदी ही अंग्रेज हैं, ईसाई हैं और क्रिश्चयन हैं। ये सब बड़ी निष्ठा और भावना से इस त्योहार को मनाते हैं और इसे क्रिसमस डे कहते हैं। ईसाई लोग नये कपड़े पहनते और अपने रिश्तेदार तथा मित्रों से मिलने जाते। घर पर जो मेहमान आते वे ह्रदय से उनका स्वागत करते। लगभग एक सप्ताह तक यह त्योहार मनाया जाता।

यह उल्लास का पर्व है। इसमें खुशी छाई रहती और लोगों का अधिकांश समय आमोद–प्रमोद में ही व्यतीत होता है।

इसी दिन महामना पंडित मदन–मोहन मालवीय की जयन्ती भी मनाई जाती है। इसी दिन सफला एकादशी का व्रत किया जाता और कहा जाता कि जो लोग सफला एकादशी को व्रत रखते, उनके सभी कार्य सफल होते हैं।

न्यू ईयर ईव :

यह भी एक राष्ट्रीय पर्व है। इस दिन चन्द्रमा के दर्शन किए जाते। यह ईसाई नव वर्ष की संध्या कही जाती है। यह दिन बड़े महत्त्व का होता और ईसाई समाज में इसे बहुत ही शुभ दिन कहा जाता है।

20

ईसाई समाज का नया साल :

जिस चैत्र महीने की अमावस्या के बाद संवत्सर आता है और विक्रमी संवत बदलता है ठीक वैसे ही एक जनवरी से नया साल शुरू होता है।

विक्रमी संवत् तो केवल भारतवर्ष में ही चलता है और यहाँ के लोग ही उसे जानते हैं। कहना यह चाहिए कि पूरे भारतवर्ष के लोग विक्रमी संवत् को नहीं जानते। दक्षिण भारत का समाज अलग है। पूरब का देश अपनी अलग कहानी कहता है। उत्तर में पंजाबी हैं, मुसलमान हैं। ये ईसवी जानते हैं जिसे ईसा का संवत् कहा जाता है। ये हिजरी जानते हैं जो मुसलमानों का अपना एक अलग संवत् होता है।

एक जनवरी का दिन पूरे संसार का एक बहुत बड़ा त्योहार होता है। लोग घरों में रंगीन झण्डियाँ लगाते, रंगीन गुब्बारों से उसे सजाते। बच्चे खुशियाँ मनाते और बड़े भी कहते कि "हैप्पी न्यू ईयर टू यू।"

इसलिए एक जनवरी पूरे संसार का एक बहुत बड़ा त्योहार है। लोग सवेरे जब सोकर उठते तो आपस में एक–दूसरे से हँसते हुए कहते कि अरे भाई, सोये तो थे हम सन् 1996 की रात में और सवेरे जागे तो 1997 है। हम साल भर तक सोते ही रहे।

इस तरह लोग आपस में आमोद–प्रमोद करते। अपने दोस्तों और रिश्तेदारों को ग्रीटिंग कार्ड भेजते।

शबेरात :

यह मुस्लिम समाज का एक बहुत बड़ा त्योहार है। इस दिन सड़कों पर, दरवाजों पर और घरों पर खूब रोशनी की जाती। और वह सारी रात रहती है।

इस रात को मुशायरे भी होते जिनको हम अपनी भाषा में कवि सम्मेलन कहते हैं। गज़लें गाईं जातीं। कव्वालियाँ भी खूब होतीं। कहीं औरतों की दो टोलियाँ आमने–सामने बैठ जातीं। ढोलक बजती, हारमोनियम के स्वर बुलन्द होते। तबला ठनठनाता और मंजीरा भी बजता।

इसी तरह कव्वाली में कहीं दोनों ओर मर्दों की टोली बैठती। कहीं–कहीं ऐसा होता कि एक ओर जवानों की टोली बैठती और दूसरी तरफ औरतें तथा लड़कियाँ बैठतीं। वे खुले गले से गातीं–"आहें न भरीं, शिकवे न किए। कुछ भी न जुबाँ से काम लिया।"

रमजान रोज़ा शुरू :

इसी दिन से रमजान का महीना आरम्भ होता है। यह पूरे तीस दिन मनाया जाता। यह महीने के शुक्ल पक्ष की दूज से शुरू होता है। उसी दिन मुसलमान लोग चाँद देखते और अपना त्योहार शुरू कर देते। इसके ठीक एक महीने बाद जब शुक्ल पक्ष की दूज का चाँद देखा जाता तो उसी दिन ईद मनाई जाती।

रोज़ा का नियम यह होता है कि सवेरे तीन बजे मुसलमान स्त्री और पुरुष उठ जाते। शौचादि से निवृत्त होने के बाद वे कपड़े बदलते, फिर खुदा की इबादत करते जिसे नमाज़ कहा जाता है।

नमाज़ अदा करने के बाद फिर ये सब लोग ताजा बना कर खाना खाते।

इसके बाद फिर जब तक सूरज डूब नहीं जाता, ये पानी भी नहीं पीते। इसके बाद रात की नमाज पढ़ते। फिर रोज़ा खोलते। इसे ही रोज़ा अफरात कहा जाता है।

इस समय भी ये लोग ताजा खाना खाते।

रमजान जुम्मा :

इस रमजान के महीने में जो सबसे पहला शुक्रवार पड़ता है, उसे रमजान का पहला जुम्मा कहा जाता। इस दिन सबेरे और शाम की नमाज मस्ज़िद में जाकर पढ़ी जाती है। इसके लिए हर मस्ज़िद में विशेष प्रबन्ध किया जाता। फिर भी जिन लोगों को मस्ज़िद में बैठकर नमाज अदा करने की जगह नहीं मिलती वे मस्ज़िद के बाहर सड़क पर बैठ कर नमाज अदा करते।

यह मुसलमानों का एक बहुत बड़ा त्योहार होता। जैसे रमजान का पहला जुम्मा मनाया जाता। ठीक वैसे ही दूसरा शुक्रवार भी हँसी–खुशी और धूमधाम के साथ मनाया जाता है। इसे रमजान का दूसरा जुम्मा कहते हैं।

रमजान का तीसरा जुम्मा भी बड़ी श्रद्धा और खुशी के साथ मनाया जाता है। इसके बाद आता है चौथा जुम्मा जो अपने में अधिक विशेष होता।

इस जुम्मे को मस्ज़िदों में सफाई का विशेष प्रबन्ध किया जाता। मस्ज़िद के तालाब में ताजा पानी भरा जाता। नमाज पढ़ने वालों के लिए इन्तजाम अच्छे से अच्छा किया जाता।

इस जुम्मा के एक सप्ताह बाद ईद का महान पर्व आ जाता। बाजार सजने लगते। दिन में मर्द खरीदारी करते। रात में मुस्लिम औरतें बुर्का डालकर निकलतीं।

21

इदुल फितर :

इदुल फितर को ही हम मीठी ईद फितर कहते हैं। इस दिन शुक्ल पक्ष की दूज होती। मुसलमान समाज चन्द्रमा के दर्शन करता और फिर मस्जिदों में जाकर नमाज पढ़ता।

गरीब हो या अमीर एक भी मुसलमान का घर ऐसा न होता जहाँ सेवई न बने।

सेवई मेहमान को देना और खिलाना बहुत जरूरी होता है। इसके अलावा ये लोग आने वाले मेहमानों को मिठाइयाँ भी खिलाते। एक दूसरे से गले मिलते। सबके मुँह से एक ही स्वर निकलता–"ईद मुबारक हो।"

जिस तरह हमारी होली और दीवाली तीन दिन मनाई जाती है वैसे ही मुसलमानों का यह त्योहार भी पूरे दिन धूम–धाम के साथ मनाया जाता है। वैसे तो यह त्योहार एक महीने तक चलता। दूर–दूर से लोग मिलने के लिए आते ही रहते हैं।

मुसलमान समाज के इस त्योहार पर बच्चे से लेकर बड़े तक सभी नये कपड़े पहनते। नये कपड़े, नये जूते, अपनी–अपनी हैसियत के मुताबिक बनवाते।

औरतें और लड़कियाँ भी नये कपड़ों में दिखलाई पड़तीं। कोई भी लड़की और औरत ऐसी नहीं होती। जो ईद के महान पर्व पर नई चूड़ियाँ न पहने। इसी तरह नई जूतियाँ न पहने।

ईद मुसलमानों का सबसे बड़ा त्योहार है। ईद आने से, लगभग दो महीने पहले से ही घरों में इसकी तैयारियाँ शुरू हो जाती हैं। घरों को खूब लीपा–पोता जाता। उन्हें सुन्दर ढ़ंग से सजाया जाता।

बसन्त पंचमी :

इस दिन को ऋतुराज कहा जाता है। जैसे देवताओं का राजा इन्द्र है वैसे ही प्रकृति का राजा बसन्त है।

जगह–जगह सरस्वती की वन्दना होती। लोग श्रद्धा–विभोर होकर वसन्ती रंग के वस्त्र धारण करते।

पतझड़ के बाद पेड़ और पौधों में नये पत्ते तथा फूल आते हैं। इसी खुशी में यह त्योहार मनाया जाता है।

यह त्योहार अंग्रेज तथा यहूदी भी खूब धूम–धाम से मनाते। जिसे हम वसन्त ऋतु कहकर पुकारते हैं उसे वे 'स्प्रिंग सीजन' कहते हैं।

बसन्त पंचमी राष्ट्रीय पर्व है। यह पूरे राष्ट्र में श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया जाता है।

माधी पूर्णिमा :

इसी दिन महात्मा रविदास का जन्म हुआ था। ये मीराबाई के गुरु थे। ईश्वर–भक्त थे और इनकी ईश्वर के प्रति अटूट श्रद्धा थी।

वैसे स्नान, दान और धर्म करने की यह पूर्णिमा होती है। इस दिन गंगा में स्नान करने से विशेष पुण्य प्राप्त होता है।

शिवरात्रि :

यह त्योहार पूरे देश में हर्ष के साथ मनाया जाता। गंगा तट पर और शंकर जी के मन्दिरों में भीड़ होती। श्रद्धालु भक्तजन शिवलिंग पर जल चढ़ाते, बेल–पत्र चढ़ाते। बेर, जौ तथा गेहूँ की बालियाँ चढ़ाते। गन्ने की गंडेरी चढ़ाते, हवन करते, दूध चढ़ाते। अगरबत्तियाँ और धूप जलाते। कोई निर्जल व्रत रखता और कोई फलाहार लेता।

शिवरात्रि की रात्रि में जागरण करने से शंकर जी प्रसन्न होते हैं। वे मनवांछित फल देते और सदैव अपने भक्त की रक्षा करते।

यह व्रत अपने में महान और बहुत ही विशेष है। लोग दूर–दूर से काँवर लेकर आते और शंकर जी पर श्रद्धापूर्वक चढ़ाते।

काँवर लादने वालों की विशेषता यह होती है कि ये न तो सोते, न ही लेटते, न बैठते ही हैं। ये चलते ही रहते हैं। इनका खड़ा होना भी एक कठिन कार्य है। ये दोनों पैर से नहीं खड़े होते। एक पैर से खड़े होते और घण्टों खड़े रहते।

22

होलिका दहन :

होली भारतीय हिन्दू समाज का एक महान पर्व है।

कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक, गुजरात से लेकर बंगाल तक हर प्रदेश में, हर जनपद में होली खेली जाती। रंग डाला जाता। अबीर और गुलाल की धूम मचती।

यह त्योहार ऐसा होता है कि इस दिन दुश्मन भी आकर गले लग जाता और दोस्त बन जाता है।

यह पर्व हर्ष और उल्लास का होता है। घरों में गुंजियाँ, मीठे और नमकीन पकवान बनाये जाते। मेहमानों को खिलाये जाते।

पौराणिक तत्थ के अनुसार हिरण्यकश्यप प्रह्लाद का पिता था। वह नास्तिक था। ईश्वर को नहीं मनता था। उसका कहना था कि ईश्वर मैं ही हूँ। उसका लड़का प्रहलाद ईश्वर का भक्त था। वह ईश्वर भजन में लीन रहता। इसीलिए हिरण्यकश्यप उसे तरह–तरह की यातनायें देता। उसे उन्होंने पहाड़ से गिराया। लेकिन प्रहलाद की मौत नहीं हुई। तब वे अपनी बहन होलिका से कहा कि इस बालक को गोद में लेकर तुम बैठ जावों। तुम्हें अग्नि देवता का वरदान है, तुम जलोगी नहीं। मगर यह बालक जरूर जल जायेगा। फिर मेरी ये सब चिन्ता दूर हो जायेंगी। और ये बहुत बड़ा संकट कट जायेगा।

होलिका ने अपने भाई हिरण्यकश्यप की बात मान ली और चिता

में बैठ गयी। आग लगा दी गयी लेकिन होलिका जल गयी, लेकिन भक्त प्रहलाद का कुछ भी अनिष्ट नहीं हुआ।

सामाजिक दृष्टिकोण से यह होलिका व्यवहार इस लिए मनाया जाता है कि जाड़े के मौसम के बाद गर्मी की ऋतु आती है। खेतों में अनाज पकने लगता है। पतझड़ की ऋतु वसंत में बदल जाती है। आम में बौर आता। सभी पेड़ तथा पौधे हरित परिधान धारण कर लेते हैं। इसी खुशी में यह त्योहार मनाया जाता है।

होली फागुन की पूर्णमासी की रात में जलाई जाती है। सवेरे प्रतिपदा होती और चैत्र का महीना आरम्भ हो जाता है। सवेरा होते ही रंग का खेलना शुरू हो जाता है। अबीर तथा गुलाल के बादल छा जाते। कहीं बाजे बजते, कहीं ढोलक सुनाई पड़ती, कहीं कोई नाचता और कहीं कोई गाता। जिसे देखो उसी पर होली का नशा छाया मिलता।

होली मिलन समारोह तो प्रतिपदा से ही आरम्भ हो जाता है। लेकिन आज के दिन अधिकांश लोग सबसे होली मिलते। हमारे देश में सबसे अच्छी होली उत्तर प्रदेश के ब्रज की होली को कहा जाता है। राजस्थान की होली भी मशहूर है।

पंजाब की होली का इसलिए अधिक महत्त्व है कि वहाँ मर्द भांगड़ा नाच नाचते।

होली हमारा पौराणिक और धार्मिक पर्व है। इसके साथ सदियों का नहीं, युगों का इतिहास जुड़ा है।

गुड फ्राइडे :

होली के बाद गुड फ्राइडे का त्योहार आ जाता है।

वैसे तो यह इसाई समाज का त्योहार है। इस दिन ईसा मसीह को सलीब पर चढ़ाया गया था।

गुड फ्राइडे के दिन गिरजाघरों को खूब सजाया जाता। उनमें प्रातः से ही प्रार्थना सभा होनी आरम्भ हो जाती और आधी रात तक होती रहती।

विश्व की लगभग पचहतर प्रतिशत जनता यहूदि, ईसाई हैं। क्रिसचिन हैं, अंग्रेज हैं, इन सबको यहूदि कहा जाता है।

सच बताया जाये तो यह त्योहार क्रिसमिस डे जिसे बड़ा दिन कहते हैं उससे भी बड़ा है।

ईस्टर सेटरडे :

ईस्टर सेटरडे भी ईसाइयों का एक बहुत बड़ा त्योहार है लेकिन उस दिन बहुत कम छुट्टी रहती है। हमारे देश में इस पर्व को राष्ट्रीय पर्व की तरह मनाते हैं। इस दिन भी गिरजाघरों को सजाया जाता और पर्व की तरह मनाया जाता है।

ईस्टर सन्डे :

गुड फ्राइडे के तीसरे दिन ही ईस्टर सन्डे का त्योहार मनाया जाता है। यह ईसाई समाज में गुड फ्राइडे से अधिक श्रृद्धा के साथ मनाया जाता है। इस दिन भी गिरजाघरों में बाईबिल का पाठ होता है। प्रार्थना होती है। सारी रात रोशनी होती है और प्रत्येक गिरजाघर को खूब सजाया जाता है।

इस ईस्टर सन्डे के लिए यह कहा जाता कि सूली पर चढ़ाने के दो दिन बाद भी ईसामसीह जिन्दा हो जाते है। इसी खुशी में यह त्योहार मनाया जाता है।

इतवार एक ऐसा दिन है कि इस दिन पूरे संसार में छुट्टी रहती है। इसीलिए ईस्टर सन्डे की कोई अलग से छुट्टी नहीं होती। यह अकेले भारत का ही नहीं, पूरे संसार का धार्मिक और राष्ट्रीय पर्व है।

23

कालाष्टमी :

होली के बाद फिर चैत्र का महीना लग जाता है। कृष्ण पक्ष की अष्टमी को सितला अष्टमी कहा जाता है। इस दिन प्रत्येक घरों में पूजा होती है। इस दिन बासी भोजन किया जाता। इसी अष्टमी को कालाष्टमी भी कहा जाता।

यद्यपि इस दिन कार्यालयों में और सभी संस्थानों में अवकाश नहीं रहता। लेकिन प्रत्येक यह धार्मिक पर्व बड़े हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाता।

श्री झूलेलाल जयन्ती :

सिन्धी समाज का यह एक बहुत ही मशहूर त्योहार है। सिन्धी सम्प्रदाय इसे बड़ी ही श्रृद्वा और धूमधाम के साथ मनाता है। इसी दिन झूलेलाल का जन्म हुआ था। तभी झूलेलाल जयन्ती मनाई जाती है।

यह त्योहार राष्ट्रीय है, धार्मिक है। इस दिन भी अवकाश रहता। लेकिन बहुत कम श्री झूलेलाल जी की जयन्ती को राष्ट्रीय पर्व का स्थान प्राप्त है।

नवरात्रि :

चैत्र महीने के शुक्ल पक्ष के प्रतिप्रदा से नवरात्र आरम्भ हो जाते हैं। कोई पूरे नव दिन व्रत रखता, कोई केवल प्रतिप्रदा और अष्टमी को

और नव दुर्गा का पाठ किया जाता है। अष्टमी और नवमी हर जगह छुट्टियाँ होती हैं

श्रद्धालु लोग कुंवारी कन्याओं को भोजन करवाते हैं। हवन होते है। देवि की अराधना की जाती है। आरती की जाती है। यह नवरात्रि बड़े ही हर्ष और सुविधा के साथ मनायी जाती है। जगह–जगह देवी जी की पूजा की जाती है। सभी जगह सहर्ष उनकी पूजा की जाती है।

रामनवमी :

दुर्गाष्टमी के बाद रामनवमी का त्यौहार आ जाता है इसी दिन मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी ने जन्म लिया था। चैत महीने के शुक्ल पक्ष नवमी के दोपहर के ठीक बारह बजे श्री रामचन्द्र जी का जन्म हुआ था।

भादों के कृष्णाष्टमी को रात को बारह बजे जैसे श्री कृष्ण जी का जन्म किया जाता है ठीक वैसे ही भगवान रामचन्द्र जी का जन्म होता है। इस दिन सरकारी और गैर सरकारी दोनों छुट्टियां रहती हैं। इस दिन का महत्त्व इसलिए अधिक है कि इसी दिन नवरात्रि का पूजन होता है। नवरात्रे समाप्त होते हैं। इस दिन देवी जी का पूजन होता हवन किया जाता है।

यह त्यौहार धार्मिक, राष्ट्रीय तथा पौराणिक है। तथा हमारा सबका है।

कहा जाता है कि त्रेता युग में मर्यादा पुरुषोत्तम राम जी अपने बारह क्लावों के साथ पैदा हुए थे। वे आदर्श पुरुष थे। उन्होंने जो काल में आदर्श स्थापित किया वह मर्यादा का पुरुषोत्तम बनकर रह गया।

राम राज्य इस बात का प्रतीक था कि दैविक, दैहिक और भौतिक कष्ट किसी को भी नहीं होते थे। लोग सुखी थे।

लोग श्रद्धा और लग्न से भगवान राम की पूजा करते और भविष्य का स्वर्णिम सपना देखते कि एक बार राम राज्य अवश्य आयेगा, इसमें कोई संदेह नहीं। हरे–भरे खेत लहलहायेंगे। नदियां हमेशा बहती रहेंगी। अनाज से घर भरे रहेंगे। दूध और दही की कमी नही रहेगी। आचरणहीन

भी सदाचारी बनकर रहने लगेंगे।

नमकीन ईद :

इसे बकरीद कहते हैं। यह ईद के बाद मनाई जाती है। इसे मीठी ईद भी कहते हैं। मुसलमान लोग इसे दुज्जहा कहते हैं।

इस दिन पूरे देश में छुट्टी रहती है। जैसे हम लोग होली और दिवाली मनाते हैं वैसे ही मुसलमान समाज में ईद के बाद बकरीद बहुत ही धूमधाम से मनाते हैं। सवेरा होते ही स्नान करके मस्जिदों में जाकर नमाज पढ़ते हैं। उस दिन बकरे की बलि देते हैं। कोई भी ऐसा घर नहीं होता जहाँ बकरे का गोश्त न बने।

ईद जिसे मीठी ईद कहते हैं उस दिन मुसलमान लोग अपने मेहमानों से गले मिलते हैं उन्हें सेंवई खिलाते हैं मगर बकरीद को मेहमानों को बकरे का गोश्त खिलाया जाता है।

मुसलमानों का यह त्यौहार भी होली और दिवाली की तरह पूरे तीन दिन तक मनाया जाता है। इन दिनों में लोग सबसे मिलने जाते हैं। घर आये मेहमानों को सिर आँखो पर लेते हैं। सभी नये कपड़े पहनते हैं। कोई भी पुराने और मैले कपड़ों में नजर नहीं आता।

जैसे मीठी ईद को नयी टोपियाँ आतीं और नये जूते पहने जाते हैं वैसे ही नमकीन ईद और बकरीद को भी सभी लोग नये वस्त्र धारण करते है। मस्जिद में नमाज सुबह और शाम को अदा करते हैं। जिन्हें अपने खुदा के प्रति बहुत ज्यादा श्रद्धा होती है वे मस्जिद में जाकर नमाज पाँच बार अदा करते हैं।

मुसलमानों का यह त्यौहार भी अपने साथ खुशियाँ ही खुशियाँ लाता है। बच्चे से लेकर बड़े तक खुशी के साथ त्यौहार मनाते हैं। घर–घर में खुशी का दौर चलता है। उदासी न जाने कहाँ भाग जाती है। इस तरह सब कुछ मिलाकर बकरीद का महत्त्व ईद से कम नहीं है।

वामन द्वादशी :

यह भारतीय पौराणिक त्योहार है। यह चैत्र महीने के शुक्ल पक्ष में

द्वादशी को मनाया जाता है। इस त्योहार की पौराणिक कहानी अलग है जो पीछे कही जा चुकी है। विष्णु भगवान ने बावन अंगुल का रूप धारण किया था। इसीलिए तो रहीम दास ने कहा है कि माँगने से बड़ा होता है छोटा गात जैसे नारायण का हुआ बावन अंगुल गात।

तब पाताल का राजा बलि था। उसे अहंकार था कि मैं तीनों लोकों में सबसे बड़ा दानी हूँ। विष्णु भगवान ने बावन अंगुल का शरीर बनाया था और उसके यहाँ भिक्षा माँगने गये। उन्होंने भिक्षा में तीन पग पृथ्वी माँगी।

राजा बलि ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। देवताओं के गुरु बृहस्पति है और दैत्यों के गुरु शुक्राचार्य हैं। शुक्राचार्य वहाँ मौजूद थे। उन्होंने बावन अंगों के ब्राहम्ण को देखा तो फौरन ही बलि से कहने लगे, अरे यह तो विष्णु भगवान हैं यह संकल्प मत करो।

मगर बलि ने वचन दे दिया था इसीलिए वह विवश था।

शुक्राचार्य चाहते थे कि किसी तरह यह संकल्प न हो। इसीलिए वे अपने कमंडल की टोटी में मच्छर बनकर बैठ गये।

जब बावन भगवान ने देखा कि कमंडल से जल संकल्प के लिए नहीं आ रहा है तो उन्होंने टोटी में सीख डाल दी। सींख मच्छर की आँख में जाकर लगी। बेचारे शुक्राचार्य एक आँख से काने हो गये।

बावन भगवान ने तीन पग धरती माँगी थी। दो ही पग में उन्होंने सारी धरती नाप ली। फिर तीसरा पग राजा बलि की छाती पर रखा। वह पाताल में समा गया। उसका अहंकार नष्ट हो गया। तभी से यह बावन द्वादशी का त्यौहार प्रतिवर्ष मनाया जाता है।

कच्छपावतार :

वामन द्वादशी के बाद चैत्रशुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को कच्छपावतार का पर्व मनाया जाता है। इसमें भगवान ने कछुए का रूप धारण किया था और कच्छपावतार लिया था।

इस दिन भगवान विष्णु की तुलसी के दलों से पूजा की जाती है।

कहा जाता है कि पृथ्वी का भार कच्छप भगवान ही उठाते हैं।

शेषनाग के नीचे कछुआ बैठा है जो पूरी धरती का भार उठाता है।

अष्टका :

बैसाख महीने की कृष्ण पक्ष की अष्टमी को अष्टका कहा जाता है। इस दिन घर घर में बासी भोजन किया जाता है। इस दिन सत्तू देवी पर चढ़ाये जाते हैं और लोग घरों में खाते भी हैं। ये सतू नये अनाज के होते हैं इनमें गेहूँ, जौं और चने होते हैं।

मई दिवस :

मई को पूरे देश में मई दिवस मनाया जाता है। इस दिन सरकारी और गैर सरकारी सभी संस्थानों में छुट्टी रहती है। इसी दिन चंडिका नवमी भी मनाई जाती है। यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण पर्व है और इसे पूरे देश में मनाया जाता है।

श्री बल्लभाचार्य जयन्ती :

बैसाख कृष्ण पक्ष की तीज को यह व्रत मनाया जाता है। यह पौराणिक और ऐतिहासिक त्योहार है इसलिए इसका सबसे अधिक महत्त्व है।

इसी दिन श्री बल्लाभाचार्य का जन्म हुआ था। इसी उपलक्ष में उनकी जयन्ती मनाई जाती है।

यह दिन एकादशी का होता है। इस दिन व्रत भी किया जाता है। यह एकादशी अपने में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। इसे बरुथिनी एकादशी कहा जाता है।

रवीन्द्रनाथ टैगोर जयन्ती :

यह राष्ट्रीय पर्व और त्योहार सात मई को मनाया जाता है। इस दिन बैसाख कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा होती है। इसी दिन बंगाल के लेखक कवि और साहित्यकार रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म हुआ था इसीलिए इस दिन टैगोर जयन्ती मनाई जाती है।

पूरे देश में इसे टैगोर जयन्ती कहा जाता है लेकिन बंगाल में

कवीन्द्र रविन्द्र जयन्ती कही जाती है।

शिवाजी जयन्ती :

रवीन्द्रनाथ टैगोर जयन्ती के दूसरे ही दिन शिवाजी जयन्ती मनाई जाती है और इस दिन भी अधिकांश छुट्टी रहती है।

शिवाजी की प्रतिमा का अनावरण किया जाता है। उस पर पुष्प और मालायें चढ़ाई जाती हैं। भजन और कीर्तन होता है। लोग श्रद्धापूर्वक इस राष्ट्रनायक को नत मस्तक करते हैं। शिवाजी देश भक्त थे और देश में हिन्दू राज्य की स्थापना करने के लिए पूर्णतया कटिबद्ध थे। वे अपने देश में विदेशी राज्य नहीं चाहते थे। यह उनकी प्रेरणा थी और यही दिशा थी।

24

श्री रामानुजाचार्य जयन्ती :

रामानुजाचार्य की जयन्ती बारह मई को मनाई जाती है। इस दिन षष्ठी होती। इसे चन्दन षष्ठी भी कहा जाता है। इसे पूरे देश में ही नहीं बल्कि बंगाल में खूब धूम–धाम से मनाया जाता है।

तीन जयन्तियाँ :

रामानुजाचार्य की जयन्ती से पहले तीन जयन्तियाँ और मनाई जाती हैं। इनमें सबसे पहले जो जयन्ती मनाई जाती है। इसे आदि शंकराचार्य जयन्ती कहते हैं। दूसरी सूरदास जयन्ती होती है। जो पूरे देश में हर्ष और उल्लास के साथ मनाई जाती है। तीसरी जयन्ती रामानुजाचार्य जयन्ती है। इस दिन जो व्रत रहते हैं उन्हें पुत्र की प्राप्ति होती है।

श्री परशुराम जयन्ती :

त्रेता युग में जब भगवान राम का जन्म हुआ था तो उससे पहले परशुराम जी पैदा हो चुके थे। इनकी माता का नाम रेनुका था। इन्होंने अपने पिता की आज्ञा का पालन करने के लिए अपनी माता का गला काट लिया था। ये बहुत बड़े ऋषि थे। इन्होंने 21 बार पृथ्वी को क्षत्रियों से शून्य कर दिया था।

जानकी नवमी :

जानकी नवमी का त्योहार मिथिला प्रदेश और बिहार में मनाया जाता है। इस दिन लोग गोदावरी नदी में स्नान करते है और उन्हें मनचाहे फल की प्राप्ति होती है।

लक्ष्मीनारायण एकादशी :

लक्ष्मी नारायण एकादशी का त्योहार उड़ीसा में मनाया जाता है। श्रद्धालु भक्त एकादशी का व्रत करते हैं। कोई निजर्ल व्रत रहता है और कोई फलाहार करता। यह भगवान लक्ष्मीनारायण का व्रत होता है। यह व्रत बहुंत ही पवित्र मनचाहा फल देने वाला होता है। इसे पुरुष और स्त्रियाँ दोनों रखते हैं।

मीनाक्षी कल्याण :

यह मीनाक्षी देवी का व्रत है। इसे उड़ीसा में बड़ी श्रद्धा के साथ मनाया जाता है। देवी मीनाक्षी की पूजा होती है। कहा जाता है कि यह मीनाक्षी कल्याण व्रत, कल्याण करता है, वंश वृद्धि करता है और सभी प्रकार के कष्टों से मुक्त करता है।

रुक्मिणी द्वादशी :

यह व्रत भगवान कृष्ण की पटरानी रुक्मिणी का है। यह द्वादशी व्रत सभी तरह का कल्याण करता है। माता रुक्मिणी इससे प्रसन्न होती हैं। वह व्रत करने वाले को मनवांछित फल देती हैं। यह व्रत गुजरात, काठियावाड़, द्वारिका और ब्रज में अधिक मनाया जाता है। इससे सुख और सौभाग्य की वृद्धि होती है।

मधुसूदन पूजा :

मधुसूदन भगवान कृष्ण का ही दूसरा नाम है। यह व्रत ब्रज में अधिकांश रखा जाता है। मथुरा, व्रन्दावन, गोकुल, बरसाना, नन्द गाँव में भी बड़ी श्रद्धा के साथ किया जाता है। जैसे गोवर्धन पूजा होती है, वैसे ही मधुसूदन भगवान की पूजा की जाती है। यह श्रीकृष्ण भगवान का व्रत

है। यह व्रत रखने और भगवान मधुसूदन की पूजा करने से मनचाहे फल की प्राप्ति होती है।

नृसिंह अवतार :

इसी दिन भगवान नृसिंह का अवतार हुआ था। सांयकाल भगवान नृसिंह की पूजा की जाती है उनका व्रत रखा जाता है। संध्या समय प्रदोष व्यापिनी चतुर्दशी होती है तभी भगवान नृसिंह की पूजा होती है। यह व्रत पुरुष–स्त्री दोनों करते हैं।

कूर्म जयन्ती :

यह व्रत पूर्णिमा को किया जाता है। इस दिन कूर्म जयन्ती मनायी जाती है। कूर्मावतार इसी दिन हुआ था। इसे कच्छप अवतार भी कहते हैं।

बुद्ध पूर्णिमा :

इस दिन महात्मा गौतमबुद्ध का निर्वाण हुआ था। यह व्रत की पूर्णिमा कहलाती है। इस दिन व्रत रखने से यमराज और धर्मराज रक्षा करते हैं। यमराज की भी पूजा इसी दिन होती है और धर्मराज पूजन भी किया जाता है। इसी दिन सवर्ण दान करने से बहुत बड़े पुण्य की प्राप्ति होती है।

गन्धेश्वरी पूजा :

गन्धेश्वरी देवी की पूजा बंगाल में बड़ी श्रद्धा से की जाती है। इस दिन अधिक से अधिक सरकारी व गैर सरकारी कार्यालय बन्द रहते हैं। देवी की पूजा की जाती है।

नारद जयन्ती :

जेठ के महीने में कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा में श्री नारद जी का जंन्म हुआ था। ऋषि कई प्रकार के होते हैं। जो राज पाठ छोड़कर चौथेपन में तपस्या करते थे उन्हें राजर्षि कहा जाता था। जो क्रोध का बिल्कुल त्याग कर देते हैं और उनके मन में प्रतिशोध की भावना कभी नहीं आती उन्हें

महर्षि कहा जाता है और उन्हें ही हम ब्रहमर्षि भी कहते हैं। किन्तु नारद जी देवर्षि थे। नारद जी ही एक अकेले ऋषि ऐसे थे जिन्हें देवर्षि कहा जाता है। वे देवताओं के ऋषि थे।

त्रिलोकनाष्टमी :

जेठ के महीने में कृष्ण पक्ष में भगवान त्रिलोकनाथ की त्रिलोकनाष्टमी मनायी जाती है। इसे कालाष्ट भी कहते हैंष। इस दिन लोग बासी भोजन करते हैं।

अचला एकादशी :

जेठ के कृष्ण पक्ष में यह अचला एकादशी मनाई जाती है। इस दिन श्रद्धालु भक्त व्रत रखते हैं। फलाहार करते हैं। निर्जल व्रत करते हैं और कोई–कोई तो जल ही ग्रहण करते हैं। इसी दिन पंजाब में भद्रकाली एकादशी का व्रत किया जाता है। इस दिन लोग पवित्र नदियों में स्नान करते हैं।

मधुसूदन द्वादशी :

मधुसूदन पूजा के बाद मधुसूदन द्वादशी मनायी जाती है। इस दिन मधुसूदन जयन्ती मनाई जाती है, पूजा की जाती है और व्रत रखा जाता है। कहा जाता है कि इस दिन व्रत रखने से भगवान मधुसूदन प्रसन्न होते हैं और मनचाहा फल देते हैं।

फलहारिणी कालिका पूजा :

जेठ के महीने की अमावस्या को वट सावित्री पूजा होती है और उसका व्रत रखा जाता है। उसके दूसरे दिन फलहारिणी की पूजा होती है और व्रत रखा जाता है। सौभाग्यवती स्त्रियां वट सावित्री पूजा के बाद दूसरे दिन व्रत रखती हैं और उसे द्वितीय संयम कहा जाता है।

25

गुरु अर्जुनदेव शहीद दिवस :

यह सिक्खों के प्रसिद्ध गुरु अर्जुन देव का शहीद दिवस है। इस दिन सभी जगह छुट्टी रहती है। यह धार्मिक, ऐतिहासिक और पौराणिक पर्व है। इसे उमा चतुर्थी भी कहा जाता है। इसी दिन शंकर जी का और पार्वती जी का ब्याह हुआ था।

गंगावतार :

इसी दिन सुर–सरिता गंगा जी का जन्म हुआ था। गंगा दशहरा जेठ के महीने में इसी दिन मनाया जाता है। इस दिन चित्रकूट में मंदाकिनी में स्नान करने से मोक्ष प्राप्त होता है। इसी दिन मर्यादा पुरुषोत्तम राम के सेतु रामेश्वर की पूजा की जाती है।

भीमसेनी एकादशी :

इसे निर्जिला एकादशी भी कहा जाता है जेठ में गंगा दशहरा के बादं दूसरे दिन यह व्रत रखा जाता है मिट्टी के पात्रों में जल भरकर दान किया जाता है। इस दिन ब्राहम्णों को दक्षिणा देने से भावी जन्म में मनचाहे धन की प्राप्ति होती है।

जिस तरह बसन्त पंचमी अक्षय तृतीया पवित्र तिथियां है वैसे ही यह भीमसेनी निर्जला एकादशी भी है। इसमें शादी–ब्याह, मुन्डन संस्कार यज्ञोपवीत और अन्नप्राशन किए जाते हैं। यह बहुत ही पवित्र तिथि है।

गुरु हरगोविंदसिंह जन्मदिवस :

यह सिक्खों का पवित्र त्यौहार है। इसी दिन उनके गुरु श्री हरगोविन्द सिंह ने जन्म लिया था। इस दिन सभी कार्यालय बन्द रहते हैं और सभी शिक्षण संस्थाएं भी बन्द रहती हैं।

चेहल्लुम :

यह मुसलमानों का त्यौहार है। इस दिन सभी सरकारी संस्थायें बन्द रहती हैं। मुसलमान लोग चेहल्लुम का त्यौहार मनाते हैं। इनके ताजिया जब दफना दिये जाते हैं तब से लेकर चालीस दिन तक और मनाया जाता है। कहा जाता है कि मरने वाले के जब तक चालीस दिन पूरे नहीं हो जाते तब तक आत्मा भटकती रहती है। कर्वला में ताजिया दफनाने के बाद पूरे चालीस दिन हो जाने पर यह चेहल्लुम का त्यौहार मनाया जाता है।

बौहरा अष्टमी :

जेठ के महीने में शुक्ल पक्ष की एकादशी को योगिनी एकादशी मनायी जाती है। इस दिन व्रत रखने वाले का योगिनी कल्याण करती है। यह व्रत और त्यौहार बड़े उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाया जाता है। यह योगिनी एकादशी का व्रत वैष्णव समाज में अधिकांश रखा जाता है। इस दिन स्नान और दान करने दोनों ही फलदायक होते हैं।

रथ यात्रा :

रथ यात्रा आषाढ़ के शुक्ल पक्ष की दुईज को जगन्नाथपुरी में निकलती है। लेकिन यह व्रत पूरे देश में बड़ी श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया जाता है। रथ यात्रा का जुलूस ऐसा कोई भी देश या कोई भी गांव नहीं होगा जहाँ जगन्नाथ की पूजा न हो।

अंगारकी चतुर्थी :

आषाढ़ के महीने में शुक्ल पक्ष में अंगारकी चतुर्थी मनाई जाती है। इसे गणेश चतुर्थी भी कहा जाता है। यह वैनायकी गणेश चतुर्थी भी कहलाती है।

हेरा पंचमी :

यह व्रत उड़ीया लोगों का होता है। इसे उड़ीसा प्रदेश में खूब धूमधाम के साथ मनाया जाता है। इसे स्कन्द पंचमी भी कहते हैं।

कर्दम षष्ठी :

इसे स्कन्द षष्ठी भी कहते हैं और यह अधिकांश बंगाल में मनायी जाती है।

दुर्वा अष्टमी :

यह आषाढ़ माह की शुक्ल पक्ष में मनायी जाती है। इस दिन त्रिपुरा में खरसी पूजा भी होती है। इसे परशुराम अष्टमी भी कहा जाता है।

हरिशयनी एकादशी :

यह व्रत आषाढ़ के शुक्ल पक्ष की एकादशी को किया जाता है। यह अपने में बहुत महत्त्वपूर्ण एकादशी है। इस दिन व्रत रखने से भगवान विष्णु प्रसन्न होते हैं। वे अन्न, पुत्र और धन देते हैं। मोक्ष भी प्रदान करते हैं।

मीलादुन नवीया ईदेमीला :

इसी दिन मोहम्मद साहब का जन्म हुआ था। इसे वारावफात भी कहते हैं। उस दिन समाज में यह त्योहार खूब धूमधाम से मनाया जाता है। रात में रोशनी की जाती है। मेला लगता है। मुसलमान इसे बहुत ही पवित्र दिन और त्योहार मानते हैं।

शीतला सप्तमी :

सावन के कृष्ण पक्ष की सप्तमी को यह पवित्र त्योहार मनाया जाता है। इस दिन देवी की पूजा होती है उनका व्रत रखा जाता है। सन्तानहीनों को सन्तान प्राप्त होती है मनवांछित फल प्राप्त होता है और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

केर पूजा :

यह व्रत सावन के महीने में कृष्ण पक्ष की एकादशी को मनाया जाता है। त्रिपुरा में इसी दिन केर पूजा की जाती है और मंगला–गौरी व्रत रखा जाता है।

श्री लोकमान्य तिलक पुण्यतिथि :

सरकारी छुट्‌टी इस दिन पूरे देश में रहती है। एक अगस्त को यह तिथि मनाई जाती है। यह सावन कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी होती है।

करकट पूजा :

सावन कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को करकट पूजा होती है। यह त्योहार केरल प्रदेश का है। इसी दिन जला नाड़ी, तदीश बुध का त्योहार भी मनाया जाता है। कहा जाता है कि हवा खूब तेज चलती है और पानी भी बरसता है।

दर्शदीप पूजन :

यह सावन की अमावस्या को मनाया जाता है। इसे हरियाली अमावस्या भी कहा जाता है। इसके बाद तीज को हरियाली तीज होती है। इस दिन अधिकांश प्रदेशों में छुट्‌टी रहती है। दर्शदीप पूजन करने से दरिद्रता का नाश होता है।

सोमेश्वर पूजन :

सावन के प्रति सोमवार को शंकर जी का पूजन किया जाता है। उनका व्रत रखा जाता है। इस व्रत का विधान वही है जो प्रदोष का होता है। इस दिन सोमेश्वर की पूजा होती है। इन चार सोमवारों में चौथे सोमवार का महत्त्व बहुत है। इस दिन सोमेश्वर प्रदोष पूजन किया जाता है। श्रद्धालु लोग सावन के चौथे सोमवार से लेकर भादों की अमावस्या तक नियमित रूप से पूजन और आराधना करते हैं।

मधुश्रवा तृतीया :

यह भादो मास के शुक्ल पक्ष को मनायी जाती। इसे हल तृतीया

भी कहते हैं और यह ठकुराइन जयन्ती भी कहलाती है।

कज्जली तीज :

इसे कजरी तीज भी कहते हैं। इस रात में जागरण किया जाता है। विशालाक्षी यात्रा आरम्भ होती है। यह बहुत ही पुनीत पर्व और पावन तिथि है।

रक्षा पंचमी :

रक्षा पंचमी का त्योहार उड़ीसा में मनाया जाता है। आसाम में भी इस तिथि को माधव देव की पूजा होती है। इस दिन इस प्रदेश में अधिकांश सरकारी और गैर सरकारी कार्यालय बन्द रहते हैं।

26

अघोर चतुर्दशी :

भादो महीने के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को यह व्रत रखा जाता है। यह बाबा अघोरनाथ का व्रत कहलाता है। पूजा शंकर जी की होती है और उन्ही का व्रत रखा जाता। जो लोग अघोर चतुर्दशी का व्रत करते हैं उनका ही नहीं बल्कि उनके परिवार का दारिद्रय दूर हो जाता है।

कुशोत्पाटनी अमावस्या :

भादो की अमावस्या का बहुत बड़ा महत्त्व है। इस दिन लोग पवित्र नदी और सरोवर में स्नान करते हैं। यह कुशा अमावस्या कही जाती है। संयोग से इस दिन सोमवार का दिन हो तो यह सोमवती अमावस्या भी कही जाती है। इसका दूसरा नाम पिठौरी अमावस्या भी कहा जाता है इसी दिन भगवान रुद्र की पूजा होती है। रुद्र देवता कोई और नहीं हमारे भगवान शंकर ही हैं।

श्री चन्द्र नौमी :

यह उदासीन सम्पदा का त्यौहार है। भागवत इसी दिन से प्रारम्भ होती। जो लोग इस तिथि से भागवत आरम्भ करते और सुनते हैं उन्हें मोक्ष प्राप्त होता है। यह पूरे का पूरा सप्ताह भागवत सप्ताह कहलाता है।

रामदेव जी का मेला :

यह रामदेव जी का मेला नवल दुर्ग में लगता है। बाबा रामदेव जी की पूजा की जाती है। उनका व्रत किया जाता है।बाबा की आराधना से मनचाहे फल की प्राप्ति होती है।

डोल ग्यारस :

यह त्योहार मध्य प्रदेश में मनाया जाता है। इसका बहुत बड़ा महत्त्व है। इसी दिन ओम दिवस मनाया जाता है। यहाँ के श्रद्धालु लोग व्रत रखते हैं, धूमधाम से मनाते हैं। इसी दिन पद्मा एकादशी का भी व्रत रखा जाता है।

अनन्त चतुर्दशी :

यह व्रत पूरे देश में मनाया जाता है। इस दिन लोग अनन्ता बांधते हैं। अनन्ता का दान करते हैं। पुआ और दही का भी दान करते हैं। इस दिन देश में जगह–जगह अनन्त चौदस का मेला लगता है। अनन्त देव का पूजन किया जाता है और उनका व्रत रखा जाता है।

आश्विन मास आरम्भ की इष्टि :

इस दिन से क्वांर का महीना आरम्भ हो जाता है। पितरों का आगमन हो जाता है। श्राद्ध होने लगते हैं। श्रद्धालु भक्त जन इसी दिन से पूरे महीने भर दूध का त्याग कर देते हैं।

जीवित पुत्रिका व्रत :

यह व्रत महालक्ष्मी का है। इसे अधिकांश सौभाग्यवती स्त्रियां करती हैं। उन्हें पुत्र व धन की प्राप्ति होती है। इसी दिन विश्वकर्मा पूजा भी होती है और उनका व्रत भी किया जाता है।

इन्दिरा एकादशी :

इन्दिरा एकादशी का व्रत क्वार के महीने में कृष्ण पक्ष की एकादशी को किया जाता है। इसी दिन संन्यासी मती वैष्णव का श्राद्ध भी किया जाता है

चतुर्दशी श्राद्ध :

वैसे तो जिन लोगों की मृत्यु तिथि पता नहीं होती उनका श्राद्ध क्वांर में अमावस को किया जाता है। किन्तु वे सब श्राद्ध अगर चतुर्दशी को कर दिए जाते हैं तो बहुत अच्छा रहता है और इसका शुभ फल प्राप्त होता है।

सर्वपैत्रीदर्श अमावस्या :

वैसे तो यह पितृ विसर्जन की अमावस्या कहलाती है लेकिन इसे सर्वपैत्रिदर्श अमावस्या भी कहा जाता है। इस दिन भी भूले भटके श्राद्ध किए जाते हैं। इस दिन सरकारी, गैर सरकारी कार्यालय बन्द रहते हैं यह महालया अमावस्या भी कही जाती है।

महाराजा अग्रसेन जयन्ती :

यह क्वांर के महीने की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा होती है। इसी दिन से नवरात्रे आरम्भ होते हैं। इस दिन लगभग सभी स्त्रियां व पुरुष व्रत रखते हैं और कलश स्थापना होती है और इसी दिन ध्वजा रोपण भी होता है और महाराजा अग्रसेन की जयन्ती मनाई जाती है।

माना चतुर्थी :

यह त्योहार बंगाल और उड़ीसा का है। इन प्रदेशों में इस दिन व्रत रखा जाता है देवी की पूजा की जाती है। यह कहा जाता है कि माना चतुर्थी को जो मनोकामना की जाती है वह पूरी होकर रहती है।

सरस्वती शयन सप्तमी :

इस दिन सरस्वती जी का पूजन और व्रत किया जाता है। उनका आवाहन किया जाता है और इसी दिन महालक्ष्मी का भी व्रत किया जाता है। क्वांरी पूजा भी इसी दिन की जाती है। अन्नपूर्णा की परिक्रमा भी इसी दिन की जाती है। सरस्वती देवी के लिए बलिदान किया जाता है। हवन होता है।

श्री माधवाचार्य जयंती :

क्वांर के महीने में शुक्ल पक्ष की दशमी को क्या गरीब, क्या अमीर, क्या पुरुष, क्या स्त्रियां, क्या छोटे और बड़े सभी नीलकंठ के दर्शन करते हैं। इस दिन अपराजिता पूजा होती है और इसी दिन विजया दशमी का पर्व मनाया जाता है। इसी दिन राजाओं का राजतिलक होता है और माधवाचार्य पूजन होता है। इसी दिन सरस्वती का विसर्जन किया जाता है। यह बहुत ही पावन व पुण्य तिथि है। इस दिन जो भी कार्य आरम्भ किया जाता है वह मंगलदायक और फलदायक होता है।

केदार गौरी व्रत :

यह क्वांर के शुक्ल पक्ष की द्वादशी को मनाया जाता है। इसी दिन भगवान केदारनाथ और गौरी जी का पूजन किया जाता है। वचना पूजा और बही खाते की पूजा होती है और व्रत रखा जाता है। ऋषि दयानन्द का निर्वाण दिवस मनाया जाता है। भगवान महावीर जयन्ती मनाई जाती है।

27

श्री राधा अष्टमी :

इसे अहोई अष्टमी भी कहते हैं। अहोई अष्टमी का व्रत बिहार प्रदेश में स्त्रियाँ उसी तरह रखती हैं। जैसे हरि तालिका का व्रत किया जाता है। बिहार का यह सबसे बड़ा त्योहार होता है। इसमें गन्ने का पूजन होता है। सूर्योदय से पहले जो रुधाकुंड में स्नान करते हैं उन्हें सौभाग्य और सुख की प्राप्ति होती है। इसी दिन मण्डूक वाहन, जला नाड़ी का व्रत किया जाता है।

रमा एकादशी :

यह वैष्णव लोगों का व्रत है इस दिन सौभाग्यवती महिलाएं गाय और बछड़े की पूजा करती हैं। कहीं तो यह रमा एकादशी कही जाती है लेकिन इसे गोवत्स द्वादशी भी कहते हैं। इस दिन भगवान शंकर का विधि विधान से प्रदोष का पूजन करना चाहिए। इससे मनचाहे फल की प्राप्ति होती है।

बलि पूजा :

कार्तिक महीने के शुक्ल पक्ष में प्रतिपदा को भगवान बलि की पूजा की जाती है। इसी दिन अन्नकूट होता है और गोवर्धन पूजा भी की जाती है। इसी दिन से नेपाली संवत आरम्भ होता है। इस दिन जो लोग अपने पूर्वजों का श्राद्ध करते हैं वे जीवन भर सुखी रहते हैं।

काशी की गोवर्धन पूजा :

काशी की गोवर्धन पूजा का सबसे अधिक महत्त्व है। जो लोग काशी में जाकर गोवर्धन पूजा करते हैं उन्हें बहुत पुण्य मिलता है। जैसे मथुरा में गोवर्धन पूजा का महत्त्व है वैसे ही काशी में अन्नकूट गोवर्धन पूजा बड़ी श्रद्धा से मनाते हैं। लोग हर्ष और उल्लास से मनोतियां मानते और व्रत रखते हैं। उनकी मनोकामना पूरी होती है।

वे इस लोक में सुख भोगकर मरने के बाद मोक्ष को प्राप्त होते हैं।

आंवला नवमी :

अगहन महीने के कृष्ण पक्ष में नवमी आती है इसे आंवला नवमी कहा जाता है। जिस तरह भू लोक अमृत मट्ठा है वैसे ही यह आंवला नवमी। इस दिन आंवले का पूजन होता है। आंवला वृक्ष के नीचे बैठकर सपरिवार भोजन करते हैं। आंवला खाया जाता है। ऐसे लोग मृत्यु के बाद अमर हो जाते हैं। उन्हें मोक्ष की प्राप्ति होती है।

इस दिन तुलसी की पूजा करनी चाहिए। विष्णु की प्रतिमा का दान करना चाहिए। आंवला का दान करना चाहिए। यह अक्षय नवमी कहलाती है।

त्रिश्प्रशा महाद्वादशी :

यह द्वादशी महाद्वादशी कही जाती है। इसी दिन तुलसी का ब्याह हुआ था। यही गरुड़ द्वादशी है। इस दिन गरुड़ भगवान की पूजा की जाती है। यह महाकवि कालिदास का जन्म हुआ था इसीलिए यह कालिदास जयन्ती कहलाती है।

महामना पंडित मदनमोहन मालवीय जी की पुण्य तिथि :

इसी दिन पं॰ मदनमोहन मालवीय जी का निर्वाण हुआ था। काशी विश्वविद्यालय के वे संस्थापक थे। इस दिन अधिकांश अवकाश रहता है। सरकारी और गैर सरकारी संस्थाएं बन्द रहती हैं।

श्री काशी विश्वनाथ प्रतिष्ठा दिवस :

इसी काशी चतुर्दशी को बैकुंठ चतुर्दशी कहते हैं। इसी दिन विश्वनाथ जी की प्रतिष्ठा और स्थापना हुई थी। इसीलिए इसे श्री विश्वनाथ काशी दिवस कहा जाता है। नर्वदेश्वर शिवलिंग की स्थापना इसी दिन की जाती है।

सौभाग्य सुन्दरी व्रत :

कार्तिक पूर्णिमा के बाद अगहन के शुक्ल पक्ष में चतुर्दशी के दिन यह सौभाग्य सुन्दरी व्रत मनाया जाता है इस दिन सौभाग्यवती महिलाएं गणेश जी का पूजन करती हैं, सिंदूर से मांग भरती हैं जो सदा सुहागिन होती हैं।

श्री महाकाल भैरव जयन्ती :

अगहन के कृष्ण पक्ष में जो अष्टमी आती है उसे काला अष्टमी कहा जाता है यह महाकाल भैरवा अष्टमी है। इसी दिन महाकाल का जन्म हुआ था इसीलिए यह भैरव जयन्ती कही जाती है। जब सूरज डूब जाता है और संध्या का आगमन होता है तब भैरव जी का पूजन किया जाता है। उनके दर्शन किये जाते हैं।

कान जी अनला नवमी :

यह उड़िया लोगों का बहुत बड़ा त्योहार होता है। इस दिन वे व्रत रखते हैं। पूरे के पूरे उड़ीसा मे यह त्योहार धूमधाम से मनाया जाता है। यह राष्ट्रीय पर्व है इसीलिए इस दिन सभी कार्यालय बन्द रहते हैं।

उत्पन्ना एकादशी :

यह एकादशी का व्रत बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। इसी दिन ज्योतिष जन्म लेते व मोक्ष को प्राप्त होते हैं जो भी कार्य किया जाता है वह सफल होकर रहता है।

सन्त ज्ञानेश्वर महाराज की पुण्यतिथि :

यह अगहन के कृष्ण पक्ष की द्वादशी होती है इसी दिन सन्त ज्ञानेश्वर का निर्वाण हुआ था इसीलिए यह पुण्य तिथि मनायी जाती है।

कमला जयन्ती :

अमावस को कमला जयन्ती मनायी जाती है। इसी दिन लक्ष्मी जी की उत्पति हुई थी और भगवान ने उन्हें स्वीकार किया था इसलिए इसे कमला जयन्ती कहा जाता है। इस दिन लक्ष्मी जी की पूजा होती है।

विष्णु सप्तमी :

अगहन महीने के कृष्ण पक्ष की सप्तमी को विष्णु सप्तमी कहा जाता है। इसे नन्दा सप्तमी भी कहते हैं। इस दिन नन्दा देवी की पूजा होती है।

हरि जयन्ती :

यह व्रत अगहन महीने की कृष्ण पक्ष की नवमी को किया जाता है। इस दिन नवमी की पूजा होती है। जो लोग नन्दा देवी की पूजा करते हैं उन्हें मोक्ष प्राप्त होता है। इसी दिन हरि जयन्ती भी मनाई जाती है।

भगवान दत्तात्रेय जयन्ती :

यह पूर्णिमा ही दत्तात्रेय पूर्णिमा कहलाती है। सांझ की बेला में दत्तात्रेय की पूजा होती है। जो मनचाहे फल को देते हैं यह स्नान दान की पूर्णिमा भी होती है। यह त्रिपुरा सुन्दरी श्री विद्या जयन्ती भी कहलाती है। जो लोग इस दिन गोदावरी में स्नान करते हैं वस्त्र और सोने का दान करते हैं। उन्हें स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

भानु सप्तमी :

यह सूर्य भगवान का व्रत है इसी दिन से सूर्य उत्तरायण होते हैं इसी दिन शिशिर ऋतु आरम्भ होती है। इस दिन दैत्यों का दोपहर और देवताओं की मध्यान्ह रात होती है।

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस :

इस दिन श्रद्धानन्द जी ने बलिदान दिया था। इसी दिन उनका श्राद्ध किया जाता है।

श्री पाश्वनाथ जयन्ती :

पाश्वनाथ जैनियों के महागुरू थे इनका जन्म इसी दिन हुआ था। इसलिए इनका जन्मदिन मनाया जाता है।

28

जोरहार मेला :

यह मेला पौषय महीनें के कृष्ण पक्ष में पंजाब में लगता है। यह तिथि निशीथ व्यापिनी एकादशी कहलाती है। यह मेला पंजाब व आसाम में लगता है। इसका बहुत महत्त्व है।

बकुला एकादशी :

यह अमावस्या बहुत फलवती और महत्त्वपूर्ण है। इसे बकुला एकादशी कहा जाता है। इस दिन पवित्र नदी में स्नान करके दान करना चाहिए। पुष्कर महातीर्थ में स्नान करने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

ईसाई नव वर्ष की पूर्व संध्या :

इस दिन ईसाई समाज चन्द्रमा के दर्शन अवश्य करता है। इसी दिन से ईसाइयों का नव वर्ष आरम्भ होता है। इसलिए इसे (नव–इयर–इव) कहते है।

सुरूप द्वादशी :

इसी दिन बुध उदय होता है। यह द्वादशी मन चाहे फल की दात्री है। इस दिन शंकर जी की पूजा करनी चाहिए। इनका व्रत रखना चाहिए।

शाम्ब दशमी :

शाम्ब दशमी का व्रत सूर्य भगवान का है जो श्रद्धालु और पुरुष सूर्य

भगवान का व्रत करते हैं, उनकी पूजा करते हैं, उन्हें सूर्य भगवान का आशीर्वाद प्राप्त होता है। उनका विधान यह है कि प्रातःकाल से सूर्यास्त तक निर्जल व्रत करना चाहिए फिर जब सूर्यास्त होने जा रहा हो। उससे पहले फूल की थाली में अथवा चाँदी की थाली में सूर्य भगवान का लाल चंदन से चित्र बनाए। उस पर तुलसी जल और गंगाजल चढ़ाएं। फिर सूर्य, भगवान को साष्टांग प्रणाम करें। घी और गुड़ से शंकर जी का भोग लगाएं। आरती करें और इस मंत्र का जाप करे "ऊँ ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः"।

इस सूर्य पूजा का उड़ीसा में बहुत अधिक महत्त्व है।

श्री गणेश जयन्ती :

माघ महीने के कृष्ण पक्ष में गणेश जी का जन्म हुआ था इसीलिए इसे संकष्टी गणेश चौथ कहते हैं। इस दिन नए काले तिल व नए गुड़ से गणेश जी का पूजन करना चाहिए। मीठे पुए बनाकर भगवान का भोग लगाना चाहिए स्त्री हो या पुरुष दोनों को पूजन करना चाहिए। इस दिन रात्रि में जागरण करना चाहिए इस दिन घर में लक्ष्मी आती है। गणेश जी जिस पर प्रसन्न हो जाते है उसे स्वर्ण–चांदी और धन देते हैं। यह रात्रि सौभाग्य की रात्रि कही जाती है। इस दिन हर दरिद्र का नाश होता है और लक्ष्मी जी का आगमन होता है।

लाला लाजपतराय जयंती :

इस दिन पंजाब केसरी लाला लाजपत राय का जन्म हुआ था इसलिए उनकी जयंती मनाई जाती है। इस दिन सरकारी और गैर सरकारी सभी संस्थाएं बन्द रहती हैं। पंजाब में इस दिन हर्ष और उल्लास मनाया जाता है।

सर्वोदय पखवारा :

इसी दिन मोहन लाल कर्मचन्द महात्मा गांधी का निर्वाण हुआ था। इसी दिन नाथू राम विनायक गोडसे ने पिस्तौल से उनकी हत्या की थी। यह पन्द्रह दिन का पखवारा मनाया जाता है और इसे सर्वोदय पखवारा कहा जाता है।

स्वामी विवेकानन्द जयंती :

यह तिथि सर्वाप्ति सप्तमी होती है। इसी दिन स्वामी विवेकानन्द जंयती मनाई जाती है और स्वामी विवेकानन्द की जयंती पूरे भारत में ही नहीं पूरे विश्व में मनाई जाती है।

श्री स्वामी रामानन्दाचार्य जयंती :

सर्वाप्ति सप्तमी को ही रामानन्दाचार्य जयंती मनाई जाती है। इस दिन राष्ट्रीय पर्व होता है और अधिकांश कार्यालय बन्द रहते हैं।

मौनी अमावस्या :

यह अमावस माघ के महीने में होती है और इसे मौनी अमावस्या कहा जाता है। इस दिन जब तक स्नान न कर लें तब तक मौन व्रत करना चाहिए। इस दिन जो लोग काशी में दशार्श्व–मेघ घाट में स्नान करते हैं उन्हें भगवान विश्वनाथि की कृपा से सीधे स्वर्ग की प्राप्ति होती है। इसी तरह जो लोग त्रिवेणी संगम का स्नान करते हैं उनके लिए सीधे मोक्ष का दरवाजा खुल जाता है। इस अमावस्या को ब्राहम्णों को दान, गाय, अन्न, वस्त्र और स्वर्ण का दान करना चाहिए। भावी जन्म में बहुत अच्छा फल प्राप्त होता है। इसी दिन द्धापर युग समाप्त हुआ था और कलियुग आया था इसलिए इसे द्वापर युग की अमावस्या कहा जाता है। इसे त्रिवेणी अमावस्या भी कहा जाता है।

श्री वल्लभ जयंती :

इसी दिन श्री भगवान वल्लभ का अवतार हुआ था इसलिए इसे वल्लभावतार कहा जाता है।

बापू श्राद्ध :

माघ महीने में शुक्लपक्ष की षष्ठी को बापू जो हमारे राष्ट्रपिता हैं उनका श्राद्ध किया जाता है। इस दिन राष्ट्रीय पर्व मनाया जाता है और अधिकांश कार्यालय बन्द रहते हैं। इसी दिन बन्धु एन्डूज की जयंती मनाई जाती है। इसी दिन जो गोदावरी में स्नान करते है उन्हें मोक्ष की प्राप्ति

होती है। इसी तरह जो लोग गोदावरी में स्नान करते है उन्हें मोक्ष की प्राप्ति होती है और वे सीधे स्वर्ग जाते हैं।

विधान सप्तमी :

वैसे तो हमारा संविधान 26 जनवरी, सन् 1950 को बना था। इसलिए 26 जनवरी को पूरे देश में छुट्टी रहती है और गणतंत्र दिवस मनाया जाता है। अंग्रेजों में इसे रिपब्लिक डे कहा जाता है। जिस दिन विधान बना उस दिन सप्तमी थी। इसलिए इसे विधान सप्तमी कहते हैं और इसका दूसरा नाम अचला सप्तमी भी है। इस दिन जो श्रद्धालु स्त्रियां व पुरुष व्रत रखते है वे आजीवन निरोग रहते हैं।

भैरव जयंती :

माध की पूर्णिमा का जो श्री भैरव जी का पूजन करते हैं। उन पर चांदी चढ़ाते हैं और चांदी का दान करते हैं उनका भाग्य उदय होता है। वे जीवन भर सुखी तथा संपन्न रहते हैं। भैरव महान देवता है जो मृत्यु को भी रोक देता है और मन चाहे फल को प्रदान करता है। इस दिन ऊनी वस्त्र का दान करना चाहिए। तिल पात्र का दान करें। तिल का दान दें। इस दिन का दिया हुआ दान कभी व्यर्थ नहीं जाता।

श्री राजेन्द्रप्रसाद निर्वाण दिवस :

हमारे प्रथम राष्ट्रपति श्री राजेन्द्र प्रसाद का निधन इसी दिन हुआ था। वे पूरे दस साल तक राष्ट्रपति पद पर रहे और देश को नई दिशा दी। वे नेता थे। हमारे राष्ट्रपति थे। वे देवता थे। उनके शासन काल में देश में सुख और शान्ति थी इसलिए हम बड़ी श्रद्धा के साथ इस दिन को मनाते हैं। हम मौन धारण करके अपने दिवंगत राष्ट्रपति को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्री समर्थ गुरु रामदास जयन्ती :

फागुन महीने के कृष्ण पक्ष में नवमी को श्री समर्थगुरु रामदास की जयन्ती मनाई जाती है। यह राष्ट्रीय पर्व है और इस दिन सभी कार्यालय

तथा शिक्षा संस्थाएं बन्द रहती हैं।

विजया एकादशी :

फागुन महीने की कृष्ण पक्ष की एकादशी को विजया एकादशी कहा जाता है। इस दिन सभी लोगों को व्रत रखना चाहिये। यह व्रत रखने से सर्वत्र विजय होती है।

चतुर्दश ज्योतिलिंग पूजन :

शिवरात्रि के महान पर्व पर चतुर्दश ज्योतिलिंग का पूजन किया जाता है। इससे बहुत बड़े पुण्य की प्राप्ति होती है। प्रत्येक गृहस्थ को पूजन अवश्य करना चाहिए। इसी दिन श्री बैद्यनाथ जयन्ती मनाई जाती है। बैद्यनाथ शंकर जी का उपनाम है। बैद्यनाथ धाम बहुत ही प्रसिद्ध स्थान है। इसी दिन स्वामी दयानन्द सरस्वती की जयन्ती होती है। इसी दिन उनका जन्म हुआ था। ऋषि बोधोत्सव भी इसी दिन मनाया जाता है। और इसी दिन से आर्य सप्ताह पूजन समाप्त होता है।

प्रजा सुख करी प्रतिपदा :

फालगुन महीने की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को प्रत्येक गृहस्थ को व्रत करना चाहिए। इस प्रतिपदा को जो व्रत करते हैं वह जीवन भर सुखी रहते हैं। इसीलिए इसे प्रजा सुखकरी प्रतिपदा कहा जाता है।

लेखराम वीर तृतीया जयन्ती :

फागुन की शुक्ल पक्ष की दुईज फुलाही कहते हैं। यह बहुत ही उत्तम व पुनीत तिथि होती है। उसके दूसरे ही दिन पं॰ लेखराम की जयन्ती मनाई जाती है। और इसे पं॰ लेखराम वीर जयन्ती कहते हैं। इसे मधुक तृतीया भी कहा जाता है।

आमल की एकादशी :

इसे रंग भरी एकादशी भी कहा जाता है। कुछ नक्षत्रों में इसी दिन से रंग चलना शुरू हो जाता है। इसीलिए इसे रंगभरी एकादशी भी कहते हैं। काशी में इसी दिन भगवान विश्वनाथ का श्रंगार होता है।

सर्वांति हर चतुर्दशी :

यह व्रत फागुन के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को मनाया जाता है। इस दिन महेश्वर का व्रत रखना चाहिए। यह व्रत रखने से हर प्रकार के कष्ट का नाश होता है।

पापमोचनी एकादशी :

चैत्र के महीने में कृष्ण पक्ष में जो एकादशी होती है। उसे पाप मोचनी एकादशी कहते हैं। वैष्णव सम्प्रदाय में इस एकादशी का बड़ा महत्त्व है। इसका जो व्रत करते हैं उनके सभी पापों का नाश हो जाता है।

मधुश्रवा त्रयोदशी :

इस त्रयोदशी को गंगा और वरुणा के संगम पर स्नान करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है।

कच्छपावतार :

बैशाख के महीने में कृष्ण पक्ष की दशमी को कच्छपावतार हुआ था। इस दिन व्रत रखना चाहिए और भगवान विष्णु पर तुलसी का दल चढ़ाना चाहिए। इससे भगवान विष्णु पर तुलसी का दल चढ़ाना चाहिए। इससे भगवान प्रसन्न होते हैं। इस अन्न, पुत्र और धन देते हैं। भगवान विष्णु और आदिं देवता शंकर तुलसी पत्र से बहुत जल्दी प्रसन्न होते हैं। इस दिन काट घड़ों का दान करना चाहिए। इससे मोक्ष प्राप्त होता है।

गंगा सप्तमी :

इसे कमला सप्तमी भी कहा जाता है। शर्करा सप्तमी के नाम से भी यह प्रसिद्ध है। इस दिन गंगा जी में शक्कर का भोग लगाना चाहिए। गंगा की पूजा करनी चाहिए।

भद्रकाली एकादशी :

यह ज्येष्ठ महीने के कृष्ण पक्ष की एकादशी को मनाई जाती है। पंजाब का बहुत बड़ा त्यौहार है। इस दिन काली जी पूजन किया जाता

है और उनका व्रत रखा जाता है।

चम्पक द्वादशी :

यह ज्येष्ठ के महीनें में शुक्ल पक्ष में मनाई जाती है। इसे चम्पक द्वादशी कहते हैं। बंगाल में इसका बहुत अधिक महत्त्व है। वहाँ इस द्वादशी के बाद चम्पक द्वादशी भी मनाई जाती है।

श्री बलराम जगदीश रथोत्सव :

यह त्योहार आषाढ़ महीने की शुक्ल पक्ष की दुईज को मनाया जाता है। इसका महत्त्व बंगाल में बहुत अधिक है और इसे मनोरथ द्वितीया भी कहते हैं।

ज्वालामुखी पूजन :

यह कश्मीर का एक बहुत बड़ा त्योहार है। इसमें ज्वालामुखी की पूजा होती है और उनका व्रत रखा जाता है।

शिव पवित्ररोपण :

यह सावन के शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी को मनाया जाता है। इस दिन माटी का शिवलिंग बनाकर पूजा की जाती है। इसे दूध से नहलाया जाता है। इससे सभी प्रकार के मनोरथ पूर्ण होते हैं। इस पूजा का विशेष महत्त्व है। जो लोग पार्थिक पूजन करते हैं। उन पर भगवान बहुत जल्दी प्रसन्न होते हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी ने गंगा में स्नान किया था और पार्थिक पूजन किया था। तभी सीता जी ने भी गंगा का आशीर्वाद प्राप्त किया था।

29

गोगानवमी :

यह गोगा नवमी भादों के कृष्ण पक्ष में मनाई जाती है। इस दिन गोकुल में बहुत बड़ा उत्सव मनाया जाता है। खूब धूमधाम होती है। श्रद्धालु भक्तजन इस दिन व्रत रखते हैं।

वाराहावतार :

भादो महीने के शुक्ल पक्ष में तीज को भगवान बाराहवतार का जन्म हुआ था। इसी दिन पत्थर चौथ भी मनाई जाती है। लोग राहगीरों पर फेंककर मारते। जो कोई एतराज करता या बिगड़ने लगता तो कह देते हैं कि बुरा न मानो आज पत्थर चौथ है।

मुक्ताभरण सप्तमी :

मुक्ता भरण सप्तमी भादों के शुक्ल पक्ष में मनाई जाती है। इस दिन जो पुरुष और स्त्रियां व्रत रखती है उन्हें पुत्र की प्राप्ति होती है उनके वंश की वृद्धि होती है।

आर्यवील :

इसे ओली भी कहा जाता है। यह जैनियों का बहुत बड़ा त्यौहार है। इसी दिन से ओली आरम्भ होती है।

रमा एकादशी :

कार्तिक के कृष्ण पक्ष में जो एकादशी पड़ती है उसे रमा एकादशी कहा जाता है। इस दिन लक्ष्मी जी का पूजन करना चाहिए, उनका व्रत रखना चाहिए। इससे लक्ष्मी जी प्रसन्न होती है। वे प्रचुर मात्रा में धन देती है निर्धन को धनवान बना देती है।

महाविष्णु चतुर्दशी :

यह अगहन मास में मनाई जाती है। इस दिन रात्रि के समय भगवान विष्णु की पूजा की जाती है, उनका व्रत रखा जाता है। इससे भगवान प्रसन्न होते हैं। वे अन्न, पुत्र और धन देते हैं।

श्री रामविवाहोत्सव :

इस दिन अयोध्या में भगवान राम की बारात उठती है। बहुत बड़ा मेला लगता है जो बहुत दिन रहता है। इस दिन सरयू में स्नान करने से और व्रत रखने से बहुत बड़े पुण्य की प्राप्ति होती है।

बाल दिवस :

यह पं॰ जवाहर लाल नेहरू का जन्म दिवस है। नेहरू जी बच्चों को बहुत प्यार करते थे। इसलिए बच्चे उन्हें चाचा नेहरू कहते थे। यह राष्ट्रीय पर्व बड़ी धूमधाम और श्रद्धा के साथ मनाया जाता है। इस दिन शिक्षण संस्थायें समारोह मनाती हैं। नेहरू जी के चित्रपर लाल गुलाब के फूलों की माला चढ़ाई जाती है

नन्दादेवी पूजन :

नैनीताल में नन्दा देवी हैं। अगहन महीने के शुक्ल पक्ष में नवमी को जो नन्दा देवी में जाकर पूजा करता है उसे विष्णु लोक की प्राप्ति होती है। उसे मोक्ष मिल जाता है।

रास पूर्णिमा :

कार्तिक की पूर्णिमा को रास पूर्णिमा मनाई जाती है। यह वैष्णवों का बहुत बड़ा त्योहार है। बलिया में एक बदरीनाथ का स्थान है यहाँ भृगु

ऋषि का आश्रम है। इस दिन जो नदी में स्नान करते है वे महान पुण्य की प्राप्ति करते हैं।

पुष्कर मेला :

अजमेर मुसलमानों का बहुत बड़ा तीर्थ स्थान है। यहाँ मुइनउद्दीन–चिश्ति की दरगाह है। यहाँ जनवरी के अन्त में उसका मेला लगता है जो पूरे एक महीने तक चलता है। इस मेले में देश के कोने–कोने से लोग आते हैं, भीड़ लगती है। लोग मजार पर चादर चढ़ाते हैं, मनौती मांगते हैं। ख्वाजा साहब सबकी इच्छा पूरी करते हैं।

इसी तरह अजमेर में सात किलोमीटर की दूरी पर पुष्कर तीर्थ है। यह हिन्दुओं का बहुत बड़ा तीर्थ है। पुष्कर में जो स्नान कर लेता है उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है।

सुंदरी श्री विद्या जयन्ती :

यह जयन्ती अगहन के महीने में जब मृग शीर्ष में पुष्कर नक्षत्र होता है तो आकाश में उसके दर्शन करके जयन्ती मनायी जाती है।

मौनी एकादशी :

यह पौष महीने के कृष्ण पक्ष में मनायी जाती है। यह जैनियों का बहुत बड़ा त्यौहार है और जैनधर्म के मानने वाले पूरे दिन व पूरी रात मौन रहते हैं।

गंगासागर यात्रा :

पौष महीने के शुक्ल पक्ष में जब पुण्य काल होता है तो उसी दिन खिचड़ी खाकर गंगा सागर की यात्रा आरम्भ की जाती है। इस दिन अन्न, काष्ठ व सोने का दान करने से स्वर्ग लोक की प्राप्ति होती है जो लोग एक बार गंगा सागर में स्नान कर लेते हैं उसके सारे कष्ट दूर हो जाते हैं।

वरद चतुर्थी :

माघ महीने के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को वरद चतुर्थी कहा जाता

है। श्रद्धालु भक्तजन इस दिन व्रत रखते हैं। सुनहरे फूलों से गणेश जी का पूजन करते हैं उन्हें अगले जन्म में सवर्णों की प्राप्ति होती है।

तक्षक पूजा :

पौष के शुक्ल पक्ष में तक्षक पूजा की जाती है। इस दिन प्रयाग में संगम पर स्नान करना चाहिए। तक्षक भगवान पर दूध चढ़ाना चाहिए।

गौरी शिव का पूजन :

चैत्र के महीने में शुक्ल पक्ष में गौरी और शिव का पूजन करना चाहिए इससे शंकर भगवान प्रसन्न होते हैं। बिहार में सरहुल नाम का तीर्थ स्थान है जिसका बहुत महत्त्व है।

30

सतुआ संक्रान्ति :

यह त्यौहार बहुत ही पुनीत है। यह बैसाख महीने में मनाया जाता है इसमें लोग सतुआ का दान करते हैं सतुआ खाते हैं और मिट्टी के घड़ों में जल भरकर दान करते हैं। जो लोग काशी के अस्सी घाट पर स्नान करते हैं और दान करते हैं उन्हें मनचाहे फल की प्राप्ति होती है। इसी तरह जो लोग दान करते हैं उनके जीवन में कोई अभाव नहीं रह जाता।

पं॰ जवाहरलाल नेहरू निर्वाण दिवस :

पं॰ जवाहरलाल नेहरू का निधन 27 मई को हुआ था। इसलिए यह 27 मई को ही मनाया जाता है। उस दिन कहा नहीं जाता कि कौन तिथि है। यह संसार में ही नही पूरे भारत में मनायी जाती है क्योंकि वे पूरे विश्व के नेता थे इसलिए कहा जाता है कि नेता एक जवाहर लाल।

देव स्नान पूर्णिमा :

ज्येष्ठ के महीने की पूर्णमासी को दव स्नान पूर्णिमा कहा जाता है। इस पूर्णिमा को व्रत रखना चाहिए। पवित्र नदी में स्नान करना चाहिए। चाँदी, चावल और दही का स्नान करने से मनचाहा फल प्राप्त होता है।

राजस संक्रान्ति :

यह व्रत और त्यौहार उड़ीसा में खूब धूमधाम से मनाया जाता है। उड़िया स्त्रियां और पुरुष व्रत रखते, गोदान करते तथा वस्त्रें का दान देते हैं। इस दिन जो लोग चित्र्कूट में जाकर मन्दाकिनी गंगा में स्नान करते हैं उनके सभी पाप नष्ट हो जाते हैं।

कोकिलारूपिणी शिवा का पूजन :

यह व्रत आषाढ़ की पूर्णिमा को किया जाता है। शिवा का तात्पर्य पार्वती जी शंकर प्रिया हैं। उन्हें कोकिला रूपिणी कहा जाता है। इस दिन जो व्रत रखता, पूजन करता है उन पर पार्वती माता प्रसन्न होती हैं और मनचाहा फल देती हैं।

कर्ण घंटा :

कनखल में कर्णघंटा तीर्थ है। इस दिन कनखल में जो जाकर स्नान करता है उसका यश अमर हो जाता है। दानवीर कर्ण का घंटा यहीं टंगा है।

दुग्ध व्रत :

इसे पयो व्रत भी कहते हैं। इस दिन भगवान शंकर के मन्दिर में शिवलिंग को दूध से नहलाया जाता है जो लोग व्रत रखते हैं वे लोग केवल दुग्ध का ही व्रत रखते हैं। यहां प्रातः से लेकर रात तक दूध चढ़ता रहता है। भजन और कीर्तन होता है।

इन्द्र पूर्णिमा :

अनन्त चतुर्दशी के बाद भादो की पूर्णिमा आती है। इसे इन्द्र पूर्णिमा कहते हैं। इस दिन देवताओं के राजा इन्द्र की पूजा होती है। योगिराज श्री कृष्ण जी ने इस पूजा को बन्द करवा दिया था। इनका कथन था कि इन्द्र पूजा न होकर गोवर्धन पूजा होगी।

आयुध पूजा :

क्वार महीने के शुक्ल पक्ष की दशमी को आयुध पूजा होती है।

इसमें हाथी और घोड़ों का पूजन होता है और रथ का पूजन होता है। सभी प्रकार के अस्त्र और शस्त्र पूजे जाते हैं। व्रत रखा जाता है। इस पूजन व व्रत से विजय की प्राप्ति होती है।

अगहन महीने के शुक्ल पक्ष में जो नवमी होती है उसे आंवला नवमी कहते हैं। उस दिन आंवला के नीचे जाकर जो पूजन करता है वह अमर हो जाता है। इसी दिन से मथुरा की परिक्रमा होती है और इसी दिन से त्रियाना आरम्भ होता है। विष्णु भगवान की प्रतिमा का पूजन होता है जो लोग सोने की प्रतिमा दान करते हैं उन्हें धन का अभाव कभी नहीं रहता।

नर्वदेश्वर लिंग पूजा :

कार्तिक महीने के शुक्ल पक्ष में चतुर्दशी के दिन जो भगवान नर्वदेश्वर लिंग की पूजा करते हैं, नर्वदा नदी में स्नान करते हैं, उनका कायाकल्प हो जाता है। उन्हें नवजीवन प्राप्त होता है। भगवान शंकर उस पर बहुत प्रसन्न होते हैं, उसकी आजीवन रक्षा करते हैं।

भद्रावती स्नान :

भादो महीने के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को जो भद्रा नदी में जाकर स्नान करते हैं और व्रत रखते हैं। उन्हें बहुत बड़े पुण्य की प्राप्ति होती है। इसी दिन लोकपाल पूजा की जाती है।

कोजगरी पूजा :

यह पूजा शरद पूर्णिमा को की जाती है। इस दिन पूरे के पूरे बंगाल प्रदेश में लक्ष्मी का पूजन होता है। महर्षि बाल्मीकि जयन्ती मनाई जाती है। इसे कुमार पूर्णिमा भी कहते हैं। इसका उड़ीसा में बहुत अधिक महत्त्व है।

हजरत अली जन्म दिवस :

यह उतर प्रदेश के बहराइज जिले में खूब धूमधाम से मनाया जाता है। उर्स का मेला लगता है जिसमें देश के कोने–कोने से लोग आते हैं।

हरिहर क्षेत्र मेला :

यह मेला सोनपुर में लगता है और भारत में बहुत बड़ा होता है। यहाँ पशुओं का मेला लगता है और एक महीने तक रहता है। यहाँ सोनपुर और गंगा में स्नान करते हैं।

श्री विष्णु दिगम्बर पलुस्कर जयन्ती :

यह जयन्ती 19 अगस्त को मनाई जाती है। यह जैनियों का बहुत बड़ा त्योहार और महान पर्व है। इस जयन्ती में भारत में स्थान–स्थान पर बहुत बड़ा मेला लगता है। भगवान दिगम्बर का पूजन करते हैं। स्त्रियां व पुरुष बड़ी श्रद्धा से पूजा करते हैं। इसे नागा पूजा भी कहा जाता है क्योंकि इसमें भगवान दिगम्बर लिंग की पूजा होती है।

31

दीनबन्धु एन्ड्रूज जयन्ती :

यह जयन्ती 12 फरवरी को मनाई जाती है। दीनबन्धु एन्ड्रूज हमारे देश के एक बहुत बड़े नेता और विद्वान थे। इसी दिन उनका जन्म हुआ था इसलिए इस दिन जयन्ती मनाई जाती है। इस दिन सारे कार्यालय बन्द रहते हैं।

जैसलमेर मेला :

यह मेला पूरे देश भर में प्रसिद्ध है। जैसलमेर राजस्थान का वह क्षेत्र है जहाँ ऊँट पाले जाते हैं और उनका व्यापार होता है। इसे रेगिस्तानी मेला भी कहते हैं। यह तीन दिन तक लगातार रहता है इस मेले में पूरे देश में नहीं लेकिन राजस्थान में छुट्टी अवश्य रहती है।

बिल्व त्रिरात्र व्रत :

यह शंकर जी का व्रत है। इस दिन बेल के पेड़ की पूजा होती है। यह त्रिरात्रि व्रत तीन दिन तक किया जाता है। शंकर भगवान पर फल चढ़ाए जाते हैं, उनका व्रत रखा जाता है। जो त्रिरात्रि व्रत रखता है, जो शंकर जी की पूजा करता है वह मोक्ष को है और दूसरे भावी जन्म में यश और सम्मान को प्राप्त करता है।

धर्मचक्र प्रवर्तन दिवस :

यह बौद्धों का त्यौहार है। इस दिन काशी के पास सारनाथ में मेला लगता है। बौद्ध भिक्षुक बहुत बड़ी मात्रा में एकत्रित होते हैं। धर्मचक्र के लिए महात्मा गौतम बुद्ध ने कहा था–संघम् शरणम् गच्छामि। बौद्धं शरणम् गच्छामि। धर्मम् शरणम् गच्छामि।

जिस तरह काशी हमारा एक बहुत बड़ा तीर्थ है वैसे ही सारनाथ बौद्धों का एक महान तीर्थ है।

झूलन पूर्णिमा :

सावन के महीने में पूर्णिमा को ऋगवेदी का यह बहुत बड़ा त्योहार है। ऋग्वेदी इसमें व्रत रखते हैं। ऋगवेद की पूजा करते हैं। शाम को हयग्रीवोत्पति मदीने में स्थित मन्दिर में पूजा होती है, दर्शन किए जाते हैं। यह बहुत ही पुरातन त्योहार है। इसे ज्ञानी विद्वान और ब्राहम्ण आदि अधिकांश करते हैं।

ऋषि अगस्त्य पूजा :

भादो महीने के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी को ऋषि अगस्त्य की पूजा होती है। इस दिन श्रद्धालु भक्तजन अगस्त्य ऋषि की पूजा करते हैं। यह एक महान ऋषि थे। एक बार क्रोधित होकर उन्होंने समुंद्र को सोख लिया। इन्हें पूर्व दिशा की ओर अर्ध्य दान किया जाता है। श्रद्धालु भक्तजन इस दिन अतीव श्रद्धा के साथ इस महान ऋषि की पूजा करते हैं।

हेक्रां हिताम्बा :

यह मणिपुर के बहुत ही प्रसिद्ध त्योहार है। वहाँ लोग व्रत रखते हैं, मेला लगता है। इस दिन सभी सरकारी और गैर सरकारी कार्यालय बन्द रहते हैं। यह त्योहार बैसाख के महीने की कृष्ण पक्ष की अष्टमी को मनाया जाता है। इसी दिन केरल प्रदेश में ओम दिवस मनाया जाता है। यह केरल प्रदेश के लोगों का बहुत बड़ा त्यौहार है। इस दिन केले चढ़ाते हैं केले के दान करते हैं। जो फलाहार करते हैं वे केले के दान करते

हैं।

शमी पूजा :

इसमें शमी की पूजा होती है। शमी के पेड़ का पूजन किया जाता है। यह पूजा द्वापर युग में आरम्भ हुई थी। जब अर्जुन अपने भाइयों व द्रोपदी के साथ विराट नगर अज्ञातवास गए थे तो अपने सभी धनुष–बाण और हथियार शमी के पेड़ में रख गए थे। यह पेड़ प्रकृति की ऐसी देन है कि इसके तने गुफा जैसे होते हैं उसमें हथियार ही नहीं मनुष्य भी छिपकर बैठ सकते हैं।

द्विदल पूजा और व्रत :

यह त्योहार कार्तिक महीने की शुक्ल पक्ष द्वादशी को मनाया जाता है। इसमें उड़द और मूंग की धुली हुई दाल तथा चने की दाल का दान किया जाता है। इसी दिन कालिदास जयन्ती भी मनाई जाती है। संस्कृत के महान कवि कालिदास का जन्म इसी दिन मनाया जाता है।

32

सतयुग पूजा :

हमारे चार युगों में सतयुग सबसे अच्छा युग माना जाता है। इसकी उत्पति कार्तिक महीने की शुक्ल पक्ष की नवमी को हुई थी। इसलिए श्रद्धालु लोग इस दिन व्रत रखते हैं। सतयुग की पूजा करते हैं। उस दिन बुधवार था। सतयुग की पूजा करने वाले शत ही बनते हैं। इस युग में भगवान के चार अवतार होते हैं जिसमें पहला मतस्य था, दूसरा क्रूर्म था जिसे कच्छप भी कहते हैं। तीसरा वाराह था और चौथा नृसिंह का था।

त्रेता युग पूजा :

हमारा दूसरा युग त्रेता युग था। इसकी उत्पति बैसाख महीने की तृतीया को हुई जिसे अक्षय तृतीया कहते हैं। इस दिन श्रद्धालु जन व्रत रखते हैं देवता की पूजा करते हैं, पवित्र नदियों में स्नान करते हैं, दान करते हैं, भजन व कीर्तन करते हैं।

इसमें भगवान के तीन अवतार हुए। सबसे पहला अवतार वामन भगवान का था और दूसरा ऋषि परसुराम का तथा तीसरा अवतार था मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी का। उस दिन सोमवार था इसकी आयु 12,16000 की थी।

सतयुग में लोग सोने के बर्तन में भोजन करते थे। मणि और आभूषण पहनते थे। झूठ कभी नहीं बोलते थे। सभी सत्य का पालन करते

थे। त्रेता में लोग चांदी के बर्तन में भोजन करते थे, सदाचारी होते थे।

द्वापर युग की पूजा :

हमारा तीसरा युग द्वापर युग कहलाता है। इसकी उत्पति माघ महीने की पूर्णिमा को शुक्रवार के दिन हुई थी। इस युग में भगवान के दो अवतार हुए। पहला अवतार योगिराज श्री कृष्ण जी का था। त्रेता के राम अपनी बारह कलाओं के साथ पैदा हुए और कृष्ण जी अपनी 16 कलाओं के साथ उत्पन्न हुए, इसी युग में महान और विश्वव्यापी युद्ध हुआ। ऐसा युद्ध आज तक दूसरा नहीं हुआ।

द्वापर युग की आयु 8,64000 वर्ष की थी। इस युग में लोग सोने और चांदी के बर्तन में भोजन नहीं करते। राजा और महाराजा लोगों की बात और थी। लेकिन साधारण लोग फूल कांसा और गिलट के बर्तन में भोजन करते थे।

कलियुग पूजा :

हमारा चौथा युग कलियुग है। यह अच्छा युग नहीं कहा जाता। इसका जन्म भादो के महीने के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी को इतवार को हुआ था। तब आधी और अंधेरी रात थी। इस युग की अवधि 4,32,000 वर्ष की है। इसकी भी पूजा की जाती है। कलियुग देवता प्रसन्न होते हैं वे विद्या, बुद्धि और धन देते हैं। इसमें भगवान के दो अवतार हो चुके हैं। एक महात्मा गौतम बुद्ध का और दूसरा निष्कलंक का। निष्कलंक और बुद्ध एक ही पर्याय हैं। बुद्ध का अवतार हो चुका है। दूसरा अवतार काल्कि अवतार हुआ जब इस युग के 821 वर्ष बाकी रह जायेंगे तभी यह अवतार होगा। यह अवतार एक ब्राहम्ण के घर में होगा जिसका नाम विष्णु यश होगा। यह संभल ग्राम में होगा। जब यह अवतार होगा तो दुष्टों का नाश होगा सृष्टि में धर्म की स्थापना होगी।

कलियुग में लोग लोहे के पात्रों में भोजन करेंगे। छल–कपट झूठ और प्रंपच से अपना जीवन व्यतीत करेंगे। इसकी पूजा इसलिए की जाती है क्योकि यह दुख सर्वनाशकारी होती है। इससे ज्ञान और बुद्धि में वृद्धि

होती है।

भासी माघम :

दक्षिण भारत का यह बहुत बड़ा त्योहार है। यह फालगुन के महीने में चौदस को मनाया जाता है। इस दिन गंगा में स्नान किया जाता है, दान दिया जाता है। शंकर और पार्वती की पूजा होती है।

श्री स्वामी नारायण जयन्ती :

चैत महीने के शुक्ल पक्ष की नवमी को व्रत और त्योहार होता है। इसी दिन श्री स्वामी नारायण जी की जयन्ती मनाई जाती है और अयोध्या की परिक्रमा भी की जाती है।

ग्यारहवीं शरीफ :

यह मुसलमानों का महान व्रत है। इसी दिन से उनकी ग्यारहवीं शरीफ की शुरुआत हुई थी। इसी में फातिहा पढ़ा जाता है।

अर्द्धवार्षिक लेखा बन्दी :

यह तीस सितम्बर का दिन होता है। इस दिन बैंकों की अर्द्धवार्षिक लेखा बन्दी होती है और सभी सरकारी कार्यालय बन्द रहते हैं।

उपांग ललिता :

यह दक्षिण भारत का एक पुनीत और पवित्र त्यौहार है। इस दिन को ललिता पंचमी भी कहते हैं। इस दिन कावेरी नदी में स्नान करने से सभी तरह के रोग दूर हो जाते हैं।

वीर निर्वाण सम्वत :

यह सम्वत इसी दिन आरम्भ हुआ था। 12 नवम्बर को इसकी उत्पति हुई थी। इसी दिन हमारे पं॰ महामना मदनमोहन मालवीय जी का निर्वाण हुआ था। उनकी पवित्र पुण्यतिथि बड़ी श्रद्धा के साथ मनाई जाती है। इस दिन महान आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है। श्रद्धा के फूल चढ़ाए जाते हैं। मालवीय प्रतिमा के चित्र बनाए जाते हैं।

33

पिठौरा :

भादो के महीने में अमावस के दिन पिठौरा का त्योहार मनाया जाता है। श्रद्धालु भक्तजन व्रत रखते हैं। पुनीत नदियों व पुनीत सरोवरों में स्नान करते हैं। इसी दिन कुशोत्पादनी अमावस्या होती है। यह अमावस बहुत ही पवित्र कही जाती है। इस दिन गंगा में स्नान करने से और दान देने से मोक्ष की प्राप्ति होती है।

चक्र तीर्थ पूजा :

नैमिषारण्य तीरथ में चक्र तीर्थ है। देश का यह सबसे बड़ा स्थान है। यहाँ 88,000 ऋषियों ने तपस्या की थी। वैसे तो तीर्थ स्थान में किसी भी दिन स्नान किया जाये तो बहुत बड़ा पुण्य मिलता है लेकिन भादों की अमावस को स्नान करने से मनुष्य सीधा स्वर्ग जाता है और मोक्ष को प्राप्त होता है। इस तीर्थ का वर्णन वेदों और पुराणों में है। कहते हैं विष्णु भगवान ने अपना सुदर्शन चक्र घुमाकर फेंका था और कहा था कि जहाँ हमारा चक्र गिरेगा वहीं पृथ्वी पर मध्यस्थल होगा और चक्र तीर्थ कहा जायेगा।

भगवान विष्णु ने यह भी कहा था कि भाग्यशाली स्त्री और पुरुष ही इस तीर्थ में आये। पापियों को यह तीर्थ नहीं बुलायेगा।

भादो की अमावस को जो लोग चक्र तीर्थ की पूजा करते हैं और उसकी परिक्रमा करते हैं, चक्र तीर्थ पर फूल चढ़ाते हैं, वे सीधे विष्णु लोक को जाते हैं।

सामवेदी व्रत :

यह सामवेदियों का त्योहार है। सामवेदी इस दिन व्रत रखते हैं सामवेद का पूजन करते हैं। सामवेद के अनुयायी इस दिन को महान दिन कहते हैं।

ऋषि पंचमी :

भादो के महीने में शुक्ल पक्ष में पंचमी को ऋषि पंचमी का व्रत होता है। यह भी महान पर्व है और बहुत बड़ा त्यौहार है। जो पुरुष–स्त्रियां व्रत रखते हैं, कथा सुनते हैं तो सुख और सौभाग्य को प्राप्त करते हैं। देवता भी व्रत रखते हैं और इसकी कथा सुनते हैं।

विश्वकर्मा जयन्ती :

यह व्रत भादो के महीने में मनाया जाता है। इसमें भगवान विश्वकर्मा की पूजा होती है इसलिए विश्वकर्मा जयन्ती मनाई जाती है।

सरस्वती स्थापना :

क्वांर के महीने में प्रत्येक गृहस्थ अपने घर सरस्वती देवी की स्थापना करता है। जो श्रद्धालु विधिपूर्वक पूजन करते हैं उनकी बुद्धि निर्मल हो जाती है और उनके कंठ में सरस्वती जी का निवास होता है।

निम्बकाचार्य जयन्ती :

यह निम्बकाचार्य जयन्ती कार्तिक पूर्णिमा को मनाई जाती है। इसी दिन नानक जयन्ती होती है और इसी दिन स्नान दान की पूर्णिमा होती हैं। इसी दिन तुलसी की पूजा होती है।

महाराणा प्रताप जयन्ती :

यह राणा प्रताप की जयन्ती 8 जून को मनाई जाती है। यह राष्ट्रीय पर्व है। महान देशभक्त राणाप्रताप के चित्र व मूर्ति पर फूल माला चढ़ाई जाती है और उनके चेतक की भी पूजा होती है। उनके प्रताप गौरव के बखान होते हैं।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयन्ती :

यह जयन्ती 14 अप्रैल को मनाई जाती है। इसी दिन इस महान पुरुष का जन्म हुआ था। इसी महान आत्मा ने हमारे स्वतन्त्र भारत का संविधान भारत का संविधान बनाया। इस दिन सरकारी कार्यालय बन्द रहते हैं। डा. भीमराव अम्बेडकर को फूल माला चढ़ाई जाती हैं।

भारतीय वर्ष समाप्ति :

सात मार्च को हमारा भारतीय वर्ष समाप्त होता है और नया संवत आरम्भ होता है। इसने दिन सरकारी और गैर सरकारी कार्यालय बन्द रहते हैं। महान वर्ष और उल्लास का दिन होता।

विरुढ़ा पंचमी :

भादो के महीने में कृष्ण पक्ष में बहुला चतुर्थी के बाद इसको बहुला चौथ कहते हैं। इसमें जो स्त्रियां और पुरुष व्रत रखते, भगवान विष्णु का पूजन करते हैं वे मोक्ष के अधिकारी बन जाते हैं। इस पचंमी का बहुत अधिक महत्त्व है।

हलधर छठ :

भादो के महीने में कृष्ण पक्ष में हलधर छठ मनाई जाती है। इस दिन बलराज जी का जन्म हुआ था। ये योगिराज श्री कृष्ण जी के बड़े भाई थे। इनके पिता जी वासुदेव जी थे और माता रोहिणी थी। रोहिणी वासुदेव की प्रथम पत्नी थीं।

बलराम जी के दो हथियार थे—हल और मूसल। इसीलिए इनको हलधर कहा जाता है। श्री कृष्ण जी का जन्म भादो की जन्माष्टमी को हुआ और बलराम जी भादो की कृष्ण पक्ष की छठ को। हलधर छठ का महत्त्व सबसे अधिक ब्रज में है। पूरे के पूरे ब्रज में यह व्रत हर्ष और उल्लास से मनाया जाता है।

श्रावणी उपाकर्म :

यह त्योहार यजुर्वेदियों का है। यजुर्वेद के अनुयायी इस दिन व्रत

रखते हैं। यजुर्वेद की पूजा करते हैं। इसी दिन रक्षा बंधन होता है और श्रावणी का त्यौहार मनाया जाता है।

चैती चाँद :

चैत के महीने में शुक्ल पक्ष की दुईज को चैती चाँद कहा जाता है। इस दिन प्रत्येक देव स्थान में दुईज के चाँद की पूजा होती है। चन्द्रमा का पूजन रात में चाँदी की थाली में किया जाता है। सफेद फूल चढ़ाए जाते हैं। कहा जाता है कि इस चन्द्रोदक को जो पी लेगा वह अमर हो जाता।

रात्रै बैकुंठ :

नवम्बर के महीने में 12 ता॰ को यह त्योहार मनाया जाता है। इस दिन व्रत रखा जाता है। भगवान विष्णु की पूजा भी होती है। जो लोग इस रात में श्रद्धापूर्वक जागरण करते हैं। उन्हें बैकुण्ठ की प्राप्ति होती है।

जुवां अलविदा :

यह बहुत की बड़ा त्योहार है। रमजान के महीने में जब ईद से पहले रोजे रखे जाते हैं तो महीने के आखिरी सुकवा जिसको जुवां अलविदा कहते हैं। इस दिन जुवें की पाँचों नवाजें विधिपूर्वक पढ़ी जाती हैं। यह मुसलमानों के लिए बहुत पुनीत दिन है।

जुवां अलविदा का महत्त्व यह है कि यह आखिरी जुवां है। इसे अलविदा कहा जाता है। यह एक साल बाद फिर पुनः लौटकर आएगा।

रामजान के महीने में चार जुवां होते हैं। इस दिन हर मुसलमान मस्ज़िद में जाकर नमाज पढ़ता है। मगर जुवां अलविदा के लिए। मुसलमानों का कहना है कि जो मुसलमान जुवां अलविदा की पाँचों नवाजें पढ़ता है। उसे जन्नत मिलती है। उसका फिर जन्म नहीं होता। वह अल्लाह ताला रहीम के पास पहुँच जाता।

विश्व पर्यावरण दिवस :

यह 5 जून को मनाया जाता है। इस दिन पूरे संसार में अवकाश रहता है।

विभा गुप्ता

जन्म	-	दिल्ली 19 जून 1975
शिक्षा	-	स्नातक
		दिल्ली विश्व विद्यालय
कृतियाँ	-	व्रत पर्व और त्यौहार
		अम्बर-पनघट (उपन्यास)
सम्पर्क	:	बी-41,
		ईस्ट कृष्णा नगर,
		दिल्ली - 1100051